सूर्योदय : 6:47
सूर्यास्त : 5:15
अधिकतम तापमान : 23.0
न्यूनतम : 6.0

RNI NO : UPHIN/2010/31173

डाक पंजीकरण संख्या:
SSP/LW/NP-422/2014-2016

वर्ष-18 अंक-180 पेज-16
मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, शनिवार, 21 दिसम्बर 2024
18 जमादिउस्सानी 1446 हिजरी

हिन्दी दैनिक
अवधनामा
www.avadhnama.com

सीएम योगी का ऐलान, जेवर एयरपोर्ट को जमीन देने वालों का बढ़ेगा मुआवजा

अप्रैल से शुरू होगा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट

- एशिया का सबसे बड़ा हवाई अड्डा होगा
- योगी ने पूरी कर दी किसानों की फरियाद

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर के विकास के लिए भूमि दे रहे किसानों की मनचाही मुराद पूरी कर दी है।

शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास पर किसानों के साथ खुले संवाद के बीच मुख्यमंत्री ने जेवर एयरपोर्ट के लिए तीसरे चरण के भूमि अधिग्रहण के एवज में देय प्रतिकर को 3,100 रुपये वर्गमीटर से बढ़ाकर 4,300 रुपये वर्गमीटर तक करने की घोषणा की। इसके अलावा नियमानुसार ब्याज भी देय होगा। यही नहीं, मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि अधिग्रहण से प्रभावित हर एक किसान परिवार के व्यवस्थापन, रोजगार और सेवायोजन के भी समुचित प्रबंध किए जाएंगे। मुख्यमंत्री की घोषणा को मनचाही मुराद बताते हुए सभी किसानों ने जय श्रीराम के नारे से उनका अभिवादन किया और कहा कि अब लखनऊ से सीधा अयोध्याधाम जाकर श्रीरामलला के दर्शन-पूजन करेंगे। इस विशेष अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा अगले वर्ष अप्रैल में प्रधानमंत्री मोदी के कर-कमलों से एशिया के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन किया जाएगा। मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर के अंतिम फेज के भूमि प्रदाता किसानों से संवाद कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी ने सभी किसानों से संवाद किया, उनकी आशंका, जिज्ञासाओं और मांग के बारे में बातचीत की। मुख्यमंत्री ने सीईओ यीडा को मंच पर बुलाया और अब तक दो चरणों में हुए भूमि अधिग्रहण और प्रभावित किसान परिवारों के व्यवस्थापन के बारे में पूछा। सीईओ ने किसानों के सामने मुख्यमंत्री को एक-एक कर सारी गतिविधियों की जानकारी दी और बताया कि वर्तमान में केवल उन्हीं को प्रतिकर दिया जाना शेष है, जिनका उत्तराधिकार, वरासत आदि से संबंधित प्रकरण लंबित हैं। मुख्यमंत्री ने सीईओ को हर एक किसान से मिलने और उनकी समस्याओं के निस्तारण को शीर्ष प्राथमिकता देने के निर्देश दिए।

40 एकड़ क्षेत्रफल में एमआरओ का भी होगा विकास

मुख्यमंत्री ने कहा कि नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर की वेलीडेशन फ्लाइट की सफलतापूर्वक लैंडिंग 9 दिसंबर को की जा चुकी है और अप्रैल 2025 से यहां से उड़ान सेवा भी प्रारंभ हो जाएगी। अब यहां 40 एकड़ क्षेत्रफल में एमआरओ का भी विकास होगा। यहां दुनिया भर के विमानों का मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहॉलिंग भी किया जा सकेगा। सीएम योगी ने कहा कि नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट की स्थापना से औद्योगिक अवस्थापना का संरचनात्मक विकास होगा, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, विनिर्माण एवं निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा तथा हवाई यातायात सुगम होगा। साथ ही पर्यटन में भी उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इस एयरपोर्ट के निकट कई औद्योगिक सेक्टरों का विकास यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में हुआ है।

मोदी कैबिनेट ने 2025 सत्र के लिए नारियल की एमएसपी बढ़ाई

- मोदी सरकार को किसानों को बड़ा तोहफा
- कोपरा का न्यूनतम समर्थन 12,100 रुपये प्रति क्विंटल किया गया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने बड़ा फैसला लेते हुए कोपरा का न्यूनतम समर्थन मूल्य 422 रुपये बढ़ाकर 12,100 रुपये प्रति क्विंटल किया है। इसकी जानकारी देते हुए सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया, तेल निकाले जाने योग्य नारियल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 422 रुपये की बढ़ोतरी की गई और इसका मूल्य अब 11582 रुपये प्रति क्विंटल होगा, जबकि गोल सूखे नारियल गिरी की कीमत 12100 रुपये क्विंटल होगी। इसमें 100 रुपये का इजाफा किया गया है। केंद्रीय नोडल एजेंसियां करेंगी कोपरा की खरीद

नारियल की खरीद करने के लिए नैफेड और एनसीसीएफ केंद्रीय नोडल एजेंसियां होंगी। नारियल की एमएसपी में कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों के आधार पर बढ़ोतरी की गई है। केरल और तमिलनाडु मिलियन कोपरा के प्रमुख उत्पादक हैं, जबकि बॉल कोपरा का उत्पादन मुख्य रूप से कर्नाटक में होता है। बता दें कि, उच्च एमएसपी न केवल नारियल उत्पादकों के लिए बेहतर लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करेगा, बल्कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए खोपरा उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित भी करेगा। केंद्र सरकार की तरफ से 'मिलिंग कोपरा' का न्यूनतम समर्थन मूल्य 420 रुपये से बढ़ाकर 11,582 रुपये प्रति क्विंटल किया गया। वहीं 'बॉल कोपरा' का न्यूनतम समर्थन मूल्य 100 रुपये बढ़ाकर 12,100 रुपये प्रति क्विंटल किया गया। इसके लिए केंद्र सरकार ने बजट में कुल 855 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

न्यूज डायरी

हाइकोर्ट से राम रहीम को बड़ा झटका

चंडीगढ़। हरियाणा के रोहतक की सुनारिया जेल में बंद डेरा सच्चा सौदा प्रमुख राम रहीम को पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। साधुओं को ईश्वर से मिलवाने के नाम पर नपुंसक बनाने के मामले में शुक्रवार को उच्च न्यायालय में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट ने साधुओं को नपुंसक बनाने से जुड़े मामले की केस डायरी डेरा मुखी को सौंपने के सीबीआई स्पेशल कोर्ट के फैसले को पंजाब-हरियाणा हाई कोर्ट ने रद्द कर दिया है। हाई कोर्ट ने मामला दोबारा सीबीआई स्पेशल कोर्ट को भेजते हुए नए सिरे से इस पर निर्णय लेने का आदेश दिया है। सीबीआई ने 2019 में हाई कोर्ट में याचिका दाखिल करते हुए पंचकूला स्थित सीबीआई की विशेष अदालत के फैसले को चुनौती दी थी।

संसद में खूब हुआ संग्राम

नई दिल्ली। संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान दिवस मनाया गया और संविधान पर चर्चा भी की गई, लेकिन इस बार संसदीय गरिमा को तार-तार करने में सांसदों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। दोनों सदनों में अदाणी से लेकर जार्ज सोरोस और आंबेडकर पर केंद्रीय मंत्री अमित शाह की टिप्पणी को लेकर हंगामा ज्यादा हुआ। 25 नवंबर को शुरू हुआ सत्र शुक्रवार को अनिश्चितकाल के स्थगित हो गया। इस दौरान दोनों सदनों में तकरीबन आधे समय ही कामकाज हो सका।

39 सदस्यीय संयुक्त संसदीय समिति गठित

नई दिल्ली। देश में संसदीय और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले विधेयक पर विचार के लिए संसद ने शुक्रवार को 39 सदस्यीय संयुक्त संसदीय समिति का गठन कर दिया और इसकी अध्यक्षता की जिम्मेदारी पूर्व केंद्रीय मंत्री व भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद पी पी चौधरी को सौंप दी। राज्यसभा में इस समिति के 12 सदस्यों को नामित करने के प्रस्ताव को ध्वनि मत से मंजूरी दिए जाने के साथ ही 39 सदस्यीय समिति के गठन का रास्ता साफ हो गया। इससे पहले, कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने निचले सदन में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले 'संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024' और उससे जुड़े 'संघ राज्य क्षेत्र विधि (संशोधन) विधेयक, 2024' को संसद की संयुक्त समिति के विचार के लिए भेजे जाने का प्रस्ताव रखा था, जिसे ध्वनिमत से मंजूरी दे दी गई। इन विधेयकों पर विचार के लिए बनी संयुक्त समिति में लोकसभा से 27 सदस्यों को नामित किया गया। बाद में, लोकसभा सचिवालय की ओर जारी एक आदेश में समिति के गठन के साथ ही इसके सभी सदस्यों के नामों की घोषणा की गई।

जयपुर में एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट, 11 मरे

ट्रक की टक्कर से लगी आग, 200 फीट ऊंची लपटें उठीं, बचने का नहीं मिला मौका

- प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति समेत कई नेताओं ने जताया शोक

जयपुर। राजस्थान के जयपुर में शुक्रवार तड़के एक ट्रक ने एलपीजी टैंकर को टक्कर मार दी, जिससे लगी आग ने 35 से अधिक वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। अधिकारियों ने बताया कि इस दुर्घटना में 11 लोगों की मौत हो गई और लगभग 35 अन्य लोग झुलस गए।

सवाई मानसिंह (एसएमएस) मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी ने बताया कि हादसे में 11 लोगों की मौत हो गई है, जिनमें से दस की मौत एसएमएस अस्पताल में और एक की मौत अन्य अस्पताल में हुई। उन्होंने बताया कि हादसे में झुलसे व घायल लगभग 35 लोग अभी भर्ती हैं, जिनमें से कुछ वेंटिलेटर पर हैं। राष्टपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हादसे पर शोक जताया। मोदी ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से फोन पर बात कर हादसे की जानकारी ली और हर संभव मदद का आश्वासन दिया। प्रधानमंत्री ने हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से दो-दो लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने हादसे के बारे में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से बात कर जानकारी ली। मुख्यमंत्री शर्मा, उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा तथा गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम घटनास्थल पहुंचे। मुख्यमंत्री ने कहा कि घटना की विस्तृत जांच करवाई जाएगी और घायलों के इलाज की व्यवस्था की गई है। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की। अधिकारियों ने बताया कि हादसा तड़के करीब पौने छह बजे हुआ। शुरुआती जानकारी के अनुसार, जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भांकरोटा के पास एलपीजी टैंकर को एक ट्रक ने टक्कर मार दी, जिसके बाद आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और वहां से गुजर रही एक बस सहित अनेक ट्रक, कार आगी की चपेट में आ गए। घटना से जुड़े एक वीडियो में लोग जान बचाने के लिए भागते नजर आए और शुरुआत में स्थानीय लोगों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आग की लपटें एक किलोमीटर दूर से नजर आ रही थीं और राष्ट्रीय राजमार्ग का एक बड़ा हिस्सा 'आग के गोले' में तब्दील हो गया था।

हरियाणा के पूर्व सीएम ओम प्रकाश चौटाला का निधन

- तीन दिन का राजकीय शोक, अंतिम संस्कार आज
- प्रधानमंत्री मोदी ने जताया शोक

चंडीगढ़। हरियाणा के पूर्व सीएम और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) चीफ ओमप्रकाश चौटाला (89) के निधन से राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर है। राज्य सरकार ने इस दुखद घटना के मद्देनजर तीन दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। हरियाणा सरकार की तरफ से जारी आधिकारिक आदेश के अनुसार, प्रदेश में 20 से 22 दिसंबर तक राजकीय शोक रहेगा।

21 दिसंबर को प्रदेश में एक दिन की छुट्टी की घोषणा की गई है। इसके अलावा 20-22 दिसंबर तक प्रदेश में कोई सरकारी मनोरंजन कार्यक्रम नहीं होगा। 21 दिसंबर को राजकीय सम्मान के साथ पूर्व सीएम का अंतिम संस्कार होगा। ओमप्रकाश चौटाला ने शुक्रवार को गुरुग्राम में अपने आवास पर अंतिम सांस ली। वह बीते कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। चौटाला के निधन पर पीएम नरेंद्र मोदी, प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा समेत कई नेताओं ने दुख जताया। पीएम मोदी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है।

संभल में एएसआई की टीम ने किया सर्वे

19 कूप और पांच तीर्थो का किया सर्वेक्षण, कार्बन डेटिंग के लिए शिव मंदिर के लिए नमूने

संभल। संभल शहर और उसके आसपास बने 19 कूप और पांच तीर्थों का भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम शुक्रवार को सर्वे किया। चार सदस्यीय टीम शुक्रवार की सुबह करीब छह बजे लखनऊ से संभल पहुंची। टीम ने खग्गू सराय में स्थित प्राचीन शिव मंदिर और इसके परिसर में खोले गए कुएं की कार्बन डेटिंग के लिए नमूने लिए हैं। इसके अलावा शहर के अलग अलग स्थानों पर स्थित 19 कूप का भी सर्वे किया। डीएम डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने बताया कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को पत्र लिखा था। चार सदस्यीय टीम संभल पहुंची। सुबह छह बजे से दोपहर साढ़े तीन बजे तक सर्वे किया है। टीम अपनी रिपोर्ट देगी उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मालूम हो 14 दिसंबर को संभल एसडीएम वंदना मिश्रा ने पुरातत्व निदेशालय के निदेशक को पत्र लिखा था। जिसमें आग्रह किया गया था कि संभल में प्राचीन तीर्थों और कूपों के काल निर्धारण के लिए सर्वे किया जाए। इसके लिए टीम गठित करने का आग्रह किया था।

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच करेगी संसद धक्का मुक्की कांड की जांच, 6 धाराओं में एफआईआर दर्ज

- क्राइम ब्रांच सीन कर सकती है रीक्रिएट

नई दिल्ली। संसद भवन परिसर में धक्कामुक्की मामले में राहुल गांधी के खिलाफ दिल्ली पुलिस ने गुरुवार को एफआईआर दर्ज कर ली थी जिसे शुक्रवार को क्राइम ब्रांच को सौंप दिया गया है। एसीपी रमेश लांबा की देखरेख में इंस्पेक्टर पंकज मलिक की टीम मामले की जांच करेगी। यह मामला भाजपा की सांसद बांसुरी स्वराज, हेमंग जोशी और अनुराग ठाकुर की शिकायत पर संसद मार्ग थाने में दर्ज किया गया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताआ कि हमने मामले को स्थानीय पुलिस से अपराध शाखा को स्थानांतरित कर दिया है। उन्होंने कहा कि पुलिस सारंगी और मुकेश राजपूत के बयान दर्ज कर सकती है और गांधी को भी पूछताछ के लिए बुला सकती है। बता दें कि बाबासाहेब आंबेडकर से जुड़े मुद्दे पर विपक्ष और सत्तापक्ष के सांसदों ने गुरुवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया।

अतुल सुभाष की मां ने मांगी पोते की कस्टडी

सुप्रीम कोर्ट ने तीन राज्य सरकारों को दिया नोटिस

नई दिल्ली। बंगलूरू में आईटी पेशेवर अतुल सुभाष के आत्महत्या का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। अतुल सुभाष की मां ने अपने चार साल के पोते की कस्टडी देने की सुप्रीम कोर्ट से गुहार लगाई है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और कर्नाटक सरकार को नोटिस जारी किया है। इंजीनियर अतुल सुभाष ने बंगलूरू में 9 दिसंबर को खुदकुशी कर ली थी। उन्होंने 23 पेज का सुसाइड नोट भी लिखा था। अतुल ने आत्महत्या से पहले एक घंटे से ज्यादा समय वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा किया था। उन्होंने पत्नी निकिता सिंघानिया, सास, साले और उनके मामले की सुनवाई कर रही जज पर भी गंभीर आरोप लगाए थे। अब अतुल सुभाष की मां अंजू मोदी ने अपने पोते व्योम की कस्टडी के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की। याचिका में कहा गया कि सुभाष की पत्नी निकिता सिंघानिया और उसके परिजनों ने अब तक यह नहीं बताया है कि बच्चा कहां है? सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने मामले पर सुनवाई की। पीठ ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और कर्नाटक सरकार को मामले पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए नोटिस जारी किया है। मामले की अगली सुनवाई सात जनवरी को तय की गई है। याचिका में अतुल सुभाष की मां अंजू मोदी ने कहा कि व्योम को दादा-दादी के साथ रहने की अनुमति मिलनी चाहिए।

अवधनामा

लखनऊ, शनिवार, 21 दिसम्बर 2024

डीएम ने महिलाओं में भरा स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता का जोश, प्रदान की टूल किट

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक और सराहनीय पहल हुई है। जिले में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल की अनूठी पहल से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के सपनों को न केवल उड़ान मिली बल्कि गांव में ही रोजगार के अवसर और रास्ते भी खुल गए हैं। शुक्रवार को चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने ब्लॉक लखीमपुर के अटल सभागार में प्लंबर, फ़िटर और पंप ऑपरेटर की ट्रेनिंग प्राप्त करने वाली समूह महिलाओं ने स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता का जोश भरते हुए टूल किट प्रदान की कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा कि गांव की बेटियां और महिलाएं अब किसी के ऊपर आश्रित नहीं रहेंगी। वह निर्भय होकर स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो और दूसरी महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बनकर उभरें। उनको दिया गया यह हुनर उनके जीवन के लिए केवल आमदनी का जरिया नहीं बल्कि ऐसी महिलाओं और बेटियों के लिए एक मूल मंत्र भी है जिसको अपनाकर वह भी समूह की महिलाओं की तरह ही मुख्य धारा में जुड़ सकती है। उन्होंने कहा कि यह महिलाएं हुनरमंद बनने के बाद गांव-गांव में प्लम्बर, फिटर और पंप ऑपरेटर की सेवाएं देकर समूह की महिलाएं जिले में नारी सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण पेश करेंगी। जल जीवन मिशन के माध्यम से ग्राम पंचायतों में महिलाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए हैं। महिला प्लम्बर, फिटर और पंप ऑपरेटर्स गांव की दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रो त बनेंगी डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने अधिशासी अभियंता जल निगम (ग्रामीण) योगेंद्र कुमार नीरज, बीडीओ ज्ञानेंद्र सिंह की मौजूदगी में प्रशिक्षण के अंतिम दिन ब्लॉक लखीमपुर के अटल सभागार में 168 प्रशिक्षु महिलाओं को विशेष टूल किट निशुल्कम प्रदान की। महिलाओं को प्रदान की गई प्लंबर ट्रेड की टूल किट में हथौड़ी, ब्लैड, इंची टेप, टेपलान टेप, छेनी, पाइप रिंच शामिल है। फिटर ट्रेड में पाइप रिंच, हथौड़ा, पेचकस,कटर और पंप और ऑपरेटर ट्रेड के लिए प्लास, ब्लेड, कटर, पेचकस, टेस्टर, रिंच, टेप टूलकिट में शामिल है। प्रत्येक ट्रेड में 56-56 समूह की महिलाओं ने ट्रेनिंग प्राप्त की बताते चलें कि डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल की पहल पर लखीमपुर खीरी में घूंघट और पर्दों में रहने वाली ग्रामीण महिलाएं अब घरों से निकलकर गांव में पानी की सप्लाई की जिम्मेदारी संभालेगी। जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना ने चहारदीवारी में रहने वाली 168 समूह की महिलाओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जा रही है।

ग्रामीण महिलाएं पम्प हाउस से सुबह और शाम घर-घर तक पानी पहुंचाने का जरिया बनेगी। चार दिवसीय प्रशिक्षण पाने के बाद अपने ही गांव में पानी की सप्लाई देने का कार्य सुनिश्चित करेंगी अटल सभागार में व्यावहारिक प्रशिक्षण लेने के बाद गुरुवार सुबह तहसील व ब्लॉक लखीमपुर के ग्राम पंचायत कालाआम में सभी 168 महिलाओं की कुशल प्रशिक्षकों की देखरेख में फील्ड विजिट कराकर हैंड्सऑन ट्रेनिंग भी कराई गई। इन महिलाओं ने गांव की परियोजना को न केवल देखा और समझा बल्कि जमीन पर भी काम को करके देखा। इस पूरे प्रोग्राम के दौरान डीएम ने प्रदेश से कुशल शिक्षकों को ट्रेनिंग हेतु बुलाया था। इसमें अधिशासी अभियंता जल निगम वाईके नीरज की अगुवाई में सहायक अभियंता दीन प्रभाकर, एहसान खान और सौरभ वर्मा और जल जीवन में कार्य कर रही समस्त संस्थाओं ने भी महती भूमिका निभाई।

महाविद्यालय में अटल जी एवं सुशासन विषय पर भाषण प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। उ0प्र0 शासन एवं लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ के निर्देशों के अनुपालन में भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेई जन्म शताब्दी समारोह के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो0 हेमन्त पाल के दिशा-निर्देशन में महाविद्यालय में अटल जी एवं सुशासन विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अटल जी के चित्र पर माल्यार्पण कर हुआ। भाषण प्रतियोगिता में 15 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया, जिसमें दिव्या सिन्हा एम0ए0 दर्शनशास्त्र ने प्रथम, साक्षी अवस्थी बी0एड0 ने द्वितीय, प्रियांशी मिश्रा बी0ए0 नेतृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में प्रो0 ज्योति पन्त एवं प्रो0 सुभाष चन्द्रा ने अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो0नीलम त्रिवेदी ने की। कार्यक्रम कासफल संचालन राजनीति विभाग के असिसटेन्ट प्रो0 सौरभ वर्मा ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी में प्रो0 संजय कुमार, प्रो0 विशाल द्विवेदी, प्रो0 एस0के0 पाण्डे, श्वेतांक भारद्वाज, डा0 अमित सिंह सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राए उपस्थित रहे।

9 दुकानदारों के किए गए चालान 3900 रुपये का वसूला गया जुर्माना

लखीमपुर-खीरी। शहर में अतिक्रमण की समस्या को लेकर प्रशासन ने संकटा देवी रोड पर पुन~ अतिक्रमण अभियान चलाया। एक दिन पहले, एसडीएम सदर अश्वनी कुमार सिंह और नगर पालिका की टीम ने संयुक्त रूप से अतिक्रमण अभियान चलाया था। इसमें दुकानदारों को भविष्य में अतिक्रमण न करने की चेतावनी दी गई थी। हालांकि अगले ही दिन अतिक्रमणकारियों द्वारा पुन~ अतिक्रमण किए जाने पर एसडीएम के निर्देश पर संकटा देवी रोड पर विशेष अतिक्रमण अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान 9 दुकानदारों के चालान किए गए और कुल 3900 रुपये का जुर्माना वसूला गया। देर शाम चले इस अतिक्रमण अभियान में नायब तहसीलदार सुनील कुमार, एफएसआई विशाल शुक्ला, सर्वेयर अमित सोनी और नगर पालिका की टीम शामिल रही।

01 नफर वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

लखीमपुर-खीरी। थाना फूलबेहड़ पुलिस टीम द्वारा मु0अ0सं0 551/2024 धारा 137(2)/87/64 बीएनएस व 3/4(2) पोक्सो एक्ट से सम्बन्धित 01 नफर वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के विरूद्ध विधिक कार्यवाही पूर्ण करते हुये न्यायालय के समक्ष पेशी हेतु भेजा जा रहा है।

आगरा में सोते समय रजाई में जिंदा जला जलकल-कर्मी

आगरा। आगरा जल संस्थान के एक कर्मचारी की संदिग्ध परिस्थितियों में आग लगने से मौत हो गई। वह रात को ड्यूटी दे रहा था। ठंड अधिक होने पर उसने इलेक्ट्रिक हीटर चला लिया था। ऐसा लग रहा है कि हीटर से रजाई में आग लग गई, जिसके चलते कर्मचारी आग में झुलस गया और उसकी मौत हो गई। सुबह जब विभागीय लोग जल संस्थान पहुंचे तब उन्होंने कर्मचारी को मृत पाया। मौके पर पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर मॉर्च?युरी हाउस भेज दिया है। पुलिस घटना की पड़ताल में जुटी है।

जानकारी के अनुसार सीताराम कनौजिया (48) जल संस्थान का कर्मचारी था। वह गुरुवार रात को थाना छत्ता के अंतर्गत जीवनी मंडी स्थित वॉटर वर्क्स ड्यूटी पर आया था। स्थानीय लोगों ने बताया कि सीताराम कनौजिया रात को ड्यूटी दे रहा था। ठंड से बचने के लिए वह हीटर से ताप रहा था। आशंका है कि इसी दौरान उसकी रजाई हीटर से छू गई होगी। इससे वह आग की चपेट में आ गया होगा। उसकी रजाई ने आग पकड़ ली होगी, इस तरह वह इस आग में जलकर मर गया। सीताराम की मौत से परिवार में कोहराम मचा है। इधर क्षत विक्षत शव देख विभागीय अधिकारी कर्मचारी भी दहल उठे हैं।

दो महीने पहले हुई वारदात का पुलिस ने किया खुलासा, आगरा में पड़ोसियों को फंसाने को पुत्र ने कर डाली पिता की हत्या

आगरा। आगरा से रिश्तों को शर्मसार कर देने वाली एक खौफनाक घटना सामने आई है। यहां खेडा राठौर के मझटीला गांव में एक युवक ने पड़ोसी को झूठे मामले में फंसाने के लिए अपने ही पिता की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी। लेकिन दो महीने पहले हुई वारदात का पुलिस ने खुलासा किया। पुलिस जांच में सच्चाई सामने आ गई। पुलिस के मुताबिक, 15 अक्तूबर की रात किसान लाल सिंह अपने खेत में सो रहे थे। उसी दौरान उन पर कुल्हाड़ी से हमला किया गया। हमले में कुल्हाड़ी उनके सिर में धंस गई थी। 26 अक्तूबर को इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। शुरुआत में मृतक की पत्नी भूरी देवी ने पुरानी रंजिश का हवाला देते हुए गांव के कुछ लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई थी। डीसीपी पूर्वी अतुल शर्मा ने बताया कि घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने एसओजी और सर्विलांस टीम को जांच में लगाया। इस दौरान मृतक के बेटे सुभाष से भी पूछताछ की गई। सुभाष ने कबूल किया कि 29 अगस्त को कुछ लोगों ने उसके घर में घुसकर उसे और उसकी पत्नी को लाठी-डंडों से पीटा था। इससे वह गुस्से में था और उन पर बदला लेने की नियत से इस वारदात को अंजाम दिया। सुभाष ने बताया कि पड़ोसियों को फंसाने के लिए उसने 15 अक्तूबर की रात अपने पिता पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। वह चाहता था कि इस हत्या का इल्जाम उन लोगों पर लगे, जिन्होंने उसे पीटा था। लेकिन पुलिस जांच में उसकी साजिश का भंडाफोड़ हो गया।

दिन के समय तेज धूप के कारण मौसम सामान्य लेकिन अब भी कहर बरपा रही रातें

लखीमपुर-खीरी। जिले में मौसम ने अपना दोहरा रूप दिखाना शुरू कर दिया है। दिन के समय तेज धूप के कारण मौसम सामान्य बना हुआ है। लेकिन रातें अब भी कहर बरपा रही हैं। शुक्रवार को जिले में अधिकतम तापमान जहां 23 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। वहीं रात में पारा 5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सर्द हवाओं के चलते रातें बेहद ठंडी हो रही है। जिसके चलते रातों में सर्दी से बचने के लिए लोगों को अलाव का सहारा लेना पड़ रहा है। एक हफ्ते पहले तक जिले में लगातार गिरते तापमान के कारण दिन और रात, दोनों समय सर्दी का असर साफ महसूस हो रहा था। लेकिन बीते कुछ दिनों से दिन के समय तेज धूप निकलने से लोगों को कुछ राहत मिली है। हालांकि शाम ढलते ही ठंडी हवाओं का असर बढ़ जाता है। जिससे रातें फिर से सर्द हो जाती हैं। रात के समय ठंडी हवाओं ने लोगों की परेशानियां बढ़ा दी हैं। ठंड से बचने के लिए लोग अलाव जलाकर बैठने को मजबूर हैं। कई इलाकों में बुजुर्ग लोग अलाव के सहारे ठंड काट रहे हैं। वहीं बाजार में गर्म कपड़ों और रजाई-गद्दों की मांग बढ़ गई है। ऐसे में डॉक्टरों का कहना है कि ऐसे मौसम में सर्दी-खांसी, बुखार और सांस संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। डॉक्टरों ने सलाह दी है कि शाम के समय घर से बाहर निकलने से पहले गर्म कपड़े पहनें। शरीर को गर्म रखने के लिए गर्म पेय पदार्थ जैसे अदरक वाली चाय, काढ़ा या सूप का सेवन करें। बच्चों और बुजुर्गों को ठंडी हवाओं से बचाने के लिए खास ध्यान रखें।

बीस हजार की रिश्वत लेता दरोगा गिरफ्तार

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। एन्टी क्रप्शन की टीम ने पुलिस लाइन में तैनात एक उपनिरीक्षक को मुकदमें से नाम निकालने की एवज में 20 हजार रूपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथो गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार दरोगा को दो दिन पूर्व ही वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रोहित सिंह सजवान ने विवेचना में लापरवाही बरतने के आरोप में कोतवाली रामपुर मनिहारान से पुलिस लाइन भेजा गया था। मिली जानकारी के अनुसार कोतवाली रामपुर मनिहारान क्षेत्रान्तर्गत गांव कल्लरपुर गुर्जर निवासी टेशन लाल सिंचाई विभाग में कार्यरत है। बताया जाता है कि टेशन लाल के भाई जल सिंह ने अपनी सवा छह बीघा जमीन से पौने छह बीघा जमीन गांव के ही चमन लाल को बेच दी थी। बाकि जमीन पर पेड़ खड़े हुए थे। बताया जाता है कि जल सिंह भगवानपुर में किसी फैक्ट्री में काम करता है। आरोप है कि चमन सिंह ने उसकी बाकि भूमि पर खड़े पेड़ दो लाख रूपये में बेच दिये थे, जिसकी सूचना मिलने पर जल सिंह गांव में पहुंचा, तो उसे अपनी भूमि से पेड़ काटे जाने की जानकारी ली, जिसमें उसने ऐतराज जताया तथा अपनी शेष भूमि वापिस ले ली थी। आरोप है कि बदनियती के चलते चमन ने खेत से पीलर पाड़ने का आरोप लगाते हुए जल सिंह व उसके भाई टेशन लाल व भतीजों के खिलाफ कोतवाली रामपुर मनिहारान में मुकदमा पंजीकृत करा दिया था, जिसकी विवेचना कोतवाली में ही तैनात उपनिरीक्षक जसबीर सिंह को सौंप दी गयी थी। मुकदमें की जानकारी मिलने पर जब टेशन लाल उपनिरीक्षक जसबीर सिंह से मिला तथा बताया कि वह सहारनपुर में रहता है।

आरोप है कि उपनिरीक्षक जसबीर सिंह ने मुकदमें से नाम निकलवाने की एवज में उससे 35 हजार रूपये की मांग की। इसी बीच 18 दिसम्बर को विवेचना में लापरवाही के आरोप में एसएसपी रोहित सिंह सजवान ने उपनिरीक्षक जसबीर सिंह को लाइन हाजिर कर दिया तथा 19 दिसम्बर को उपनिरीक्षक जसबीर सिंह ने पुलिस लाइन में अपनी आमद दर्ज करा ली थी।

23 व 24 को बदायूं क्लब में होगा मिलेट्स महोत्सव व प्रदर्शनी का आयोजन

बदायूँ। जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के जन्मोत्सव 23 दिसंबर को किसान सम्मान दिवस एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन मिलेट्स पुनरुद्धार कार्यक्रम अंतर्गत दो दिवसीय मिलेट्स महोत्सव मिलेट रेसिपी कार्यक्रम तथा हस्तशिल्पी बन्धुओं द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी दिनांक 23 व 24 दिसंबर को बदायू क्लब में पूर्वाह्न 11:00 से आयोजित की जा रही है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर कृषि, पशुपालन, गाना, मत्स्य, उद्यान, रेशम विभागों तथा उत्तर प्रदेश मिलेट्स पुनरुद्धार कार्यक्रम एवं एनएफएसएम योजना अंतर्गत बाजरा, रागी, कोदी, सांगा फसलों पर क्रॉप कटिंग के आधार पर उत्कृष्ट उत्पादन करने वाले कृषकों को सम्मानित किया जाएगा तथा हस्तशिल्पियों को भारत सरकार के प्रतिनिधि द्वारा प्रमाण पत्र निर्गत किए जाएंगे।

चिलकाना रोड से हटेगा एमआरएफ सेंटर पार्क का होगा सौंदर्यीकरण

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। नगरायुक्त संजय चौहान ने चिलकाना रोड पर अमन सिनेमा के सामने सड़क पर बने एमआरएफ सेंटर को वहां से शिफ्ट करने, रामजीवन नगर पार्क का सौंदर्यीकरण करने तथा पार्क के चारों ओर किये गए अतिक्रमण को तुरंत हटाकर पार्क के चारों ओर का मार्ग खोलने के निर्देश दिए हैं। नगरायुक्त ने ये निर्देश आज वार्ड 30 सहित विभिन्न वार्डों का निरीक्षण करते हुए दिए। नगरायुक्त ने सीएम ग्रिड के तहत कलक्ट्रेट से हकीकत नगर होते हुए दीवानी कचहरी तक निर्मित की जाने वाली सड़क स्थल तथा ताहरपुर रोड पर स्मार्ट सिटी की सहायता से चल रहे पांच करोड़ रुपये की लागत के सड़क व नाला निर्माण कार्य का भी अवलोकन किया। नगरायुक्त संजय चौहान आज सुबह निगम अधिकारियों के साथ वार्ड 30 मदनपुरी क्षेत्र पहुंचे और रामजीवन नगर पार्क के अलावा मदनपुरी में स्मार्ट सिटी द्वारा बनाये गए पार्क का

निरीक्षण किया। स्मार्ट सिटी अधिकारियों ने बताया कि पार्क में जो छोटे-छोटे कार्य शेष है उन्हें एक माह में पूरा करा दिया जायेगा। रामजीवन नगर में एक आरा मशीन मालिक द्वारा पार्क को वाहन पार्किंग बनाये जाने और पार्क के चारों ओर किये गए अतिक्रमण को तुरंत हटाने के निर्देश दिए। उन्होंने अपर नगरायुक्त मृत्युंजय को पार्क में झूले लगवाने, वाकिंग टैऊक्र तथा वेस्ट टू वंडर का प्रयोग करते हुए पार्क का सौंदर्यीकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने पास ही स्मार्ट सिटी द्वारा लगायी जा रही हाईमास्ट लाइट लगाने के कार्य को भी तेजी से कराने पर जोर दिया। क्षेत्रीय पार्षद नीरज शर्मा द्वारा मुख्य मार्ग के फुटपाथ के धंसने की ओर ध्यान दिलाये जाने पर नगरायुक्त/सीईओ स्मार्ट सिटी संजय चौहान ने स्मार्ट सिटी के परियोजना प्रबंधक जितेंद्र सिंह को कार्यदायी संस्था आरसीसी से फुटपाथ को तुरंत ठीक कराने तथा मुख्य अभियंता निर्माण बी के सिंह को तत्पश्चात पुर्ननिरीक्षण के निर्देश दिए। उन्होंने वार्ड 30 में वार्ड कार्यालय बनाने तथा मदनपुरी पार्क में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित करने तथा रिबोर में फेल हो चुके बोर को रियूज़ करते हुए उसे वर्षा जल से रिचार्ज करने के सिस्टम को विकसित करने पर जोर दिया। पार्षद नीरज शर्मा ने स्मार्ट सिटी द्वारा लगायी गयी स्मार्ट लाइटों के न जलने की ओर भी ध्यान दिलाया। जिस पर स्मार्ट सिटी अधिकारियों ने बताया कि आज ही लाइटों को ठीक करा दिया जायेगा। नगरायुक्त ने नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ए एस मलिक को एक खाली प्लाट में जमा कूड़े को तुरंत साफ कराने और उस पर होने वाला व्यय प्लाट स्वामी से वसूलने तथा चिलकाना रोड नाले की पूरी तरह सफाई कराने के निर्देश दिए। नगरायुक्त ने मुख्य मार्ग स्थित शौचालय का भी निरीक्षण किया। उन्होंने शौचालय के निकट केयर टेकर के बैठने का स्थान बनवाने तथा साफसफाई के साथ उसमें छोटी-मोटी टूट फूट भी ठीक कराने को कहा। उन्होंने चिलकाना रोड पर नाला निर्माण के शेष कार्य को पूरा कराने के निर्देश भी निर्माण विभाग को दिए। इस दौरान पार्षद विनोद सैनी, पार्षद प्रतिनिधि गौरव जैन, पूर्व भाजपा अध्यक्ष राकेश जैन, मंडल अध्यक्ष विजय वर्मा व राजीव गुप्ता आदि शामिल रहे। इसके पश्चात नगरायुक्त ने सीएम ग्रिड के तहत कलक्ट्रेट से हकीकत नगर होते हुए दीवानी कचहरी तक निर्मित की जाने वाली सड़क के लिए खोदे गई टेस्ट पिट तथा मार्क की जा रही सुविधाओं का निरीक्षण किया और कार्य तेजी से करने के निर्देश दिए।

जनपद में पीसीएस परीक्षा कराने के लिए तैयारियां पूर्ण

■ 26 सेक्टर तथा 26 स्टेटिक मजिस्ट्रेट तैनात

■ 11712 अभ्यर्थियों द्वारा किया जायेगा प्रतिभाग

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। जनपद में 22 दिसम्बर को सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, प्रथम सत्र में 26 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी। जिसमें कुल 11712 अभ्यर्थियों द्वारा प्रतिभाग किया जायेगा। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थियों के आवागमन की सुविधा के लिए एआरएम रोडवेज को अतिरिक्त बसों के संचालन के लिए निर्देशित कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त अभ्यर्थियों को रेलवे स्टेशन तथा बस स्टैण्ड से परीक्षा केन्द्रों पर ले जाने व लाने हेतु एआरटीओ प्रवर्तन को प्रशासन की ओर से टैम्पों, आटो आदि की अतिरिक्त व्यवस्था करने हेतु निर्देशित किया गया है। उन्होने बताया कि सभी परीक्षा केन्द्र जनपद कोषागार से 15 किमी0 के दायरे में है। प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर 01-01 सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं 01-01 स्टेटिक मजिस्ट्रेट कुल 26 सेक्टर मजिस्ट्रेट तथा 26 स्टेटिक मजिस्ट्रेटों की तैनाती की जा चुकी है।

अपर जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि परीक्षा केन्द्रों पर 26 केन्द्र व्यवस्थापकों व 26 सहायक आन्तरिक केन्द्र व्यवस्थापकों एवं 26 बाह्य सहायक केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति कर ब्रीफिंग की चुकी है। ठंड के मौसम के दृष्टिगत प्रतिभाग करने वाले अभ्यर्थियों की सुविधा हेतु बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन तथा अन्य चिन्हित स्थानों पर अलाव की व्यवस्था प्रशासन द्वारा की गई है तथा अभ्यर्थियों के ठहरने हेतु सस्ते दरों पर होटल, लॉज एवं गुरूद्वारा व संघ कार्यालय तथा धर्मशाला आदि की व्यवस्था की जा रही है। परीक्षा केन्द्रों पर यदि किसी अभ्यर्थी की तबीयत खराब हो जाती है तो इसके दृष्टिगत परीक्षा केन्द्रों पर मैडिकल, पैरा मैडिकल स्टाफ की तैनाती की गई है। समस्त परीक्षा केन्द्र सीसीटीवी की निगरानी में है।

प्रवेश द्वार से लेकर समस्त कक्ष भी सीसीटीवी की निगरानी में है, जिसका डायरेक्ट फीडबैक आयोग द्वारा स्वयं लिया जा रहा है। डॉ.अर्चना द्विवेदी ने बताया कि परीक्षा को सकुशल, निर्विघ्न, निष्पक्ष एवं शुचितापूर्वक तथा नकल विहीन सम्पन्न कराये जाने के दृष्टिगत आयोग द्वारा एजेन्सी के अतिरिक्त प्रशासन एवं लोकल पुलिस द्वारा सतर्क दृष्टि रखी जायेगी ताकि कोई अनुचित साधन का प्रयोग न कर सकें।

बाबा साहेब के खिलाफ अपमान जनक टिप्पणी का किया विरोध

सहारनपुर। आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति ने संसद भवन में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर के खिलाफ अपमान जनक टिप्पणी को लेकर नारेबाजी कर प्रदर्शन किया तथा केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की।

आरक्षण बचाओ संघर्ष समिति के पदाधिकारियों का कहना था कि केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में बाबा साहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर के खिलाफ बयानबाजी की है, उससे करोड़ों लोगों की भावनाएं आहत हुयी है। उन्होंने कहा कि जिस संविधान की शपथ लेकर अमित शाह मंत्री बने है, उसी संविधान के निर्माण डा.भीमराव अम्बेडकर की गरिमा को तार-तार करने का काम किया गया है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह सदन में सार्वजनिक रूप से माफी मांगे।

शिक्षक संघ ने आंदोलन के संबंध में शिक्षकों से की चर्चा

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। उप्र माध्यमिक शिक्षक संघ के नारायण गुट से जुड़े शिक्षकों ने प्रदेश उपाध्यक्ष रजनीश चौहान के नेतृत्व में विभिन्न विद्यालयों का भ्रमण कर जनपद कार्यकारिणी के चुनाव तथा प्रदेश नेतृत्व द्वारा चलाये जा रहे आंदोलन के संबंध में शिक्षकों से चर्चा की।

प्रदेश उपाध्यक्ष रजनीश चौहान ने बताया कि प्रदेश का एक मात्र प्रतिनिधि संगठन चेत नारायण सिंह की अध्यक्षता तथा शिक्षक विधायक राज बहादुर चंदेल के नेतृत्व में शिक्षकों के हितों के लिए लगातार संघर्ष कर रहा है। उन्होने बताया कि शिक्षको की 18 सूत्रीय मांगों को लेकर संगठन द्वारा 4 दिसम्बर को जेल भरो आंदोलन को लेकर विधान सभा का घेराव किया, जिसके चलते मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव को शिक्षक नेतृत्व से वार्ता के लिए बाध्य होना पड़ा, जिसमें पुरानी पेंशन बहाली, सेवा सुरक्षा, वित्त विहिन शिक्षकों की सेवा नियमावली व सम्मान जनक मानदेय, कार्यवाहक प्रधानाचार्य के वेतन भुगतान तथा चिकित्सा सुविधा दिये जाने पर सकारात्मक वार्ता हुयी। उन्होंने बताया कि आगामी 15 जनवरी तक जनपद का चुनाव व जिला सम्मेलन संपन्न कराया जायेगा। इस दौरान डॉ.युद्धवीर सिंह, राजेन्द्र सिंह राठौर, जयदीप त्यागी, राजबीर सिंह यादव, शिव कुमार राठौर, सतीश बागला, संदीप सिंह, अनिल सिंह, श्रीमती अनिता रानी आदि मौजूद रहे।

जीएसटी टीम ने कई प्रतिष्ठानों मारे छापे, मचा हड़कम्प

सहारनपुर। जीएसटी विभाग के टीम ने सहारनपुर में एक नामचीन घी व तम्बाकू व्यापारी के सहारनपुर, दिल्ली, देहरादून व नानौता आदि ठिकानो पर छापेमारी की गयी। छापेमारी के दौरान स्थानीय व्यापारियों में हड़कम्प मचा रहा। मिली जानकारी के अनुसार जीएसटी विभाग की टीम ने महानगर के एक नामचीन घी व तम्बाकू व्यापारी के ट्रांसपोर्टर नगर, मोरगंज, दिल्ली रोड व अन्य प्रमुख ठिकानो पर एक साथ छापा मारा। बताया जाता है कि ट्रांसपोर्ट नगर में इस व्यापारी का माल अन्य प्रदेशों में ले जाने वाले ट्रांसपोर्टरों के प्रतिष्ठानो पर भी छापेमारी मारकर व्यापारिक दस्तावेज, स्टाक व अन्य सामग्री की गहनता से जांच की गयी। समाचार लिखे जाने तक छापे की कार्रवाई जारी थी तथा इस संबंध मे अभी तक जीएसटी विभाग से कोई अधिकारिक जानकारी नहीं दी गयी।

कडी सुरक्षा व्यवस्था के बीच आज संपन्न होगी मतगणना

सहारनपुर। सहारनपुर अधिवक्ता एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच 90.78 प्रतिशत अधिवक्ताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर चुनाव मैदान में डटे सभी प्रत्याशियों का भाग्य मतपेटियों में कैद कर दिया, जिसका खुलासा कल (आज) होने वाली मतगणना से ही हो पायेगा। स्थानीय दीवानी कचहरी परिसर में मुख्य चुनाव आयुक्त सतपाल सैनी, चुनाव आयुक्त अक्षय मित्र वत्स, शहजाद अंसारी, सुनील कुमार पुंडीर, कुलदीप सिंह की देखरेख में सहारनपुर अधिवक्ता एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच कुल 1692 में से 1536 अधिवक्ताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। जिनमें बूथ नं. 1 पर 400 में से 376, बूथ न. 2 पर 400 में से 378 मतदाताओं ने अपने-अपने वोट डाले, जबकि बूथ नं. 3 पर 400 में से 355, बूथ नं. 4 पर 491 में से 472 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया तथा चुनाव मैदान में डटे सभी 23 प्रत्याशियों का भाग्य मतपेटियों में कैद कर दिया। मतदान के पश्चात सभी मतपेटियों को सील किया गया। सहारनपुर अधिवक्ता एसोसिएशन के वार्षिक चुनाव को लेकर सुबह से अधिवक्ताओं में उत्साह दिखायी पड़ा। अधिवक्ताओं ने कतारबद्ध होकर अपने-अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। जिला व महानगर कांग्रेस कमेटी के बैनर तले कांग्रेसजनों ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को अपमानित करने के विरोध में कलेक्ट्रेट तिराहे पर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ जोरदार नारेबाजी कर प्रदर्शन किया तथा राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन नगर मजिस्ट्रेट को सौंपकर केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह को बर्खास्त किए जाने की मांग की। जिला व महानगर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता जिला अध्यक्ष संदीप सिंह राणा के नेतृत्व में नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट तिराहे पहुंचे तथा जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कांग्रेस जिला अध्यक्ष संदीप सिंह राणा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा संविधान ही नहीं, बल्कि संविधान रचयिता डॉ.भीमराव अंबेडकर का भी अपमान किया जा रहा है, जिसे कांग्रेस बर्दाश्त नहीं करेंगी। उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने जिन गरीबों, पिछड़ों, दलितों व पीड़ितों को न्याय, शिक्षा और सम्मान से जीने का संवैधानिक अधिकार

दिलाया, वे नागरिक देश के संविधान को भारतीय लोकतंत्र का ग्रंथ और बाबा साहब को देवता की तरह पूजते हैं। उन्होंने कहा कि अमित शाह ने उन बाबा साहब के अनुयायियों के साथ-साथ देश के उन करोड़ों लोगों व प्रत्येक भारतीय को भी अपमानित किया, जिनकी आस्था भारतीय संविधान में है। उन्होंने मांग की कि अपने इस अक्षम्य अपराध के लिए अमित शाह को सार्वजनिक रूप से माफी मांगते हुए अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए और ऐसा न करने पर देश की राष्ट्रपति को कड़ा फैसला लेते हुए अमित शाह को केंद्रीय गृहमंत्री के पद से बर्खास्त करना चाहिए। एस.सी.एस.टी. विभाग के जिला अध्यक्ष मुनीश सहगल, पूर्व पार्षद सरदार चंद्रजीत सिंह निक्कू ने कहा कि संसद के अंदर दिया गया केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का बयान अत्यंत अशोभनीय व निंदनीय है। प्रदर्शनकारियों में पूर्व जिला प्रवक्ता गणेश दत्त शर्मा, युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष गौरव वर्मा, मनीष त्यागी, नितिन शर्मा, हरिओम मिश्रा, नरेंद्र शर्मा, धर्मवीर जैन, धर्मपाल जोशी, सौरव भारद्वाज, अनुज शर्मा, अमरदीप जैन, सतपाल बर्मन, नीरज कपिल, इकराम खान, रवि कुमार, आरिश सिद्दीकी, आरिफ खान, मधु सहगल, बबीता, पुष्पा, शाहनवाज बेगम, विमला, पूनम, बाला, रेनू, नसीब खान, गुलशेर आलम, अश्वनी मिंटा, मंजीत गोल्डी, राहुल सिंह आदि मौजूद रहे।

भाजपा, आरएसएस द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अपमान व मजाक नहीं सहेगा पीडीए : सुदर्शन

लखनऊ अवधनामा संवाददाता। समाजवादी पार्टी बाबा साहब आंबेडकर वाहनी के राष्ट्रीय महासचिव राम बाबू सुदर्शन ने कहा कि बाबा साहब डॉ.भीमराव अम्बेडकर पर मा गृह मंत्री अमित शाह द्वारा की गयी अपमानजनक टिप्पणी से देश भर के लोगो में बढ़ते आक्रोश के चलते गृह मंत्री को तत्काल माफ़ी मांगनी चाहिए। देश के गृह मंत्री जैसे सम्मानजनक पद पर रहते हुए, संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मजाक उड़ाना पद की गरिमा को शोभा नहीं देता है सुदर्शन ने कहा कि बाबा साहब डॉक्टर भीम राव आंबेडकर देश के शोषित,वंचित,पीड़ित समाज में पूजनीय हैं। दलितों आदिवासियों पिछडो को बाबा साहब ने ही उनके हक़ अधिकारों की लड़ाई लड़ी, गृह मंत्री की बाबा साहब पर की गयी टिप्पणी बताती हैकि भाजपा किस तरह से सविधान और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी से नफरत करती है! भाजपा के नेता और आरएसएस गाहे बगाहे किसी न किसी रूप में डॉ. भीमराव अम्बेडकर और संविधान को लेकर गलत बयान बाजी व सविधान को बदलने और ख़त्म करने की बाते करते रहते है सुदर्शन ने कहाकि अब पीडीए भाजपा, आरएसएस द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अपमान व मजाक नहीं सहेगा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर के प्रति की गई अपमानजनक टिप्पणी की समाजवादी पार्टी बाबा साहब आंबेडकर वाहनी घोर निंदा करती हैं। बाबा साहब का ही नहीं, संविधान का भी अपमान है।

निशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर 22 दिसंबर को

मैनपुरी अवधनामा संवाददाता। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वर्गीय पंडित रामेश्वर दयाल मिश्र की पुंड्या तिथि पर निशुल्क चिकित्सा शिविर एवं कंवल वितरण का विशाल कार्यक्रम है। यह आयोजन उनके सुपुत्र प्रमोद कुमार मिश्र करवाते है। प्रमोद कुमार मिश्र उर्फ, दादा, बहुत ही दयालू प्रवृत्ति के है बो समय समय पर गरीब और मजलूम लोगों की मदद करते रहते है। दादा के सुभाव में दान धर्म और सेवा का भाव रहता है, और इसी रास्ते पर दादा के सुपुत्र भी है जो सेवा करने में गरीबों की मदद करने में आगे रहते है। इस शिविर में दादा के बड़े पुत्र डॉक्टर दिलीप मिश्रा जो MBBS, MS hai Japan, पुत्र बधू Dr सोनिया भट्ट मिश्रा, वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, डॉक्टर अनिल मिश्रा, हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर मृदुला शमा, न्यूरो व स्पाईन सर्जन, डॉक्टर हेमेंद्र अग्रवाल MD, medicine, Dr अपूर्वा जैन MD, DM Agra से पधारेंगे और मरीजों को देख कर दवाई वितरण की जाएगी यह आयोजन प्रसंत कुमार मिश्रा की अध्यक्षता मां होता है।

मुशायरा, कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

लखनऊ अवधनामा संवाददाता। दिनांक 19/12/2024 को राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उप्र एवं डेल्फिक एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में प्रेमचंद सभागार, उप्र हिन्दी संस्थान में गीत नया गाता हूँ कार्यक्रम आयोजित किया गया। उप्र शासन की नीति के अनुरूप भारत के पूर्व प्रधान मंत्री, भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के जन्म के अवसर पर गीत नया गाता हूँ। कार्यक्रम में मुशायरा, कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उप्र के अध्यक्ष एवं सचिव, डेल्फिक एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश, डॉ0 अखिलेश कुमार मिश्र, आईएएस ने की। कार्यक्रम में डॉ0 राम कृष्ण स्वर्णकार, आई0पी0एस0, मा0 अध्यक्ष, डेल्फिक एसोसिएशन ऑफ उत्तर प्रदेश, की विशेष उपस्थिति रही। समारोह में मुख्य अतिथि श्री रमेश प्रसन्ना, महासचिव, अंतर्राष्ट्रीय डेल्फिक कौंसिल एवं विशेष अतिथि श्री अशोक सिंह, सेक्रेटरी, नेशनल डेल्फिक कौंसिल रहे। कार्यक्रम का आरम्भ माँ सरस्वती जी के चित्र पर माननीय अतिथियों द्वारा माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन तथा वाणी वन्दना से हुआ।

सम्भल व बहराइच दंगों ने खोली कानून व्यवस्था की पोल : शमसुल हसन उमरा

लखनऊ अवधनामा संवाददाता। प्रदेश की सम्भल और बहराइच दंगे को लेकर कांग्रेस पार्टी द्वारा विधानसभा घेराव के कार्यक्रम को लेकर लखनऊ पुलिस ने कांग्रेस पार्टी के प्रदेश महासचिव (अल्पसंख्यक विंग) शमसुल हसन उमरा को हाउस अरेस्ट किया। इस दौरान श्री हसन को थाना गुडम्बा पुलिस ने 24 घंटे पहले ही हाउस अरेस्ट कर लिया। उनके घर पर पुलिस तैनात कर बाहर निकलने पर पाबंदी लगा दी। इस दौरान टेलीफोनिक वार्ता पर श्री हसन ने बताया कि प्रदेश में लगातार हो रहे दंगे गिरती हुई कानून व्यवस्था बता रही है। प्रदेश में बेरोजगारी शीर्ष पर है। मंहगाई लगातार कमर तोड रही है. सरकार इस दिशा में कोई कदम नहीं उठा रही है। कुम्भकर्णीय नींद में सो रही सरकार को जगाने के लिए कांग्रेस नेतृत्व ने विधानसभा घेराव का कार्यक्रम रखा था मगर योगी सरकार ने प्रदेश के नेताओं को घर में ही अरेस्ट कर लिए. इस के बावजूद भी कांग्रेस के कार्यकर्ता व नेता ने विधान सभा का घेराव किया। योगी सरकार तानाशाही की चरम सीमा पार कर चुकी है. आनेवाले चुनाव में जनता इस तनाशाही का जवाब देगी।

विधायिका डॉ सुरभि गंगवार ने सीएम योगी आदित्यनाथ से भेंटकर मेडिकल कॉलेज की स्थापना पर चर्चा की

फर्रुखाबाद अवधनामा संवाददाता। फर्रुखाबाद की सुरक्षित विधानसभा क्षेत्र कायमगंज से भाजपा के सहयोगी दल जनता दल यस की विधायिका डॉक्टर सुरभि गंगवार ने उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सीएम आवास पर भेंट कर अपनी विधानसभा कायमगंज क्षेत्र में पड़ोस के पांच गांव शामिल करने एवं एक मेडिकल कॉलेज खुलवाने पर चर्चा की विधायक डॉ सुरभि गंगवार के द्वारा विकास कार्यों में अधिक रुचि रखने पर क्षेत्र की जनता ने उन्हें ढेरों बधाइयां दी बधाइयां देने वालों में विधायक प्रतिनिधि शिल्पी गंगवार विनोद गंगवार सहित कार्यकर्ता व नेता शामिल रहे।

दो दंपतियों ने स्वीकार किया साथ-साथ रहना

अलीगढ़ अवधनामा संवाददाता। प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय अलीगढ़ रणधीर सिंह की अदालत में वादी ने धारा 9 एचएम एक्ट का केस प्रस्तुत किया। वादी की उम्र 25 वर्ष है एवं विपक्षीय पत्नी की उम्र 23 वर्ष है विपक्षीय पहासू बुलंदशहर के निवासी हैं। वादी जवां क्षेत्र का निवासी है। पक्षकारों पर एक पुत्र उम्र करीब आठ माह का है शादी 2021 में हुई है। पति-पत्नी करीब 1 साल से अलग-अलग रह रहे हैं। दूसरा मामला वादी की उम्र करीब 36 वर्ष है वरला क्षेत्र का निवासी है। विपक्षीय पत्नी की उम्र करीब 34 वर्ष है, सिकंदराराऊ हाथरस जनपद के निवासी है। वादी ने धारा 9 एचएम एक्ट का केस प्रस्तुत किया पति-पत्नी पर दो बेटी एक बेटा है, शादी वर्ष 2009 में हुई है। करीब दो वर्ष से अलग-अलग रह रहे हैं। उक्त दोनों पत्रावलियां सुनवाई के लिए अपर प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय चतुर्थ श्रीमती ललिता गुप्ता की अदालत में प्रस्तुत हुई कोर्ट ने पत्रावली काउंसलिंग के लिए दी। पति पत्नी को काफी समझाया बुझाया गया। दोनों मामलों में पति-पत्नी मय बच्चों के साथ-साथ रहने को राजी हुए और दोनों वादी अपनी पत्नियों को उनके मायके से बुलाकर मय बच्चों के साथ-साथ हंसी खुशी चले गए। उक्त जानकारी काउंसलर एडवोकेट योगेश सारस्वत ने दी है।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और पूर्वोत्तर रेलवे के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। दिनांक 20.12.2024 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मण्डल के मध्य एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर रेलवे के मण्डल रेल प्रबंधक श्री आदित्य कुमार, अपर मण्डल रेल प्रबंधक श्री राजीव कुमार, वरिष्ठ मंडलीय वित्त प्रबन्धक डॉ आर.के. भारती, वरिष्ठ मंडलीय कार्मिक अधिकारी श्री राहुल यादव, और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के लखनऊ अंचल प्रमुख (महाप्रबंधक) राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख श्री मार्कण्डेय यादव, एवं दोनों विभागों के अन्य शीर्ष अधिकारी मौजूद रहे। इस समझौता ज्ञापन के तहत, पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मण्डल के 15,000 से अधिक कर्मचारियों को यूनियन बैंक में वेतन खाता खुलवाने पर कई लाभ प्राप्त होंगे। यूनियन बैंक के अंचल प्रमुख श्री राजेश कुमार ने बताया कि कर्मचारियों के सैलरी अकाउंट पर एक करोड़ पंद्रह लाख रुपये तक का दुर्घटना बीमा और दस लाख रुपये तक का जीवन बीमा प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, 2 लाख रुपये तक ओवरड्राफ्ट की सुविधा, अस्पताल में भर्ती होने पर 30,000 रुपये तक की पेमेंट, रीटेल लोन की ब्याज दरों में छूट और हर तिमाही निशुल्क स्वास्थ्य जांच भी दी जाएगी। ये सभी सुविधाएँ यूनियन बैंक के कॉर्पोरेट सैलरी पैकेज के तहत उपलब्ध कराई जाएंगी।

नई कमेटी के गठन के साथ ही वक्फ़ अंजुमन इस्लामिया में सालों से चल रही लूट का हुआ पर्दाफाश

- अवधनामा की खबर पर लगी मुहर
- अहमद अनस (अनस चौधरी) की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय कमेटी का हुआ गठन
- 1986 के बाद कोई हिसाब किताब नही, पुरानी कमेटी ने बिना परमिशन किया कई निर्माण
- करोडों के घोटाले और भ्रष्टाचार पर सुन्नी सेंट्रल वक्फ़ बोर्ड की बड़ी कार्यवाही

मनव्वर रिज़वी

गोरखपुर। शहर में चर्चित मदरसा अंजुमन इस्लामिया के घोटाले से सम्बंधित खबरों के बीच नई खबर ये है कि भ्रष्टाचार और घोटाले की तमाम शिकायतों को संज्ञान में लेते हुए वक्फ़ अंजुमन इस्लामिया की नई कमेटी को सुन्नी सेंट्रल वक्फ़ बोर्ड ने मान्यता दे दी है। आपको बताते चलें की इमामबाड़ा स्टेट के बाद गोरखपुर में अंजुमन इस्लामिया के पास वक्फ़ की सबसे ज़्यादा सम्पत्ति है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक 1986 में चौधरी अब्दुल रहमान की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय कमेटी का गठन वक्फ़ बोर्ड ने किया था। 29 जून 1989 को कमेटी का कार्यकाल पूरा होने के बाद किसी भी नई कमेटी को बोर्ड द्वारा मान्यता नही दी गई। वहीं दूसरी तरफ अंजुमन इस्लामिया का अंतिम आडिट 1986 में हुआ। हैरानी की बात ये है कि अंजुमन इस्लामिया की तरफ से 1986 के बाद सुन्नी सेंट्रल वक्फ़ बोर्ड से किसी भी तरह का न तो पत्राचार किया गया और न ही बोर्ड में कोई अंशदान ही जमा किया गया। इसके अलावा अंजुमन इस्लामिया के नाम पर जो निर्माण हुआ उसके लिए वक्फ़ बोर्ड से किसी भी तरह की कोई परमिशन नही ली गई जबकि पिछले लगभग 15 से 20 सालों में कुछ चुनिंदा लोगों द्वारा वक्फ़ अंजुमन इस्लामिया की सम्पत्ति को निजी सम्पत्ति बनाकर करोडों रुपये का वारा न्यारा कर लिया गया। फिलहाल सुन्नी सेंट्रल वक्फ़ बोर्ड द्वारा 13 दिसम्बर 2024 को जारी तौलियत प्रमाण पत्र द्वारा जो कमेटी गठित की गई है उसमें अहमद अनस को अध्यक्ष, मोहम्मद फारूक को उपाध्यक्ष जबकि नूर उल हक को सचिव और सिकंदर को उप सचिव के साथ ही हाफिज बदरुद्दीन, सरफराज हसन और सन्नू को सदस्य बनाया गया है। अब्दुल्लाह अब्दुल्लाह बाबू और महबूब सईद हारिस वाली तथाकथित कमेटी के अज़ीम सामानी और आमिर सामानी के चंगुल से अंजुमन इस्लामिया की मुक्ति और नई कमेटी का गठन गोरखपुर के वक्फ़ इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा।

अनियंत्रित कार ने सड़क किनारे बैठे किसान को रौंदा

उरई (जालौन)। तेज गति व अनियन्त्रित स्कॉर्पियो कार ने सड़क किनारे बैठे किसान को रौंद डाला जिससे उसकी ठौर मौत हो गई। रामपुरा थाना अंतर्गत ग्राम जगम्मनपुर में रामपुरा रोड पर सोनी गेस्ट हाउस के सामने सुजुकी पुत्र रामनरेश शाक्यवार की पंचर जोड़ने की दुकान पर प्रहलाद सिंह पुत्र जगन्नाथ सिंह उम्र लगभग 42 वर्ष निवासी ग्राम हमीरपुरा थाना रामपुरा रोज की भांति खेतों से वापस आते समय अपनी साइकिल का पंचर ठीक करवा रहे थे। उसी समय अपराह्न लगभग 3:30 बजे तेज गति से चलती हुई काले रंग की स्कॉर्पियो कार अनियंत्रित होकर सड़क से उतर कर दुकान पर बैठे प्रहलाद को रौंदते हुए व टीन टप्पर उछालते हुए चली गई जिससे प्रहलाद सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। ग्रामीणों की मदद से घायल प्रहलाद को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामपुरा ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। रामपुरा थाना पुलिस को घटना की सूचना देते हुए मृतक प्रहलाद के भाई सुरेंद्र सिंह ने बताया कि काले रंग की स्कॉर्पियो कार जिसे सोनू सिंह पुत्र राम किशोर सिंह निवासी जगम्मनपुर चला रहे थे जिससे उनके भाई की दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

यूईआई ग्लोबल एजुकेशन ने मास्टर शेफ़ प्रतियोगिता यूसीसी का दूसरा संस्करण आयोजित किया गया

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। यूईआई ग्लोबल एजुकेशन ने मास्टर शेफ़ प्रतियोगिता-यूसीसी का दूसरा संस्करण आयोजित किया, जिसमें यूईआई ग्लोबल के सभी परिसरों के उभरते शेफ़ ने प्रतिष्ठित मास्टर शेफ़ खिताब के लिए भाग लिया, जिसमें क्षेत्रीय, भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यंजन परोसे गए और आतिथ्य उद्योग के दिग्गजों द्वारा जज किया गया।

यूईआई ग्लोबल एजुकेशन ने आतिथ्य और होटल प्रबंधन कार्यक्रम में 18 वर्षों की विरासत के साथ 25,000 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया है और उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न स्टार श्रेणी के होटलों में रखा है, जो छात्रों को पेशेवर शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए तैयार करते हुए खेल और संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रबल समर्थक रहे हैं। यूसीसी-2 में शीर्ष शेफ़, खाना पकाने के शौकीन और उभरते शेफ़ शामिल हुए और खाना पकाने की कला का जश्न मनाया गया। पाककला प्रतियोगिता रचनात्मकता, कौशल और जुनून का प्रदर्शन थी। तीन दिवसीय पाककला प्रतियोगिता में मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज, ड्रेस ए केक और इनोवेशन फ्यूजन प्रतियोगिता जैसी विभिन्न पाककला प्रतियोगिताएं शामिल हैं। प्रतियोगिता का अंतिम दौर गेम चेंजर होगा क्योंकि फिनाले नॉकआउट प्रतियोगिता थी। विजेता टीमों और उपविजेताओं को 51000/-, 21000/- और 11000/- रुपये की पुरस्कार राशि और पदक तथा शेफ कोट के साथ प्रतिष्ठित मास्टर शेफ का खिताब दिया गया।

यूईआई पाककला प्रतियोगिता को ब्रॉडकास्ट पार्टनर रेडियोसिटी, हेल्दी फूड पार्टनर मिलेट्जकार्ट, फ्लेवर पार्टनर मोनिन और स्पाइस पार्टनर कैच स्पाइसेस का गर्व से समर्थन प्राप्त है। पुरस्कार वितरण समारोह में आईसीएफ के उपाध्यक्ष शेफ सिरीश सक्सेना, आईटीसी फॉर्च्यून के महाप्रबंधक बृजेश कुमार, मर्क्योर के महाप्रबंधक अमित कपूर मौजूद थे। उन्होंने होटल प्रबंधन शिक्षा के अपने अनुभव और दायरे को साझा किया। कार्यक्रम में मौजूद सभी नवोदित शेफ ने उनके विचारों और अंतर्दृष्टि को महत्व दिया। छात्रों को प्रेरित करने के लिए, एमडी और सीईओ मनीष खन्ना ने कहा यूसीसी एक रोमांचक कार्यक्रम है जो पाककला के शौकीनों, छात्रों, प्रशिक्षकों और पेशेवरों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यंजनों की विविधता का जश्न मनाने और प्रदर्शन करने के लिए एक साथ लाता है।

पहली रोटी गाय की वाहन को दिखाई हरी झंडी

अवधनामा संवाददाता

उरई (जालौन)। गोशाला में संरक्षित गोवंश अब रोटी भी खाएंगे, उनके लिए नगर पालिका अब कस्बे के हर घर से रोटी लेगी। इसके लिए घर-घर पहली रोटी गाय की वाहन पहुंचेगा। पालिकाध्यक्ष प्रदीप गुप्ता और एसडीएम ज्योति सिंह ने तहसील से पहली रोटी गाय की वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पालिकाध्यक्ष ने बताया कि नगर भर में यह वाहन घर-घर पहुंचेगा और नागरिकों से रोटी के अलावा भी अन्य खाद्य सामग्री ली जाएगी। इससे गोशाला में संरक्षित गौवंशों का पेट भरा जाएगा। एसडीएम ने कहा, घर में भोजन के रूप में बनने वाली पहली रोटी गोवंश के लिए होती है जिसे वाहन में जरूर डालें। सनातन धर्म में गोमाता की सेवा अनूठी है। इस दौरान प्रभारी तहसीलदार जितेंद्र सिंह, सफाई इंस्पेक्टर हरिशंकर निरंजन, सुरेशचंद्र अग्रवाल, सूरजज्ञान महाविद्यालय के प्रबंधक अंकुर यादव, योगेश सोनी आदि रहे।

पुस्तक गार्गी अदम्य अटूट अस्तित्व का विमोचन

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। श्रीमती ऋचा खन्ना, संयुक्त निदेशक, वरदान इंटरनेशनल अकादमी एवं चाइल्ड एक्टिविस्ट द्वारा लिखित पुस्तक गार्गी- अदम्य अटूट अस्तित्व का विमोचन एक भव्य कार्यक्रम में किया गया।

इस अवसर पर साहित्य तथा शिक्षा जगत की जानी-मानी हस्तियां मीडिया प्रतिनिधि, और साहित्य प्रेमी मौजूद थे,जिनमें प्रमुख रहे। श्रीमती सुचिता चतुर्वेदी सदस्य बाल आयोग, सर्वेश अस्थाना प्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं कवि एवं श्री धर्मेंद्र सिंह रीजनल हेड दैनिक जागरण एवं आईनेक्स्ट मौजूद रहे इनके अलावा अनिल अग्रवाल, श्रीमती माला मेहरा, राजीव तूली, सुश्री मंजीत बत्रा, डॉ जावेद आलम खान, अनुज अवस्थी जी एवं श्रीमती शर्मिला सिंह, वंदना गौर जी भी मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरुआत श्री गौरव प्रकाश द्वारा लेखिका के संक्षिप्त परिचय और स्वागत भाषण से हुई। विमोचन के बाद उपस्थित लोगों ने तथा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉक्टर नेहा आनंद ने लेखिका से किताब और उनके लेखन के बारे में बातचीत की। गार्गी एक लड़की के जीवन पर्यंत संघर्ष की कहानी है जो अंततः अपने दृढ़ निश्चय से सफलता को प्राप्त करती है। यह एक प्रेरणादायक कहानी है जो हमारे समाज के बदलते स्वरूप और नई पीढ़ी की चुनौतियों को उजागर करती है। लेखिका ने बताया कि यह किताब पाठकों को जीवन के गहरे अर्थों को समझने और अपनी सोच को नया दृष्टिकोण देने में मदद करेगी।

रासेयो स्वयंसेविकाओं ने शुरू किया स्वावलंबन अभियान

गोरखपुर अवधनामा संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (रासेयो) की अनुसूइया इकाई की स्वयंसेविकाओं ने स्वावलंबन अभियान शुरू किया है। इसके तहत कागज का लिफाफा बनाने का कार्य प्रारम्भ कर विश्वविद्यालय में संचालित गुरु गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर (गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज) के फार्मेसी में उपयोग के लिए 400 लिफाफा कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह को दिया गया। इस अवसर पर कुलपति ने स्वयंसेविकाओं के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि स्वावलंबन किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास के लिए अपरिहार्य आवश्यकता है। कुलसचिव डॉ.प्रदीप कुमार राव ने भी स्वयंसेविकाओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि विश्वविद्यालय यह लिफाफा पूर्व में जिन दामों पर अन्य फर्म से खरीद करता था अब यह अपने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई से लिया जाएगा और वही निर्धारित शुल्क इकाई के स्वयंसेविकाओं को दिया जायेगा। इस कार्य से परिसर को पॉलीथिन मुक्त बनाने में भी मदद मिलेगी। इस अवसर पर नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. डीएस अजीथा, रासेयो के कार्यक्रम समन्वयक अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी सुमन यादव एवं लिफाफा बनाने वाली स्वयंसेविकाओं बबली शर्मा, अदिति पांडेय, अदिति यादव, आकांक्षा, अलका सिंह, अंबालिका प्रजापति, अंबालिका यादव, अनामिका निषाद, अंजली यादव, अंकिता यादव उपस्थित रहीं।

अलीगढ़ बार एसोसिएशन का चुनाव संपन्न

अलीगढ़ अवधनामा संवाददाता। आज जनपद न्यायालय में अलीगढ़ बार एसोसिएशन के चुनाव के लिए सुबह से ही वकीलों की लाइन लगी और वह अपने मत अधिकार का प्रयोग करने लगे। अलीगढ़ बार एसोसिएशन के चुनाव के लिए अनेक वकीलों ने चुनाव में खड़े होने के लिए नामांकन किया। जिसका की आज कलेक्ट्रेट परिसर में बार एसोसिएशन में चुनाव के लिए वोटिंग हुई। इस चुनाव में पूर्व शासकीय अधिवक्ता ने उपाध्यक्ष पद के लिए दावेदारी की। तमाम वकील अपने अपने पक्ष में मतदान की अपील करते दिखे। इस चुनाव के वोट की गिनती कल होगी जिसमें कल विजय प्रतियाशियों की घोषणा होगी। विभिन्न पदों के लिए कुल 31 अधिवक्ता अपनी किस्मत आजमाने चुनाव में खड़े हुऐ। पूर्व शासकीय अधिवक्ता राम कुमार गुप्ता वरिष्ठ उपाध्यक्ष के लिए चुनाव में खड़े हुऐ। देखना होगा की कल कोन कोन विजई घोषित होगा।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

ग़ाज़ीपुर अवधनामा संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा टीवी मुक्त भारत 2025 तक करने का संकल्प लिया गया है और इसी क्रम में टीवी मुक्त ग्राम पंचायत योजना भी चलाई जा रही है । इसी के क्रम में शुक्रवार को गाजीपुर के रसूलपुर टी शेखपुर ग्राम पंचायत में स्वास्थ्य एवं बलगम परीक्षण हेतु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि सीएमओ डॉ सुनील पांडे एवं विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत राज अधिकारी अंशुल मौर्य रहे। इस दौरान स्वास्थ्य शिविर का मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने फीता काटकर अनावरण किया। इसी क्रम में ग्राम प्रधान कल्पना यादव के द्वारा 10 क्षय रोग मरीजों को पोषण पोटली भी दिया गया ताकि वह अपने स्वास्थ्य के लिए खान-पान का ध्यान रख सके।

भारतीय रेल

"सार्वजनिक सूचना"

रेलवे एवं परिसरो के सभी उपभोक्ताओ को एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि रेलवे के निम्नलिखित खंड पर 25000 वोल्ट, 50 हर्ट्ज ए. सी. सिरोपरि कर्षण तारो को खंड के सामने विनिर्दिष्ट तारीख को या उसके बाद में ऊर्जित किया जाएगा। उस तारीख को और उस तारीख से सिरोपरि कर्षण लाइन को सभी समय हमेशा के लिए विद्युतीकृत माना जाएगा और कोई भी अनधिकृत व्यक्ति उस सिरोपरि लाइन के समीप दाखिल होने या काम करने नहीं जाएगा।

सेक्शन (खण्ड)	मण्डल (डिवीजन)	दिनाँक
उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल के अयोध्या कैंट स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंगः किमी 966/16 (चेनेजे 966/443.50) से किमी AYC 1273 (चेनेजे 969/325.50) तक संबंधित टर्नआउट और क्रॉस ओवर तथा सहायक परिणामित्र सहित के साथ	लखनऊ	31.12.2024

के वी ट्रैक्शन लाइन का आरंभ 25 सड़क "उपयोगकर्ताओं हेतु अधिसूचना"

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि रेल खंड **"उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल के अयोध्या कैंट स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंगः किमी 966/16 (चेनेजे 966/443.50) से किमी AYC 1273 (चेनेजे 969/325.50) तक संबंधित टर्नआउट और क्रॉस ओवर तथा सहायक परिणामित्र सहित के साथ"** पर 25 केवी विद्युत ट्रैकशन का सुभारंभ किया जाएगा। सभी समपार फाटक हाइट गेज़ का निर्माण सड़क की सतह से स्पष्ट अधिकतम ऊंचाई **4.78** मीटर पर अत्यधिक ऊंचाई भारो को ट्रैक्शन लाइन **(कांटेक्ट तार), जो की समपार फाटक पर रेल लेवल से 5.5 मीटर न्यूनतम ऊंचाई पर हो,** के खतरनाक संपर्क में आने से बचाव के उद्देश्य से किया गया है।

"एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि भारित वाहनों के लिए उर्युक्त निर्धारित ऊंचाई का अवलोकन करें तथा यह भी ध्यान रखें कि सड़क वाहनों में लदा हुआ भार हाइट गेज में किसी भी परिस्थिति में न टकराए। अधिक ऊँचे भार से निम्न खतरे है:

1. हाइट गेज को नुकसान और तत्पश्चात सड़क व रेल लाइन का अवरोध।
2. स्वयं वाहन अथवा ले जाये जाने वाले सामान अथवा उपकरण को ख़तरा।
3. बिजली के तारों से संपर्क अथवा खतरनाक समीपता के कारण आग फैलने व जान माल को ख़तरा।

उप मुख्य विद्युत अभियंता (निर्माण)
उत्तर रेलवे, लखनऊ

No.: 140/Elect./C/Dy.CEE/LKO/Warning/01 Date:-18.12.2024 3906/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कार्यालय नगर पालिका परिषद महराजगंज, जनपद-महराजगंज

पत्राँक- 1330/न0पा0प0मह0/2024-25 दिनांक : 19/12/2024

कार्यालाय नगर पालिका परिषद महराजगंज, जनपद-महराजगंज

अतिअल्पकालीन निविदा सूचना

एतद्वारा समस्त ठेकेदारो/सम्बन्धित फर्मो को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद महराजगंज द्वारा निम्नलिखित कार्य कराया जाना है जिसके लिए दिनांक- 09/01/2025 को अपरान्ह 4:00 बजे अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उपस्थित ठेकेदारों/उनके प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र कार्यालय अवधि में दिनांक- 23/12/2024 से 08/01/25 को अपरान्ह 02:00 बजे अपरान्ह तक कार्यालय नगर पालिका परिषद महराजगंज में निर्धारित मूल्य जमा करके प्राप्त किया जा सकता है। निविदा की जमानत धनराशि ऑनलाइन/नगद/एफ0डी0आर0/एन0एस0सी0 के रूप में स्वीकार होगा जो अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद के नाम बन्धक होगा। किसी भी निविदा को निरस्त करने या स्वीकृत करने का अधिकार अधिशासी अधिकारी/अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद महराजगंज जनपद-महराजगंज को होगा। अन्य नियम एवं शर्तो की जानकारी कार्यालय नगर पालिका परिषद महराजगंज में किसी भी कार्य दिवस को प्राप्त किया जा सकता है। समस्त कार्यो की निविदायें अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में जमा की जायेगी। कार्यो का विवरण निम्नवत् है।

राज्य वित्त आयोग/निकाय निधि :-

क्र0 सं0	कार्य का विवरण	आगणन की धनराशि	जमानत की धनराशि	निविदा प्रपत्र की धनराशि	कार्यावधि
1	वार्ड नं0-03 नेहरू नगर में श्री घनश्याम के घर के सामने से श्री दयाराम के घर के सामने तक मरम्मत का कार्य।	105000.00	10500.00	1100.00	30 DAY
2	वार्ड नं0-16 गांधी नगर में श्री नरेश के घर से श्री सुदर्शन, रमाकान्त, मुन्नर के घर होते हुए श्री बैजनाथ कन्नौजिया के घर तक नाली का निर्माण कार्य।	307000.00	30700.00	500.00	30 DAY
3	वार्ड नं0-03 नेहरू नगर में श्री भोला के मकान से श्री कैलाश, चौथी के मकान होते हुए श्री अनिल गौतम के मकान तक नाली का निर्माण कार्य।	376000.00	37600.00	500.00	30 DAY
4	वार्ड नं0-17 साहूजी महराज नगर में आर0टी0ओ0 आफिस के सामने स्थित शौचालय के मरम्मत का कार्य।	619000.00	61900.00	600.00	31 DAY
5	वार्ड नं0-02 बैकुण्ठपुर में शौचालय का मरम्मत कार्य।	292000.00	29200.00	500.00	32 DAY
6	वार्ड नं0-07 शिव नगर में शौचालय के मरम्मत का कार्य।	655000.00	65500.00	700.00	33 DAY
7	वार्ड नं0-22 शास्त्री नगर में श्री सन्तोष गुप्ता के मकान से श्री अभिषेक पटेल के मकान तक सी0सी0 रोड एवं नाली का निर्माण कार्य।	570000.00	57000.00	600.00	30 DAY
8	वार्ड नं0-13 सक्सेना नगर में कालिका बिरयानी के सामने इण्टरलाकिंग का कार्य।	198000.00	19800.00	500.00	30 DAY

नोट :-

1. निर्माण कार्य हेतु जमानत धनराशि कुल आगणन धनराशि का 10% देना होगा (2% निविदा के साथ व शेष 8% निविदा स्वीकृति के पश्चात) आनलाइन/नगद/एफ0डी0आर0/एन0एस0सी जो अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद महराजगंज, जनपद-महराजगंज के पक्ष में बन्धक के रूप में जमा करना होगा।

(आलोक कुमार)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद महराजगंज
जनपद-महराजगंज

(डॉ0 पुष्पलता मंगल)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद महराजगंज
जनपद-महराजगंज

सनातन धर्म सुरक्षित है तो दुनिया में सब कोई सुरक्षित हैः सीएम योगी

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने श्री अयोध्या धाम के अशर्फी भवन आश्रम में आयोजित भव्य अष्ठोत्तरशत 108 श्रीमद्भागवत पाठ और पंच नारायण महायज्ञ में भाग लिया। सीएम योगी ने महायज्ञ में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ प्रदेशवासियों के सुख, शांति और समृद्धि की कामना करते हुए आहुतियां अर्पित की। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सनातन धर्म सुरक्षित है तो भारत का राष्ट्रीय धर्म है और इसे सुरक्षित रखना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि धर्म और संस्कृति के माध्यम से समाज में सकारात्मकता और शांति का प्रसार होता है। ऐतिहासिक मंदिरों पर आक्रमण की घटनाओं का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जो लोग इन पवित्र स्थलों को नष्ट करने का काम करते थे, उनका कुल और वंश नष्ट हो गया।

सीएम योगी ने कहा कि औरंगजेब के परिवार के लोग आज रिक्शा चला रहे हैं। यह उनकी दुर्गति है। अगर उन्होंने पुण्य किए होते और मंदिरों को न तोड़ा होता, तो क्या उनकी ऐसी

स्थिति होती? उन्होंने कहा कि विश्व शांति की स्थापना केवल सनातन धर्म के माध्यम से ही हो सकती है। यह शाश्वत धर्म है, जो सृष्टि के आरंभ से ही चला आ रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विरासत और विकास के बीच बेहतर समन्वय होना चाहिए। उन्होंने अयोध्या में हो रहे विकास कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार ने संतों के मार्गदर्शन में अयोध्या के वैभव को पुनः स्थापित करने का कार्य किया है। रामलला के भव्य मंदिर का निर्माण और अयोध्या धाम का विकास इसका जीवंत उदाहरण है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह यज्ञ न केवल आत्मशुद्धि और पर्यावरण शुद्धि का माध्यम है, बल्कि यह सनातन धर्म की रक्षा और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार भी करता है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन मां सरयू के पवित्र अंचल और भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर हो रहा है, जो इस यज्ञ को और भी विशेष बनाता है।

सीएम योगी ने कहा कि जिन गलतियों की वजह से भारत को गुलामी की बेड़ियां झेलनी पड़ीं और हमारे धर्म स्थलों का अपमान हुआ, उन्हें दोबारा नहीं दोहराया जाना चाहिए। उन्होंने भारतवासियों से सनातन धर्म की रक्षा और संरक्षण के लिए एकजुट होकर काम करने का आह्वान किया। सीएम योगी ने कहा कि अगर विश्व मानवता को बचाना है तो सनातन धर्म का सम्मान करना होगा। यह धर्म सभी के कल्याण की बात करता है। उन्होंने वसुधैव कुटुंबकम् का संदर्भ देते हुए कहा कि यह केवल सनातन धर्म है, जिसने हर जाति और मजहब के लोगों को विपत्ति के समय शरण दी है।मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत तब तक भारत है जब तक यहां सनातन धर्म सुरक्षित है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस धर्म के संरक्षण और संवर्धन के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि युगों-युगों से सनातन धर्म ने सृष्टि के साथ तालमेल बनाकर खुद को जीवंत बनाए रखा है। उन्होंने कहा कि भविष्य में इसे किसी भी प्रकार की विकृतियों या विसंगतियों से बचाने के लिए हमें सतर्क रहना होगा। भारत तब तक भारत है जब तक भारत के अंदर सनातन धर्म सुरक्षित है। इसकी रक्षा के लिए इसके संरक्षण के लिए हम सभी को मिलकर के कार्य करना होगा। यह एक शाश्वत धर्म है, सृष्टि के साथ चला हुआ धर्म है हो सकता है कि किसी कालखंड में कुछ विसंगतिया आई हो लेकिन, विसंगती का परिमार्जन भी हमारे ऋषि मुनि संतो के माध्यम से समय-समय परमहापुरुषों के द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए हम करेंगे।

सनातन रक्षा यात्रा 2.0 अयोध्या पहुंची हुआ भव्य स्वागत

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। सनातन सांस्कृतिक संघ द्वारा 18 दिसंबर को झांसी से सनातन रक्षा यात्रा 2.0 का शुभारंभ किया गया, जिसे सनातनी भाइयों एवं बहनों ने बड़ी संख्या में एकत्रित होकर अपना अभूतपूर्व समर्थन दिया। सनातन सांस्कृतिक संघ की अध्यक्षा हरिप्रिया भार्गव के नेतृत्व में चलाए जा रहे इस जन आंदोलन का उद्देश्य भारत के सामने खड़ी सांस्कृतिक और धार्मिक चुनौतियों से निपटने के लिए समस्त सनातनियों को एकजुट करना है। यात्रा लखनऊ से निकलकर अयोध्या पहुंची। जहां यात्रा का हजारों लोगों ने स्वागत किया। अयोध्या में सभी लोगों के लिए सामूहिक मंत्रोच्चार और पूजा पाठ के साथ रामलला के दर्शन की व्यवस्था की गई है। रक्षा यात्रा के शुभारंभ के अवसर पर मौजूद पत्रकारों से बात करते हुए हरिप्रिया भार्गव ने बताया, इस रथ यात्रा में कम से कम ढाई तीन हजार लोग शामिल हैं। हम लगभग 50 बसों और 50 गाड़ियों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हमारे साथ बाइक पर भी लोग चल रहे हैं। सब लोग मिलकर एक साथ इस यात्रा को इस उद्देश्य के साथ निकाल रहे हैं कि बांग्लादेश में सनातनी भाई बहनों के साथ जो नरसंहार हो रहा है, वहाँ के सनातनी मंदिरों, जिनालय, गुरुद्वारों का जो विध्वंस किया जा रहा है, गौ माता की जो हत्या हो रही है, वो भी खुले आम, इस सबके खिलाफ हम सबको मिलकर आवाज उठानी है, और यही आवाज सरकार तक पहुँचाने के लिए हम यह रक्षा यात्रा निकाल रहे हैं। यात्रा के अगले कार्यक्रम के बारे में हरिप्रिया भार्गव ने बताया कि यह रक्षा यात्रा लखनऊ से निकलकर अयोध्या पहुंची।

जर्जर केबल में लगी आग

निचलौल (महराजगंज)। (अवधनामा संवाददाता) ठूठीबारी कस्बे के शान्ति नगर मुहल्ले में लगे 400 केवीए के ट्रांसफार्मर से सटे विद्युत केबल में आग लगने से ग्रामीणों में अफरा तफरी का माहौल पैदा हो गया। सूचना पर विद्युत विच्छेदन कर दिया गया। मौके पर पहुंचे लाइन मैन मनोज कुमार व अमर कुमार द्वारा ग्रामीणों को सही तथ्य से अवगत कराया गया। तब जाके लोगो ने राहत की सांस ली। कुछ देर बाद विद्युत कर्मियों ने जले हुए केबल को काटकर विद्युत व्यवस्था बहाल कर दी गई। इस बाबत रजनीश गौड ने बताया कि पहले से लगा हुआ केबल जर्जर हो गया। जल्द ही नया केबल लगा दिया जाएगा।

बगास लदी ट्राला पलटने से बुजुर्ग सहित दो भैसों की मौत

सिसवा बाजार(महराजगंज)। (अवधनामा संवाददाता) कोठीभार थानाक्षेत्र के वार्ड नं० 18 लक्ष्मीबाई नगर(लोहेपार) में शुक्रवार की सुबह लगभग 5ः00 बजे बगास लदी ट्राला व गन्ना लदी ट्राली आपस में ओवरटेक करने के चक्कर में बगास वाली ट्राली पलटने से रोड किनारे आग सेक रहे बुजुर्ग व दो भैंसे चपेट में आने से मौके पर ही दर्दनाक मृत्यु हो गयी।

लोहेपार में शुक्रवार की सुबह लगभग 5 बजे बगास की ट्राली पलटने से गाँव के कमल व इसलोकी की दो भैंसे उनसे नीचे दब गई। सूचना पर पहुँची कोठीभार पुलिस ने तत्काल जेसीबी बुलवा बगास हटाने का कार्य शुरू कर दिया लगभग आधे घण्टे के मशक्त के बाद कमल व दो भैसे को नीचे से निकाला गया तबतक उनकी मृत्यु हो चुकी थी। प्रभारी निरीक्षक अखिलेश सिंह ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई की जा रही हैं।

आग से एक एकड़ गन्ने की फसल जली

सिसवा बाजार (महराजगंज)। (अवधनामा संवाददाता) कोठीभार थाना क्षेत्र के ग्राम सभा हेवती में बीती रात को आग लगने की वजह से लगभग एक एकड़ गन्ने की फसल जल गयी। इस संबंध में किसान बृजेश मिश्र ने बताया कि बीती रात अचानक गन्ने में आग लग गई जिससे एक एकड़ गन्ने की फसल जल गया, जिससे लगभग एक लाख रुपए का नुकसान हो गया है पूछे जाने पर उन्होंने बताया की आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।

स्व. प्रभात सिंह की पुण्यतिथि पर विशाल कंबल वितरण और प्रतिभा सम्मान समारोह पांच को

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। जिले के पूरा ब्लॉक की मड़ना ग्रामसभा में गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आगामी पांच जनवरी को ÷विशाल कंबल वितरण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह÷ का आयोजन किया जाएगा।परंपरागत तरीके से होने वाला यह आयोजन इस बार भी स्व. प्रभात सिंह की पुण्यतिथि पर आयोजित होगा।इस विशाल कार्यक्रम में 20 हजार निराश्रितों, दिव्यांगो और जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क कंबल के साथ ही हाईस्कूल के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को साइकिलें वितरित की जाएगी।शुक्रवार को ब्लॉक से जुड़े सभी ग्राम सभा प्रधानों,क्षेत्र पंचायत सदस्यों तथा वरिष्ठ समाजसेवियों के साथ बैठक कर कार्यक्रम की रूपरेखा तय करने के बाद स्व. प्रभात सिंह के पुत्र जिला ब्लाक प्रमुख संघ अध्यक्ष व पूरा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि शिवेंद्र सिंह ने बताया कि उनके पिता स्व. सिंह द्वारा अपने जीवन काल में प्रतिवर्ष निराश्रितों, दिव्यांगो और जरूरतमंदों को निःशुल्क कंबल वितरित किया जाता रहा है।उन्हीं की प्रेरणा से इस आयोजन को जीवंत रखा जा रहा है।उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को सकुशल संपन्न कराने के उद्देश्य से आज ब्लॉक परिसर में ग्राम प्रधान और पंचायत सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई है श्री सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में इस बार रामनगरी के पूज्य संतों, महंतों,धर्माचार्यो,प्रदेश के कई मंत्रियों तथा विभिन्न जनपदों के जनप्रतिनिधियों के साथ ही दर्जनों की तादात में समाजसेवी शामिल होंगे।श्री सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था और व्यवधान न उत्पन्न हो इसके लिए वॉलिंटियर्स की टीम तैयार की गई है,जिन्हें पहले चरण में आमंत्रण पत्र वितरण तथा सूची तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।यह कार्य पूरा हो जाने के बाद उन्हें अगले चरण का दायित्व दिया जाएगा।

लालच देकर महिलाओं को शिकार बनाने वाले गिरोह का पुलिस ने किया भांडाफोड़

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। नोटो की गड्डी का लालच देकर ठगी व लूट की 4 घटनाओं का सफल अनावरण करते हुए महिलाओं को ठगी का शिकार बनाने वाले अन्तर्राज्यीय गिरोह का स्वाट, सर्विलांस व थाना कोतवाली नगर की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा भंडाफोड़ किया है। टीम ने दो महिलाओ समेत 05 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर 2 बाल अपचारियों को संरक्षण में लिया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से जेवरात व अन्य सामान बरामद किया गया है। मामले की जानकारी देते हुए बाराबंकी के अपर पुलिस अधीक्षक दक्षिणी डॉक्टर अखिलेश नारायण सिंह ने बताया कि एसपी के निर्देश पर जनपद में घटित टप्पेबाजी की घटनाओं के अनवारण व अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 20-12-2024 को स्वाट, सर्विलांस व थाना कोतवाली नगर की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा डिजिटल डेटा व मैनुअल इंटेलीजेंस

की मदद से दिल्ली प्रान्त के रहने वाले 05 शातिर ठगों गोपाल प्रजापति पुत्र छबिलाल प्रजापति, रतन लाल पुत्र हरीलाल, रौनक सोलंकी पुत्र रतन लाल, गंगा देवी पत्नी रतन लाल व आरती प्रजापति पत्नी गोपाल प्रजापति को गिरफ्तार किया गया एवं 02 बाल अपचारी को संरक्षण में लिया गया है। एएसपी श्री सिंह ने बताया कि अभियुक्तगण के कब्जे से जनपद में कारित की गई टप्पेबाजी की घटनाओं से सम्बन्धित जेवरात एवं इलेक्ट्रानिक तराजू, 05 अदद मोबाइल फोन आदि सामान बरामद किया गया है। पूछताछ एवं जांच से ज्ञात हुआ कि अभियुक्तगण का एक गिरोह है जिनके द्वारा जनपद बाराबंकी, लखनऊ, गाजीपुर एवं बिहार, मध्य प्रदेश आदि अन्य प्रान्तों में भी ठगी व लूट की घटनाएं कारित की गई हैं। एएसपी श्री सिंह ने बताया कि अभियुक्तगण द्वारा कम्बल या अन्य सामान बेंचने के बहाने रेकी कर मुख्यतः महिलाओं को चिन्हित किया जाता है, जिसके बाद गिरोह में सम्मिलित छोटे बच्चे को महिला के पास भेज दिया जाता है एवं एक अन्य सदस्य भी पीछे से वहीं पहुंच जाता है। पूर्व नियोजित योजनानुसार बच्चे द्वारा महिला से रोते हुए स्वयं के कई दिनों से भूखे होने एवं मालिक द्वारा पीटे जाने की बात कही जाती है। तभी वहां पूर्व से उपस्थित गिरोह के सदस्य द्वारा उसे कुछ खरीद कर खाने हेतु रूपये दिये जाते हैं किन्तु उस बच्चे द्वारा स्वयं के पास मालिक के यहां से बहुत रुपये चुरा लाने की बात कहते हुए नोटों की गड्डी दिखाई जाती है, गड्डी में ऊपर-नोचे 500 रूपये का नोट एवं बीच में नोट के साइज के कागज लगे होते हैं। गिरोह के अन्य सदस्य द्वारा महिला को कुछ जेवरात देकर उस बच्चे से नोटों की गड्डी ले लेने का लालच दिया जाता है तथा महिला उन लोगों के षडयंत्र में फंस कर अपने जेवरात दे देती हैं। एएसपी ने बताया कि अभियुक्तगण द्वारा एक अन्य योजना के तहत भी घटनाएं कारित की गई हैं जिसमें जेवरात पहने महिलाओं को जेवरातों की छिनैती हो जाने का भय दिखाकर जेवरातों को उतार कर सुरक्षित अपने पास रख लेने की बात कही जाती है। तत्पश्चात अभियुक्तगण द्वारा एक रुमाल महिला को दिया जाता है, जिसमें महिला द्वारा जेवरात उतार कर रख दिये जाते हैं तथा महिला की मदद करने के बहाने हाथ की सफाई से उसके जेवरात के रुमाल को एक अन्य रुमाल से बदल दिया जाता है, जिसमें कंकड़ रखे होते हैं।

सात आरोपियों पर हत्या का मुकदमा दर्ज
नौडियहवा के एक तालाब में महिला का मिला था शव

निचलौल (महराजगंज)। (अवधनामा संवाददाता) कोठीभार थानाक्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा बोदना के टोला नौडियहवा में बीते दिनों 18 दिसंबर को एक तालाब में महिला का उतराता शव के बाद शुक्रवार को पुलिस ने सात लोगों पर नामजद मुकदमा पंजीकृत कर लिया हैं। परिजनों ने तहरीर देकर महिला की हत्या का आरोप लगाया हैं। जानकारी के अनुसार मृतका पूनम साहनी के ससुर लालबहादुर ने कोतवाली में तहरीर दिया गया था। जिसमें गुमशुदगी दर्ज किया गया था। लेकिन 18 दिसंबर दिन बुधवार को गांव के बगल में ही पोखरें में उतराता शव मिलने के बाद परिजन हत्या का मुकदमा दर्ज करने के लिए अड़ गए। जिस पर एसडीएम व सीओ निचलौल के निर्देश पर मुकदमा पंजीकृत करने का आश्वासन मिलने पर परिजन मान गए और अंतिम संस्कार कर दिया था। उक्त मामले में कोतवाली पुलिस ने ग्राम प्रधान समेत सात लोगों के खिलाफ हरिश्चंद्र, रामभरोस, शिवकुमार, सोनू, ग्राम प्रधान कमलेश साहनी, दीपिका, बदामी, अज्ञात के विरुद्ध हत्या सहित संबंधित धारा में मुकदमा पंजीकृत कर दिया गया है। इस बाबत प्रभारी कोतवाल योगेंद्र कुमार ने बताया कि सातों आरोपितों पर केस दर्ज कर जांच पड़ताल किया जा रहा है।

32 बोरी मक्का और 29 बोरी चाइनीज लहसुन बरामद
पुलिस और एसएसबी की संयुक्त टीम ने पकड़ा

निचलौल (महराजगंज)। (अवधनामा संवाददाता) निचलौल थानाक्षेत्र के भारत नेपाल बार्डर पर शुक्रवार को पुलिस और एसएसबी की संयुक्त टीम मुखबिर की सूचना पर घेराबंदी कर 32 बोरी मक्का और 29 बोरी चाइनीज लहसुन बरामद की है। इसके साथ ही टीम ने सात साइकिल भी पकड़ा है। जबकि मक्का और चाइनीज लहसुन की तस्करी करने वाले आरोपी टीम को देखते ही मौके से भाग निकले। शीतलापुर पुलिस चौकी इंचार्ज उपनिरीक्षक ओमप्रकाश गुप्ता ने बताया कि उन्हें मुखबिर से सूचना मिली की कुछ लोग भारत नेपाल बार्डर के पिलर संख्या 501/6 के पास से गुजरी पगडंडी रास्ते पर नेपाल राष्ट्र से साइकिल की मदद से तस्करी कर मक्का और चाइनीज लहसुन की खेप को भारत लाने वाले है। उसके बाद उन्होंने सूचना को गंभीरता से लेते हुए एसएसबी को दी। फिर दोनों की संयुक्त टीम ने बार्डर की चिन्हित पगडंडी को घेराबंदी कर लिया। इसी बीच कुछ लोग साइकिल पर अवैध सामानों की खेप लेकर भारतीय सीमा क्षेत्र में घुसते दिखाई दिये जिन्हें पकड़ने का प्रयास किया गया। लेकिन वह लोग साइकिल पर अवैध सामान की खेप लदी छोड़ मौके से भाग निकले। वही टीम की ओर से मौके पर बरामद सामान की जांच पड़ताल की गई तो 32 बोरी मक्का और 29 बोरी चाइनीज लहसुन बरामद हुई। वही सात साइकिल को भी पकड़ा गया। मामले में बरामद तस्करी की मक्का और चाइनीज लहसुन को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ में सैकड़ो की संख्या में लोग हुए सम्मिलित

शाहजहांपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में आज गायत्री शक्तिपीठ ब्रम्हस्थली बंडा शाहजहांपुर के 38 वें वार्षिक उत्सव पर 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ पूर्णाहुति संपन्न हुई। प्रथम दिवस कलश यात्रा गायत्री शक्तिपीठ से भगवान इंद्र देव की तपस्थली सुनासीर नाथ से कलश में जल लेकर बंडा चौराहा होते हुए गायत्री शक्तिपीठ यज्ञ स्थल पहुंची। कलश पूजन के साथ आरती सम्पन्न हुई। द्वितीय दिवस 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं सायं दीपमहायज्ञ संपन्न हुआ। तृतीय दिवस 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ संस्कार पूर्णाहुति संपन्न हुई। कार्यक्रम में मंच से टोली नायक सत्यप्रकाश शुक्ला, गायक जगदीश प्रसाद, अभय सिंह एवं वादक लाखन ने प्रज्ञा गीतों से सभी को भाव विभोर कर दिया। जिला समन्वयक सूरज वर्मा एवं जिला सह समन्वयक सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव बाबूजी ने सभी से ज्योति कलश यात्रा के संदर्भ में गुरुधाम शांतिकुंज का संदेश सुनाया।

साप्ताहिक परेड में एसपी ने पुलिस लाइन का किया निरक्षण

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक द्वारा साप्ताहिक परेड की सलामी लेने के पश्चात परेड का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह द्वारा रिजर्व पुलिस लाइन्स स्थित परेड ग्राउण्ड में शुक्रवार की परेड की सलामी ली गई तत्पश्चात परेड में उपस्थित समस्त पुलिसकर्मियों का टर्न आउट चेक करते हुए अनुशासन व एकरूपता बनाए रखने हेतु ड्रिल की कार्यवाही कराई गयी। यूपी112 पीआरवी वाहनों का निरीक्षण कर सम्बन्धित को मानकों के अनुसार समस्त आवश्यक उपकरणों को अपने पास रखने व रिस्पांस टाइम को और बेहतर करने एवं आने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में वार्ता कर दिशा निर्देश दिये गये। तपश्चात पुलिस लाइन्स परिसर, मेस, बैरक, व्यायामशाला, सीपीसी कैण्टीन, शस्त्रागार, परिवहन शाखा, आवासीय परिसर आदि का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गये। आदेश कक्ष में विभिन्न रजिस्टरों एवं अभिलेखों को चेक कर अद्यावधिक रखने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया।

इस दौरान क्षेत्राधिकारी नगर सुमित त्रिपाठी, प्रतिसार निरीक्षक राजेश कुमार आदि अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

एक करोड़ की कीमत की मार्फिन के साथ एक तस्कर चढ़ा पुलिस के हत्थे

अवधनामा संवाददाता

जैदपुर बाराबंकी। थाना जैदपुर पुलिस टीम द्वारा एक किलो60 ग्राम अवैध मारफीन के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया गया। पुलिस द्वारा जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस टीम द्वारा मैनुअल एन्टेलीजेन्स के आधार पर 01 मादक पदार्थ तस्कर मो0 परवेज पुत्र मो0 मुसीर निवासी टिकरा उस्मां को जैदपुर-हरख मार्ग, टिकरा उस्मां मोड़ के

पास से 01 किलो 60 ग्राम अवैध मारफीन (अन्तर्राष्ट्रीय कीमत लगभग 1 करोड़ 06 लाख रूपये) के साथ गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के विरुद्ध थाना जैदपुर पर एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत किया गया। पूछताछ में ज्ञात हुआ कि गिरफ्तार अभियुक्त अपने अन्य साथी मिसबाहुर्रहमान उर्फ अज्जन पुत्र मो0 कलीम निवासी टिकरा मुर्तजा थाना जैदपुर जनपद बाराबंकी के साथ मिलकर अवैध मादक पदार्थ की तस्करी करता है। अभियुक्तगण द्वारा जनपद बाराबंकी व आस-पास के जनपदों में मादक पदार्थ की तस्करी की जाती है। वांछित अभियुक्त मिसबाहुर्रहमान उर्फ अज्जन की गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम का गठन किया गया है।

शौचालय निर्माण को लेकर दो पक्षो में चले डण्डे, एक घायल

सिद्धौर बाराबंकी। असंद्रा थाना क्षेत्र में शौचालय का निर्माण करवा रहे एक व्यक्ति पर गांव के ही कुछ लोगों ने लाठी डंडे से हमला कर दिया। घटना में उसे काफी चोटें आई हैं। गंभीर हालत में उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना थाना क्षेत्र के पूरे हिमांचल मजरे किथैया गांव की है।यहां के निवासी मान सिंह सुबह के समय अपने शौचालय का निर्माण करवा रहा है। इसी दौरान गांव के ही पृथ्वीराज अभयराज और उदयराज आदि लोगों ने रंजिशन उस पर हमला कर दिया। आरोप है कि लाठी डंडा से पिटाई कर लोहे की बसुली से सिर पर प्रहार कर दिया गया जिससे सिर में गंभीर चोट आई है। गंभीर हालत में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उपचार हो रहा है ।पीड़ित के पुत्र जीत बहादुर सिंह ने पुलिस को तहरीर दी है ।घटना के संबंध में इंस्पेक्टर असंद्रा जेपी सिंह का कहना है कि शिकायत की जांच की जा रही है।

जिला खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति की बैठक आयोजित

बाराबंकी। गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर स्थित लोकसभागार में जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार की अध्यक्षता में जिला खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि बास्केटबॉल और स्वीमिंग क्लब की अलग-अलग समितियां बना ली जाए। ये समितियां मेंबरशिप के रूप में उपयुक्त धनराशि खिलाड़ियों से जमा कराएंगी और उसी पैसे से खेल की गतिविधियां और प्रशिक्षको के मानदेय की व्यवस्था की जाए। स्टेडियम में शौकिया खेलने वाले या टहलने वाले लोगों के स्टेडियम मेम्बरशिप कम जिम, स्टेडियम मेंबरशिप कम बैडमिंटन, स्टेडियम मेंबरशिप कम बॉक्सिंग इस तरह से कार्ड बनाकर उनसे भी न्यूनतम धनराशि ली जाए।

पीसीएस परीक्षार्थियों से ओवर रेंटिंग करने पर होगी कड़ी कार्रवाईर : डीएम

अवधनामा संवाददाता

शाहजहांपुर। जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में जनपद में 22 दिसंबर को 16 केंद्रों पर आयोजित होने वाली राज्य/प्रवर

अधीनस्थ सेवा (प्रा.) परीक्षा-2024 (पीसीएस) परीक्षा की तैयारियों के संबध में बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो यह सुनिश्चित किया जाए। जनपद में 16 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं जिसमें 6816 अभ्यर्थी शामिल होंगे। प्रथम पाली का समय प्रातः 9:30 बजे से 11:30 बजे तक एवं द्वितीय पाली का समय अपराह्न 2:30 बजे से 4:30 बजे तक आयोजित होगी।

उन्होंने कहा कि परीक्षार्थी जनपद में 21 दिसंबर को ही आना प्रारंभ हो जाएंगे उनके रहने साहित अन्य सभी आवश्यक तैयारियां समय से पूर्ण करली जाए। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि रेस्टोरेंट, होटल, धर्मशाला आदि स्थानों पर खाने-पीने एवं रहने की दरें चस्पा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रेस्टोरेंट, होटल, धर्मशाला के स्वामियों द्वारा निर्धारित दरों से अधिक ओवर रेटिंग करने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेशन सहित अन्य आवश्यक स्थान पर रैन बसेरा आलाव आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। रेन बसेरो में पर्याप्त रजाई गद्दे उपलब्ध रहे। रेलवे एवं बस स्टेशनों पर किराया सूची लगाई जाए जिससे परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्रों तक आने-जाने में निर्धारित किराया से अधिक न देना पड़े। उन्होंने कहा कि आलाव परीक्षाकेन्द्रों के अंदर एवं बाहर सहित सभी सार्वजनिक स्थलों पर जलते रहे। लड़की एवं लड़कों के रुकने की अलग-अलग व्यवस्था की जाए इस जानकारी हेतु बैनर एवं फ्लेक्सी जगह लगवाई जाए। सभी व्यवस्थाओं के निरीक्षण के लिए अधिकारियों की रात्रि में ड्यूटी लगाए जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने अपर नगर आयुक्त को निर्देश दिए कि 22 दिसंबर को प्रातः 6 बजे से ही ई-बसों का संचालन प्रारंभ कराना सुनिश्चित करें। परीक्षार्थियों हेतु प्रथम पाली में परीक्षा केंद्रों में प्रातः 8 बजे से 8ः45 बजे तक और द्वितीय पाली हेतु अपराह्न 1 से 1:45 के मध्य ही प्रवेश अनुमन्य होगा। इसके उपरांत किसी भी दशा में परीक्षा केन्द्रों में अभ्यर्थियों का प्रवेश वर्जित होगा। अभ्यर्थियों द्वारा ओ.एम.आर. पर केवल काले बॉल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त किसी अन्य कलर की कोई अन्य पेन वर्जित है।

हाइटेंशन तार शिफ्टिंग को लेकर ग्रामीणों ने जताया विरोध

अवधनामा संवाददाता

निचलौल (महराजगंज)। ठूठीबारी कस्बे के शांतिनगर मुहल्ले के आबादी क्षेत्र से नई लाइन शिफ्टिंग को लेकर पहुंचे एसडीओ निचलौल सहित विद्युत विभाग की टीम को ग्रामीणों का भारी विरोध का सामना करना पड़ा। मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने शिफ्टिंग कार्य को तत्काल रुकवा दिया। जिसके बाद ग्रामीणों का गुस्सा शांत हुआ। ग्राम प्रधान अजय कुमार सहित ग्रामीण शकीला, हुस्ना खान, संपाती साहनी, संदीप कसेरा, जय निगम, सुरेंद्र द्विवेदी, गुड्डू मिर्जा, कन्हैया प्रसाद, निजामुद्दीन, रतन कसेरा, रहीम, महेश कुमार, गोपी चंद, विवेक कुमार, प्रकाश, वीरेंद्र आदि लोगो ने बताया करीब 30, 35 वर्षो से संचालित 11 हजार वोल्ट के हाइटेंशन तार को हटाया जा रहा है। जबकि इस रास्ते से प्रति दिन सैकड़ों माल वाहक वाहन सहित हजारों लोगों का आवागमन होता है। ग्रामीणों मांग किया है कि हाइटेंशन तार को पहले की तरह रखा जाय। किसी भी सूरत में नई लाइन का कार्य नहीं होने दिया जाएगा। भारी हंगामा के दौरान जाम की स्थिति बन गया गया। इस बाबत विद्युत एसडीओ आशीष विष्ट ने बताया कि नई लाइन लगाने पर ग्रामीणों में काफी विरोध जिससे काम रोक दिया गया है। समाधान होने के बाद कार्य होगा। उच्च अधिकारियों को अवगत करा दिया गया है।

दिव्यांग शौचालय की प्रगति पर जिलाधिकारी ने जताई नाराजगी

अवधनामा संवाददाता

महराजगंज। कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार को जिलाधिकारी अनुनय झा की अध्यक्षता में जिला शिक्षा एवं अनुश्रवण समिति की बैठक हुई। जिसमें वनग्राम के जिन विद्यालयों में शौचालय में रनिंग वाटर नही है वहा पर पूर्ण कराने का निर्देश दिया गया। वही दिव्यांग शौचालय की प्रगति रिपोर्ट पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी जताई हैं।

जिलाधिकारी ने दिव्यांग शौचालय की प्रगति पर कड़ी नाराजगी व्यक्त किया गया सभी खण्ड शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि खण्ड विकास अधिकारी से समन्वय स्थापित कर इस 01 माह पूर्ण कराये।कायाकल्प में विकास खण्ड सिसवां में प्रगति न होने तथा समुचित उत्तर न देने के कारण खण्ड शिक्षा अधिकारी सिसवां के विगत 03 माह के कार्यो के परफारमेंस के आधार पर चार्जसीट तैयार प्रस्तुत

करने हेतु निर्देशित किया गया। नवीन नगर पंचायत तथा विस्तारित नगर क्षेत्र के विद्यालयों को पोर्टल पर अपडेट कराने हेतु निर्देशित किया गया। निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत स्पाट एसेसमेन्ट में माह-अक्टूबर 2024 के अपेक्षा नवम्बर में संतोषजनक प्रगति पायी गयी। विकास खण्ड पनियरा व बृजमनगंज के खण्ड शिक्षा अधिकारी को निपुण परफारमेंस में और सुधार हेतु निर्देशित किया गया। विकास खण्ड सिसवां के एआरपी अरविन्द जायसवाल को चेतावनी देने हेतु निर्देशित किया गया।

शिक्षा एवं अनुशासन ही समाज बेहतर बनाता है : संजय शुक्ल

अवधनामा संवाददाता

बांसी सिद्धार्थनगर। शिक्षा एवं अनुशासन ही समाज को बेहतर बनाता है शिक्षक ,अभिभावक को निरंतर इस पर प्रयास करना चाहिए जिससे आने वाले पीढ़ी को नई दिशा दिया जा सके।

उक्त बातें बातौर मुख्य अतिथि सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक मंडल बस्ती संजय शुक्ल ने व्यक्त किया वह तहसील क्षेत्र के पीएम श्री कम्पोजिट विद्यालय कटबंध विकास क्षेत्र मिठवल में दो दिवसीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का समापन अवसर पर शुक्रवार अपराह्न उपस्थित शिक्षक अभिभावक व बच्चों को संबोधित कर रहे थे विशिष्ट अतिथि जिला बेसिक शिक्षा आधिकारी देवेंद्र कुमार पांडे ने कहा कि बच्चों में प्रतिभा की कमी नहीं है बेसिक शिक्षा और पीएम श्री विद्यालय से मिलने वाली शिक्षा व अन्य लाभ को क्षेत्र के बच्चे अर्जित करें जिससे सुनहरे भविष्य का निर्माण हो मेजबानी कर रहे खण्ड शिक्षा अधिकारी मिठवल रामकुमार सिंह ने कहा की बच्चों की जितनी सराहना किया जाए कम है शिक्षक निरंतर उन्नत का प्रयास करें और ठहराव पर विशेष ध्यान दें कार्यक्रम को अध्यक्ष जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ के अध्यक्ष रमेश चंद्र मिश्रा ने कहा कि यहां के शिक्षक ने जो बच्चों को शिक्षा और संस्कार दिया है इसकी जितनी भी सराहना की जाए कम है उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन भी किया प्राथमिक शिक्षक संघ के, खेसरह खेसरहा और खुनियाँव उपस्थित रहे।

उक्त कार्यक्रम को ब्लॉक अध्यक्ष संजय कनौजिया विशिष्ट अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी बांसी नीरज कुमार सिंह खण्ड शिक्षा अधिकारी खुनियाँव ने भी संबोधित कर बच्चों के नामाकंन ठहराव एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर जोर देते हुए अध्यापकों एवं अभिभावकों को निरन्तर प्रयासरत रहने का सुझाव दिया इस दौरान बच्चों ने अपने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम से लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्रधानाध्यापिका जया ने सभी का आभार व्यक्त किया ग्रा मो. युसुफ अन्सारी, कार्यक्रम का संचालन सुरेन्द्र नाथ मिश्र एवं धनन्जय मिश्र ने संयुक्त रूप से किया। उक्त अवसर पर शिक्षक अनु सेठ, बीनासिंह, मधुर श्याम त्रिपाठी, प्रवीण कुमार सिंह, लाल चन्द चौधरी, अशोक कुमार, सविता यादव, नीलम, जितेन्द्र त्रिपाठी, राजीव रतन पाण्डेय, संतोष पाण्डेय, संध्या मिश्रा आदि शिक्षक अभिभावक उपस्थित रहे।

- कटबन्ध में वार्षिक उत्सव के समापन के अवसर पर बच्चों ने किया रंगारंग कार्यक्रम

बीआरसी नौगढ़ में शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। बच्चों में भाषा, गणित, विज्ञान एवं पर्यावरण सहित कला, साहित्य एवं मानवीय मूल्यों की बेहतर समझ विकसित करने के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण अत्यंत सहायक होता है। उक्त बातें डायट के प्रवक्ता मोहम्मद यूनुस ने कही। वह शुक्रवार को ब्लॉक संसाधन केंद्र नौगढ़ में ह्यूमाना पीपुल टू पीपुल इंडिया तथा डायट सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि शिक्षक बच्चों के अधिगम स्तर के अनुरूप विभिन्न रोचक एवं बाल केंद्रित गतिविधियों के प्रयोग से अपने शिक्षण को सरस, सरल एवं प्रभावी बना सकते हैं। ह्यूमाना के प्रोजेक्ट लीडर जैनेन्द्र कुमार ने चयनित विद्यालयों में संस्था द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी देते हुए प्रतिभागी शिक्षकों को गुणवत्तायुक्त शैक्षिक वातावरण सृजन के लिए अभिप्रेरित किया। मुख्य प्रशिक्षक सिद्धार्थ त्रिवेदी ने पियर लर्निंग, वैज्ञानिक गतिविधियों तथा संस्था द्वारा विकसित लर्निंग किट के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में एसआरजी अंशुमान सिंह, अपूर्व श्रीवास्तव, राजेन्द्र शर्मा, नीरज, नियाज़ अहमद, आलोक आनंद, शैलेष श्रीवास्तव, रीता चौधरी, विजया रानी, किरन उपाध्याय, वंदना यादव, सत्येंद्र गुप्ता, राजेश कुमार, रमेश कुमार, मदनलाल जायसवाल आदि की उपस्थिति रही।

दरगाह चौक हल्लौर पर फॉर्मर रजिस्ट्री का कैम्प

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। तहसील क्षेत्र के हल्लौर दरगाह पर फॉर्मर रजिस्ट्री हेतु कृषि विभाग और राजस्व विभाग द्वारा कैम्प का आयोजन किया गया। कृषि विभाग के तकनीकि सहायक रविन्द्र कुमार द्वारा किसानो से रजिस्ट्री कराने हेतु अपील की उन्होने कहा किसान आधारकार्ड, आधार सीडेड मोबाईल, खतौनी की आवश्यकता होगी किसान मेरे पास आकर अथवा agristack.gov.in या मोबाईल एप FARMER REGISTRY UP के माध्यम से रजिस्ट्रेशन करा सकते है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा सभी किसानों का फार्मर रजिस्ट्री अनिवार्य कर दिया है जो किसान समय से फार्मर रजिस्ट्री नहीं करा पाएंगे उनकी प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की अगली किश्त रोक दी जाएगी। क्षेत्रीय लेखपाल देवेन्द्र कुमार राठौर द्वारा कहा गया कि भविष्य मे केसीसी बनवाने, खाद बीज, प्राकतिक आपदा व अन्य योजनाओं के लाभ लेने के लिए फॉर्मर रजिस्ट्री अनिवार्य होगी। इस मौके पर प्रधान प्रतिनिधि राशिद ताक़ीब कप्तान, असकरी शमीम, खुर्शीद अहमद, आफताब हैदर, मोहम्मद हैदर, जाकिर रजा, सैय्यद अम्बर, वजीउल हसन, मोजिज़ सहित तमाम किसान उपस्थित रहें।

प्रधान की अध्यक्षता में महदेइया व सपही में चौपाल का आयोजन कर ग्रामीणों की सुनी गई समस्या

लोटन सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। गांव की समस्या गांव मे समाधान के तहत विकास खण्ड लोटन बाजार के ग्राम पंचायत महदेइया व ग्राम पंचायत सपही में शुक्रवार को ग्राम पंचायत मे चौपाल का आयोजन खण्ड विकास अधिकारी ओमप्रकाश गुप्ता के नेतृत्व में व ग्राम प्रधान की अध्यक्षता मे किया गया ताकी लोगो को योजनाओं की जानकारी देकर ग्राम पंचायत मे विकास को गति मिल सके। सचिव ने ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और सरकार की योजनाओं और किसान सम्मान निधि, वृद्धा विधवा पेंशन शौचालय आवास योजना के बारे जानकारी दी। खण्ड विकास अधिकारी ओमप्रकाश गुप्ता ने मौजूद लोगों को सरकार की तरफ से संचालित योजनाओं एवं मिलने वाले लाभ के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान सचिव रविन्द्र कुमार जाटव, महदेइया ग्राम प्रधान किरन कन्नौजिया, प्रधान प्रतिनिधि मनोज कुमार, रोजगार सेवक दिनेश कुमार चौरसिया, सोनू सिंह, पंचायत सहायक अजय कुमार, सपही सचिव दिलीप पटेल, ग्राम प्रधान रत्नेश शुक्ला, अंशु शुक्ला, एडीओ एजी राम कृष्ण मिश्रा, प्रदीप कुमार,पुनवासी सहित तमाम ग्रामीण मौजूद रहे।

समय से गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य पूरा करे कार्यदायी संस्था : जयेंद्र कुमार

- भनवापुर क्षेत्र के मनरेगा पार्क अमौली एकडेंगा, मिनी स्टेडियम व पंचायत भवन सिकटा का सीडीओ ने किया निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर। भनवापुर ब्लाक क्षेत्र के अमौली एकडेंगा में बन रहे मनरेगा पार्क, सिकटा मे निर्माणाधीन पंचायत भवन व मिनी स्टेडियम का शुक्रवार को सीडीओ जयेंद्र कुमार ने निरीक्षण किया। इस दौरान संबंधित कार्यदायी संस्था को गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कार्य समय से पूरा करने का निर्देश दिया। दोपहर करीब साढ़े बारह बजे भनवापुर के अमौली एकडेंगा में करीब साठ लाख के लागत से बन रहे मनरेगा पार्क स्थल पर पंहुचे सीडीओ जयेंद्र कुमार ने निर्माण कार्य का निरीक्षण किया।मौके पर उपस्थित खंड विकास अधिकारी आलोक दत्त उपाध्याय को निर्माण के दौरान समय समय पर जांच करने का निर्देश दिया।उसके बाद सिकटा में निर्माणाधीन करीब साठ लाख की लागत से मिनी स्टेडियम व करीब चौबीस लाख की लागत से बन रहे पंचायत भवन का भी निरीक्षण किया।मौके पर उपस्थित पंचायत सचिव, प्रधान को गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कराए जाने का निर्देशित किया।मिनी स्टेडियम के निर्माण कार्य को समय से पूरा करने का निर्देश देते हुए संबंधित कार्यदायी संस्था को मानक में कमी मिलने पर कार्रवाई की चेतावनी दी।

सीएलएफ सेंटर से महिला सशक्तिकरण के साथ आर्थिक विकास को मिलेगा बढ़ावा

डुमरियागंज तहसील अन्तर्गत भनवापुर ब्लाक क्षेत्र के बुढ़ऊ में सीएलएफ (कलस्टर लेवल फेडरेशन) कार्यालय का शुक्रवार को सीडीओ जयेंद्र कुमार ने फीता काटकर शुभारंभ किया। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी जयेंद्र कुमार ने कहा कि इस सेंटर से ग्रामीण क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के साथ ही आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। स्वयं सहायता समूहों के प्रबंधन,समूह के सदस्यों को नियमित बचत और ऋण योजनाओं की जानकारी कर उसका लाभ एक ही छत के नीचे मिल जाएगा। इस दौरान बीडीओ आलोक दत्त उपाध्याय, एडीओ आईएसबी गोविंद माधव त्रिपाठी, अब्दुल क्यूम, केसी. यादव, नंदलाल, लोकेश आदि उपस्थित रहे।

आयुष्मान भारत योजना से जुड़ा एक और अस्पताल सिद्धार्थ नेत्रालय में अब होगा फ्री में इलाज व ऑपरेशन

अवधनामा संवाददाता

बढ़नी सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत बढ़नी स्थित सिद्धार्थ नेत्रालय आँख का अस्पताल में अब आयुष्मान भारत योजना के तहत मरीजों को मुफ्त इलाज और ऑपरेशन की सुविधा मिलेगी। यह पहल गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए एक बड़ी राहत साबित होगी, जो इलाज का खर्च उठाने में असमर्थ होते हैं।

आँख का अस्पताल सिद्धार्थ नेत्रालय, आयुष्मान भारत योजना के तहत सिद्धार्थ नेत्रालय में आँखों से सम्बंधित हर प्रकार के जांच, चश्मे और आप्रेशन आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। आयुष्मान भारत योजना के तहत पांच लाख रुपये तक का फ्री इलाज सामान्य बीमारियों से लेकर गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का मुफ्त इलाज होता है ,मरीजों को किसी भी प्रकार का बिल नहीं चुकाना होगा, सब कुछ योजना के तहत कवर किया जाएगा। आधुनिक उपकरणों और विशेषज्ञ डॉक्टरों की सुविधा से मरीजों को उच्च स्तरीय सेवाएं प्राप्त होंगी। इस योजना का लाभ उठाने के लिए, मरीजों को अपना आयुष्मान कार्ड साथ लाना होगा और रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। यह कदम स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाने की दिशा में एक अहम प्रयास है।आँखों के मशहूर डॉ. नदीम अहमद (सर्जन) ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग के मानकों के आधार पर हमारे हॉस्पिटल को आयुष्मान भारत योजना के तहत जोड़ा गया है इसी दिसम्बर माह में सुविधा शुरू हुई है। इस सुविधा के शुरु होने से अब तक दर्जनों लोगों ने अपना इलाज व आप्रेशन करवाया है। स्वास्थ्य विभाग के इस पहल से क्षेत्र के जरूरतमंद गरीबों को निःशुल्क इलाज उनके निकटतम कस्बे में उपलब्ध होने से लोगों में खुशी व्याप्त है आपको बताते चलें कि अस्पताल अत्याधुनिक मेडिकल तकनीकों और उपकरणों से लैंस है,जो सटीक और प्रभावी इलाज सुनिश्चित करते हैं। यहां का मेडिकल स्टाफ, नर्सिंग टीम, और अन्य सहायक कर्मचारी पूरी तरह प्रशिक्षित और अनुभवी हैं। अपने बेहतर सेवा भाव से मरीजों को परिवार जैसा माहौल प्रदान करते हैं। मरीजों की संतुष्टि हॉस्पिटल की सर्वोच्च प्राथमिकता है। हर मरीज की समस्या को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और समझा जाता है और इलाज के हर समय उन्हें पूरा सहयोग दिया जाता है।

डीएम से मिला राजस्व निरीक्षक संघ का प्रतिनिधिमंडल

सिद्धार्थनगर अवधनामा संवाददाता। बारह सूत्रीय मांगों को लेकर राजस्व निरीक्षक संघ का प्रतिनिधि मण्डल शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी डॉ राजा गणपति आर से मिलकर मांगो के निस्तारण की मांग की। प्रमुख मांगो में एलआरसी पद पर राजस्व निरीक्षक संबर्ग से नियुक्त किये जाने, निलंबित राजस्व निरीक्षक की बहाली किये जाने, रबी क्रॉप सर्वे का मानदेय दिए जाने, पारस्परिक स्थानांतरण किये जाने, तहसील में राजस्व निरीक्षक के बैठने की उचित व्यवस्था किये जाने, अवकाश के दिन सरकारी कार्य से मुक्त रखने, अवैध अतिक्रमण हटाने में मजिस्ट्रेट की उपस्थिति, राजस्व निरीक्षक को तहसील में सरकारी आवास उपलब्ध कराने आदि मांग शामिल है। जिलाधिकारी ने सभी मांगो पर एक एक बिन्दु पर चर्चा की उसको पूरा करने का आश्वासन दिए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी उमाशंकर सिंह, राजस्व निरीक्षक संघ के कार्यवाहक जिलाध्यक्ष प्रमोद श्रीवास्तव, जिला मन्त्री दीलीप चौरसिया, अरुण श्रीवास्तव, गणेश दत्त त्रिपाठी, रामकरन गुप्ता, सुधीर श्रीवास्तव, देवानन्द, अशोक श्रीवास्तव, अर्जुन यादव, शीतल द्विवेदी, सुभाष मौर्या आदि राजस्व निरीक्षक उपस्थित रहे।

उर्वरकों के घरेलू उत्पादन, उनकी उपलब्धता पर सांसद ने किया सवाल

घरेलू उर्वरक उत्पादन और आपूर्ति में बढ़ोतरी के लिए उठाए गए हैं ठोस कदम : मंत्री

अवधनामा संवाददाता

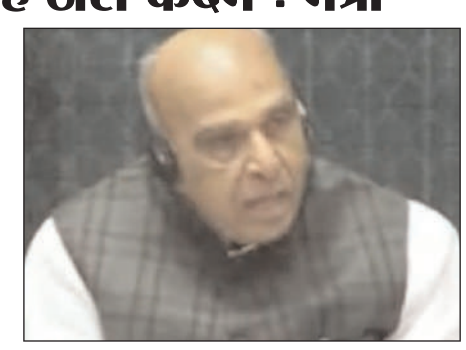

सिद्धार्थनगर। सांसद जगदंबिका पाल ने उर्वरकों के घरेलू उत्पादन, उनकी उपलब्धता और किसानों को किफायती दामों पर उपलब्ध कराने से संबंधित प्रश्न उठाया। इसके उत्तर में रसायन और उर्वरक मंत्री ने बताया कि सरकार ने नई निवेश नीति (2012) और नई यूरिया नीति (2015) के माध्यम से उर्वरक उत्पादन में वृद्धि के लिए ठोस कदम उठाए हैं। छह नई यूरिया इकाइयों की स्थापना से उत्पादन क्षमता 76.2 लाख मीट्रिक टन प्रति वर्ष बढ़ाई गई है। इसके अतिरिक्त, फॉस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना लागू की गई है, जिससे किसानों को रियायती दरों पर उर्वरक मिलते हैं। यूरिया 45 किलो बैग के लिए 242 की अधिकतम खुदरा कीमत पर उपलब्ध कराया जाता है, और अंतरराष्ट्रीय कीमतों में उतार-चढ़ाव के बावजूद सरकार किसानों पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ नहीं पड़ने देती। मंत्री ने यह भी बताया कि पालघर जिले में पिछले तीन वर्षों में उर्वरक उत्पादन नहीं हुआ, लेकिन किसानों की मांग को पूरा करने के लिए 2021-22, 2022-23 और 2023-24 में क्रमशः 24,690 मीट्रिक टन, 19,980 मीट्रिक टन और 22,890 मीट्रिक टन उर्वरकों की आपूर्ति सुनिश्चित की गई। उर्वरकों की आपूर्ति श्रृंखला को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है, और राज्य सरकारों के साथ समन्वय कर समय पर वितरण सुनिश्चित किया जाता है। इन प्रयासों के माध्यम से सरकार ने कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने, किसानों की समस्याओं को हल करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है।

गाँव की समस्या गाँव में समाधान के तहत बगुलहवा में लगा चौपाल

अवधनामा संवाददाता

शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर। विकास खण्ड शोहरतगढ़ अन्तर्गत ग्राम पंचायत बगुलहवा में शुक्रवार को गाँव की समस्या गाँव में समाधान करने हेतु ग्राम चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये ग्राम सचिव लालचंद चौधरी ने केन्द्र और प्रदेश सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। चौपाल कार्यक्रम में मुख्य रूप से राशनकार्ड, वृद्धावस्था, विधवा पेंशन व दिव्यांग पेंशन, आयुष्मान कार्ड, पीएम आवास योजना, मनरेगा योजना, किसान सम्मान निधि, व्यक्तिगत शौचालय विविध योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। साथ ही शासन द्वारा चलायी जा रही गरीब कल्याण व अन्य लाभकारी योजनाओं के बारें में जानकारी देते हुए लोगों को स्वच्छता के प्रति भी जागरूक किया। चौपाल में ग्राम पंचायत अधिकारी लालचंद चौधरी, ग्राम प्रधान सद्दाम हुसैन, हेड मास्टर विनोद कुमार सिंह, सफाई कर्मचारी इंदल चौधरी, रोजगार सेवक घनश्याम यादव, अल्ताफ अली, जमील अहमद, शान्ति देवी, चौकीदार अशगर अली, विन्द्रावती, अकाली, एलियश, गया गुप्ता, काशीराम आदि ग्रामीण उपस्थित रहें।

सीएमओ को ज्ञापन सौंप कर चरणबद्ध तरीके से आंदोलन का बजाया बिगुल

- 22 से 25 दिसंबर तक क्षेत्रीय सांसद, विधायकों को मांगपत्र सौंपेगा एसोसिएशन

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। संवर्ग से जुड़ी समस्याओं के समाधान को लेकर उत्तर प्रदेश डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के शीर्ष नेतृत्व ने चरणबद्ध तरीके से आंदोलन करने की घोषणा की है। प्रथम चरण में शुक्रवार को मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय पर धरना दिया।

इस दौरान मांगों के समर्थन में जमकर नारेबाजी की। बाद में सीएम के नाम संबोधित ज्ञापन सीएमओ डॉ. रजत कुमार चौरसिया को सौंप कर चरणबद्ध तरीके से आंदोलन का बजाया बिगुल बजाया। इसके बाद 22 से 25 दिसंबर तक क्षेत्रीय सांसद, विधायकों को मांगपत्र सौंपने का कार्य किया जाएगा। मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय पर प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. वाईपी यादव की अध्यक्षता में आयोजित धरने में वक्ताओं ने बताया कि शीर्ष नेतृत्व के आह्वान पर चरणबद्ध आंदोलन में संवर्ग के साथियों से जुड़ी 22 बिंदुओं से संबंधित मांगों के समाधान का मुद्दा है। जिला मंत्री डॉ. गोविंद प्रसाद ओझा ने बताया कि 22 से 25 दिसंबर तक सांसद, विधायक से मुलाकात, तीन जनवरी 2025 को मंडल मुख्यालय पर एडी कार्यालय पर धरना, 31 जनवरी को लखनऊ में महानिदेशालय कार्यालय पर धरना प्रस्तावित है। जिला मंत्री ने संवर्ग के अधिकाधिक साथियों से चरणबद्ध आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने की अपेक्षा की है। अंत में सीएम के नाम का ज्ञापन सीएमओ डॉ. रजत कुमार चौरसिया को सौंपा गया। मांगों में प्रमुख रूप से राजपत्रित पद पर कार्यरत होने के कारण ग्रेड पे 4600 का स्थापन्न वेतनमान प्रदान करने, एलोपैथिक चिकित्सकों की अनुपस्थिति में प्रदान किए जाने वाले प्रभार भत्ता 750 रुपये देने, प्रस्ताव के मुताबिक फार्मासिस्ट का ना फार्मेसी अधिकारी करने, पीएचसी पर दो, सीएचसी पर तीन फार्मासिस्ट, दो चीफ फार्मासिस्ट का पद सृहन करने, मेडिकल कॉलेज में परिवर्तित हुए जिला चिकित्सालयों से पद समेत फार्मासिस्टों को कार्यमुक्त करने, विशेष कार्याधिकारी फार्मेसी एवं संयुक्त निदेशक फार्मेसी के रिक्त पद पर पदोन्नति जैसे अन्य बिंदु शामिल है। इस मौके पर बृजेश कुमार पांडेय, नागेश पांडेय, त्रिलोकी नाथ त्रिपाठी, अमित त्रिपाठी, घनश्याम प्रसाद गुप्ता, रमेश चंद्र चतुर्वेदी, राघवेंद्र शुक्ला, महेंद्र मिश्रा, पंकज शुक्ला, रतन शंकर चौधरी, राकेश कर पाठक, सोमनाथ पांडेय, अखिलेश मिश्रा, सुग्रीव चौधरी, शमसुल हक खान, परमात्मा प्रसाद, रमेश मिश्रा, विजय पासवान, अवधेश यादव, वाईके द्विवेदी, शिवाकांत पांडेय, रामभक्त वर्मा, मनोज कुमार मिश्रा, जितेंद्र त्रिपाठी, अनिल श्रीवास्तव, सुरेंद्र जाटव, दान बहादुर राय, आलोक गुप्ता, ओमप्रकाश श्रीवास्तव, दिनेश मिश्रा, देवी प्रसाद, पृथ्वी राज आदि लोग उपस्थित रहे।

जिला परियोजना अधिकारी ने किया नपं के एमआरएफ सेंटर, कान्हा गौशाला का निरीक्षण

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर। जिला गंगा समिति के अध्यक्ष जिलाधिकारी डा. राजा गणपति आर के निर्देशानुसार जिला गंगा समिति के जिला परियोजना अधिकारी पंकज त्रिपाठी द्वारा अपनी टीम के साथ नगर पंचायत डुमरियागंज स्थित एमआरएफ सेंटर, कान्हा गौशाला का निरीक्षण किया गया। जिला परियोजना अधिकारी ने एमआरएफ सेंटर का निरीक्षण करते हुए आवश्यक निर्देश दिए। कान्हा गौशाला के निरीक्षण में व्यवस्था ठीक पायी गई तथा संबंधित कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए गए। इस दौरान ठोक अपशिष्ट को लेकर नगर स्थित होटल एवं प्रतिष्ठानों का भी जांच की गई और जरूरी निर्देश दिए गए। नगर पंचायत बल्क वेस्ट जनरेटर का भी निरीक्षण करते हुए आवश्यक निर्देश दिए गए। जिला परियोजना अधिकारी द्वारा विभिन्न बिंदुओं पर जांच की गई और जरूरी निर्देश दिए गए हैं। होटल एवं प्रतिष्ठानों में भी ठोस अपशिष्ट को लेकर जरूरी व्यवस्था करने हेतु संबंधित को निर्देशित किया गया।

आंबेडकर विवाद : इटवा तक पहुंची आंच

नेता विरोधी दल माता पांडे के कार्यालय पर जुटे कार्यकर्ता

- कार्यकर्ताओं ने काली पट्टी बांध जताया विरोध

निहाल चौधरी

इटवा सिद्धार्थनगर। राज्यसभा में बाबा साहब भीमराव आंबेडकर और कांग्रेस पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की टिप्पणी के विरोध में नेता विरोध दल माता प्रसाद पांडे के सपा कार्यालय पर काली पट्टी बांध नारेबाजी कर कार्यकर्ताओं ने बाबा साहब का अपमान नहीं सहेंगे। समाजवादी पार्टी जिंदाबाद अखिलेश यादव जिंदाबाद व अमित शाह के इस्तीफे की मांग की। शुक्रवार को समाजवादी पार्टी कार्यालय इटवा पर संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के खिलाफ देश के गृह मंत्री द्वारा विवादित बयान दिए जाने पर काला पट्टी बांध कर और नारेबाजी करके उनके इस्तीफा देने और देश से माफी मांगने को लेकर विरोध प्रकट किया गया। इस अवसर पर प्रदेश सचिव बेचई यादव, विधानसभा अध्यक्ष बबलू खान, महासचिव अब्दुल लतीफ, जिला उपाध्यक्ष कमाल अहमद, जिला उपाध्यक्ष देवेंद्र प्रताप सिंह, विधानसभा उपाध्यक्ष बबलू पाठक, सेक्टर प्रभारी दिनेश मिश्रा, विधानसभा अध्यक्ष यूथ ब्रिगेड नूर आलम, ब्लॉक अध्यक्ष इटवा सुनील यादव, अल्पसंख्यक जिला महासचिव करम हुसैन, महेंद्र यादव, राजीव श्रीवास्तव, अमरुल्लाह, सरोज राइनी, मो कलाम, अख्तर राइनी, पाले मिश्रा, रशीद अहमद, इसरार राइनी आदि मौजूद रहे।

‘अंबेडकर’ एक सियासी फैशन

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में बयान दे दिया कि अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर कहना अब एक राजनीतिक फैशन बन गया है। इस बयान से कुछ हद तक हम भी इत्तफाक रखते हैं, लेकिन गृहमंत्री ने यह भी कहा कि यदि इतनी बार भगवान का नाम लिया होता, तो सात जन्मों के लिए स्वर्ग ही मिल जाता।’ बेशक बाद का कथन आपत्तिजनक है। संसद में ऐसे कथन ‘असंसदीय’ माने जाते रहे हैं। दरअसल बयान से न तो बाबा अंबेडकर का अपमान हुआ है और न ही किसी का सम्मान हुआ है। उच्च सदन में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने गृहमंत्री का इस्तीफा मांगा और देश से माफी मांगने का आग्रह किया। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से भी आग्रह किया कि अमित शाह को कैबिनेट से बर्खास्त कर दिया जाए। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर ही पलटवार कर सियासत को अलग दिशा दी। प्रधानमंत्री के बयान को सामान्य नहीं माना जा सकता। अंबेडकर ने भारत का संविधान लिखने में अग्रणी भूमिका निभाई, लेकिन आजादी के अल्पकाल के बाद ही उन्हें एहसास हो गया था कि संविधान गलत हाथों में चला गया है। इस संदर्भ में उन्होंने राज्यसभा में ऐसा बयान दिया था, जिसे हम दोहराना नहीं चाहते। उस बयान के निहितार्थ ये थे कि बाबा को संविधान तैयार करने का अफसोस, उनके भीतर, था। लेकिन उन्होंने संविधान के जरिए दलितों, वंचितों, पिछड़ों, आदिवासियों आदि के लिए आरक्षण की जो व्यवस्था की और सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक विषमताओं से लड़ने की जो क्षमता दी, उसके मद्देनजर ये वर्ग बाबा को ‘महामानव’ और ‘भगवान’ के समान ही मानते हैं। लिहाजा अंबेडकर के खिलाफ जो सियासत खेली जाती है या विवादास्पद बयान दिए जाते हैं, तो वे हरकतें इन तबकों को असहनीय लगती हैं। अंबेडकर से भाजपा (अथवा जनसंघ) के राजनीतिक सरोकार बेहद कम रहे हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने उन्हें देश की प्रथम राष्ट्रीय सरकार में कानून मंत्री बनाया था। उसी सरकार में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी उद्योग-वाणिज्य मंत्री थे। नेहरू और इन दोनों बौद्धिक नेताओं के बीच कई विरोधाभास थे।

वे नेहरूवादी नीतियों से सहमत भी नहीं थे, नतीजतन दोनों ने मंत्री पद से इस्तीफे दिए। कांग्रेस में अंबेडकर की राजनीति के विरोध की शुरुआत यहीं से होती है। श्यामा प्रसाद ने ‘जनसंघ’ पार्टी की स्थापना की, तो अंबेडकर ने डॉ. राममनोहर लोहिया के साथ मिल कर ‘सामाजिक न्याय’ की राजनीति का सूत्रपात किया। उन्हें हिंदूवादी राजनीति का भी कुछ समर्थन मिला। नेहरू ऐसी सियासत के खिलाफ थे, नतीजतन उन्होंने भरपूर प्रचार और प्रयास कर अंबेडकर को दो बार लोकसभा चुनाव हराया। उन पराजयों पर नेहरू बेहद खुश थे। उन्होंने ही तब की हिंदूवादी राजनीति को ‘सांप्रदायिक’ करार दिया था। ये बातें नेहरू के तत्कालीन पत्रों में स्पष्ट कही गई थीं। कांग्रेस का अंबेडकर-विरोध यहां से घनीभूत होना शुरू और 6 दिसंबर, 1956 को बाबा के निधन तक जारी रहा। प्रधानमंत्री नेहरू ने 1955 में खुद को ‘भारत-रत्न’ सम्मान से नवाज लिया, लेकिन देश के संविधान के रचनाकार अंबेडकर को इस लायक नहीं समझा। उसके बाद कांग्रेस की जितनी भी सरकारें आईं, उन्होंने बाबा अंबेडकर को ‘भारत-रत्न’ नहीं समझा। अंततः 1990 में वीपी सिंह सरकार ने, जिसे भाजपा और वामदलों का भी समर्थन था, बाबा को इस सर्वोच्च सम्मान से नवाजा। हम आज उस इतिहास को बार-बार दोहराने के पक्ष में नहीं हैं। हम ऐसा कई बार कह भी चुके हैं, लेकिन देश की शीर्ष राजनीति ही यह लीक पीट रही है, लिहाजा अतीत का विश्लेषण भी प्रासंगिक लगता है। बहरहाल, अंबेडकर के सियासी अनुयायी ढोंगी हैं, क्योंकि उन्हें बाबा के जीवन और दर्शन से कोई सरोकार नहीं है, लिहाजा सियासत एक फैशन ही है। उनके नाम पर सियासत नहीं की जानी चाहिए।

साड़ीः भारतीयता और परंपरा का विश्व प्रिय पोशाक

सुरेश सिंह वैस

21 दिसंबर विश्व साड़ी दिवस

आज से करीब पांच वर्ष पूर्व महाभारत काल में हस्तिनापुर राज्य हस्तिनापुर के राज दरबार में पांडवों और कौरवों के बीच द्युतक्रीड़ा का आयोजन किया गया। यह क्रीड़ा और कुछ नहीं मामा शकुनी के कुटिल चाल में फंसाने के लिए पांडवों के विरुद्ध कौरवों द्वारा किया गया षड्यंत्र था। अब इस घटना की अद्भुत बानगी देखिए के द्युतक्रीड़ा में हारते हारते पांडवों ने आखिरकार अपनी पत्नी एवं पटरानी द्रौपदी को भी दांव पर लगा दिया था, और उसे भी द्युतक्रीड़ा में हार गए। इसके पश्चात जो घटनाक्रम हुआ वह भगवान कृष्ण और द्रोपदी के वस्त्र की महत्ता का अवर्णनीय बखान करता है। चूंकि दुर्योधन ने आदेश दे दिया की द्रौपदी को निर्वस्त्र किया जाए। अब जिसे आदेश दिया गया था वह था उसका छोटा भाई दुःशासन! दुशासन द्रोपदी के वस्त्र को खींचते, खींचते, खींचते थक हार कर गिर पड़ा, लेकिन द्रोपदी को निर्वस्त्र नहीं कर पाया। क्यों, क्योंकि वह वस्त्र भगवान की कृपा के साथ बढ़ता ही चला गया। वह वस्त्र और कुछ दूसरा नहीं वरन् साड़ी ही था।

दुनिया में जब भी भारतीय परंपरा और रीति-रिवाजों की बात होती है, तो हमारे दिमाग में कई चीजें आती है। इनमें से साड़ी सबसे ज्यादा पॉपुलर मानी जाती है। 21 दिसंबर को को विश्व साड़ी दिवस मनाया जाता है। इस पारंपरिक भारतीय पोशाक की सुंदरता ने भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साड़ी, भारतीय स्त्री का मुख्य परिधान माना जाता है। इस भारतीय पोशाक को अब विदेशों में भी खासा पसंद किया जाता है। भारत आने वाले विदेशी महिलाएं भी साड़ी पहनकर भारतीयता का एहसास करती हैं। और तो और विश्व के अनेक देशों की महिलाएं साड़ी पहनने में फक्र महसूस करती हैं।

हर साल साड़ी दिवस इस पोशाक को बनाने वाले बुनकरों के सम्मान में मनाया जाता है। साड़ी का इतिहास कई हज़ार साल से भी ज्यादा पुराना है। साड़ी नाम संस्कृत शब्द सारिका से लिया गया है। जिसका मतलब कपड़े का लंबा टुकड़ा होता है। साड़ी दिवस के मौके पर हम आपको भारत में बनने वालीं कई साड़ियों की खासियत बताएंगे। 21 दिसंबर का दिन दुनियाभर में इस भारतीय परिधान के लिए निश्चित है। भारत में तो इसे एक तरह से अघोषित राष्ट्रीय परिधान भी कह सकते हैं। जब भी कोई खास अवसर या त्योहार होता है, लड़कियां और महिलाएं अधिकांशतः साड़ी पहनना ही पसंद करती हैं। इसीलिए साड़ी महज़ एक परिधान नहीं, हमारी परंपरा है। यही वजह है कि सालों साल परदादी, दादी, मां की साड़ियां अगली पीढ़ी को ट्रांसफर होती रही है और इसे हमेशा सहेजा गया है। साड़ी को आप जिस रूप में पहने, ये सौंदर्य को निखारने का काम करती है। इसीलिए आज भी हर लड़की के वॉर्डरोब में उसकी पसंद की कुछ खास साड़ियां जरुर होती हैं।

साड़ी बेहद खूबसूरत परिधान है। ऐसे कम वस्त्र होंगे जो बिना सिले इतने सुंदर और गरिमामय लगते होंगे। हालांकि समय से साथ जैसे जैसे जीवनशैली में परिवर्तन हुआ है, कपड़ों के चुनाव पर भी असर पड़ा है। साड़ी पहनना कुछ ज्यादा वक्त लगता है, इसका रखरखाव भी थोड़ा मुश्किल है और इसे संभालने में भी वक्त लगता है। इसीलिए अब ये नई पीढ़ी के लिए रोजमर्रा के परिधान की जगह फेस्टिव वियर बन गई है। लेकिन फिर भी चाहे जितने मॉडर्न कपड़े ट्रेंड में आ जाएं, साड़ी का आकर्षण और भव्यता कम नहीं हुई है। यही वजह है कि जब भी ट्रेडिशनल कपड़ों की बात आती है, साड़ी सबसे अव्वल नंबर पर होती है। हमारे देश में साड़ी की हजारों वैरायटी उपलब्ध है। बांधनी, चुनरी, पटोला, बंगाली, नवारी, कोसा सिल्क, बनारसी सिल्क, कांजीवरम, चंदेरी, माहेश्वरी, पोचमपल्ली, तांतकी, पैठणी सहित हर प्रांत की अपनी खास साड़ी होती है। कपड़े के प्रकार के बाद आती है, प्रिंट और डिजाइन की बारी। और इस आधार पर लाखों तरह की साड़ियां बाजार में मौजूद है। अपने मनपसंद कपड़े, रंग और प्रिंट की साड़ियां आपको कुछ सौ रूपये से लेकर लाखों तक में मिल जाएगी। इसे पहनने के भी सैंकड़ों तरीके हैं। पारंपरिक रूप से साड़ी बांधने के अलावा इसके साथ कई प्रयोग किए जा सकते हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक तकदीस फ़ातिमा रिज़वी ने ग्रुप-5 प्रकाशन, 55-बी, वज़ीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित कराकर प्रथम तल, मस्जिद नूर महल, साकेत पल्ली, नरही, लखनऊ से प्रकाशित किया।

किसी भी लेख में कोई विवाद के लिए ‘अवधनामा’ जिम्मेदार नहीं होगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन
स्थानीय संपादक
मोहम्मद आलम रिज़वी
RNI No UPHIN/2010/31173
टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716
avadhnamahindi@gmail.com,

2017 में भारत में मलेरिया के 64 लाख मामले थे, जो 2023 में घटकर 20 लाख रह गये। इस दौरान मलेरिया से होने वाली अनुमानित मौतें भी 11,110 से घटकर 3,500 रह गयीं। रिपोर्ट बताती है कि चिकित्सीय सुविधा और सजगता बढ़ाने से भारत में जहां मलेरिया के अनुमानित 1.77 करोड़ मामलों को टाला गया, वहीं मलेरिया का जोखिम प्रति 1,000 की आबादी पर 20 से घटकर 1.5 पर आ गया, यानी इसमें 93 प्रतिशत की कमी आयी। वास्तव में, जागरूकता अभियान से उत्पन्न चेतना तथा चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से मलेरिया उन्मूलन में खासी मदद मिली है।

मलेरिया के खिलाफ जंग में भारत की आशातीत सफलता

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने पिछले दिनों जारी ‘विश्व मलेरिया रिपोर्ट, 2024’ में भारत में मलेरिया से होने वाली मौतों में कमी को उल्लेखनीय बताया है, जिसका निश्चय ही नोटिस लिया जाना चाहिए। भारत में मलेरिया के मामलों में आयी 69 प्रतिशत की कमी और इससे होने वाली मौतों में 69 प्रतिशत कमी का जिक्र करते हुए उसने यह निष्कर्ष दिया है कि 2024 में भारत आधिकारिक तौर पर ‘उच्च बोझ-उच्च प्रभाव’ (एचबीएचआइ) वाले स्थानिक देशों के समूह से बाहर निकल गया है।

डॉ. ओपी त्रिपाठी

दरअसल 2019 में देश के चार राज्यों, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल में मलेरिया उन्मूलन की गति तेज करने के लिए अभियान चलाया गया था, जिसका निश्चित तौर पर लाभ मिला है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जिन कुछ देशों में मलेरिया पर बेहतर ढंग से काबू पाया गया है, उनमें भारत एक है। यह सुखद है कि पूरी दुनिया में पिछले दो दशकों में मलेरिया के खिलाफ जंग में आशातीत सफलता मिली है। जिससे जहां मलेरिया के मामलों में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है, वहीं मौत के आंकड़ों में कमी आई है। मलेरिया एक ऐसी बीमारी है जो संक्रमित मच्छरों के ज़रिए लोगों के बीच फैलती है। संक्रमित एनोफ़ेलीज़ मच्छर के काटने से प्लाज्मोडियम परजीवी फैलता है जो पीड़ित के रक्त में प्रवेश करता है और व्यक्ति के लिवर में चला जाता है, जहाँ यह प्रजनन करता है। परजीवी फिर रक्त प्रवाह के माध्यम से यात्रा करते हैं और लाल रक्त कोशिकाओं में प्रवेश करते हैं, जहाँ वे तेज़ी से प्रजनन करते हैं और लाल रक्त कोशिकाओं को फाड़ देते हैं; यह चक्रों में दोहराया जाता है, जिससे तेज बुखार के साथ-साथ कंपकंपी और दर्द का चक्र शुरू हो जाता है। सबसे खराब मामलों में, मलेरिया कोमा और मृत्यु का कारण बनता है।

1953 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम (एनएमसीपी) शुरु किया जो घरों का भीतर डीडीटी का छिड़काव करने पर केन्द्रित था। पांच सालों में ही कार्यक्रम की वजह से मलेरिया की घटनाओं में आश्चर्यजनक कमी देखने में आई। इससे उत्साहित होकर एक अधिक महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम (एनएमईपी) 1958 में शुरू किया गिया। इससे मलेरिया में और भी कमी आई और उसका मृत्यु की वजह बनना थम गया। लेकिन 1967 के बाद अति-आत्मसंतोष तथा मच्छरों द्वारा कीटनाशकों के तथा मलेरिया-रोधी दवाओं के प्रति प्रतिकार क्षमता उत्पन्न कर लेने के कारणों की वजह से देश भी में मलेरिया ने फिर सिर उठा लिया। 1997 में भारत सरकार ने अपना लक्ष्य रोग के उन्मूलन से हटा कर उसके नियंत्रण पर केन्द्रित किया और कीटनाशकों के सार्वत्रिक छिड़काव को रोक कर चुनिंदा भीतरी जगहों पर छिड़काव शुरू किया।

2003 में राष्ट्रीय ज्ञात-कारण बीमारी नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) के तहत मलेरिया नियंत्रण को अन्य ज्ञात-कारण बीमारियों के साथ मिला लिया गया क्योंकि ऐसी सभी बीमारियों की रोकथाम के लिए एक ही रणनीति होती है जैसे रासायनिक नियंत्रण, वातावरण प्रबंधन, जैविक नियंत्रण, और निजी सुरक्षा उपाय आदि। 2005 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन भी शुरू किया, जिसके उद्देश्यों में शामिल है मलेरिया सहित ज्ञात-कारण बीमारियों पर नियंत्रण शामिल था।

उल्लेखनीय है कि देश के मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों में सघन अभियान चलाया गया। साथ ही जागरूकता अभियान से भी इस दिशा में लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिली है। दरअसल, मलेरिया से ज्यादा प्रभावित राज्यों पश्चिम बंगाल, झारखंड, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में मलेरिया उन्मूलन अभियान युद्ध स्तर पर चलाया गया। इसके चलते भारत को डब्ल्यूएचओ ने उन देशों में शुमार किया है जिन्होंने इस दिशा में आशातीत सफलता हासिल की है। सुखद यह है कि मलेरिया से अधिक प्रभावित देशों मसलन अफ्रीकी देशों में नई वैक्सीन के ट्रायल के बेहतर परिणाम सामने आए हैं। ऐसे में उम्मीद व्यक्त की जा रही है कि हर साल जो लाखों लोग मलेरिया की चपेट में आते हैं, नई वैक्सीन के प्रभाव से उनकी जान के जोखिम को कम किए जाने में मदद मिल सकेगी। दरअसल, वैक्सीन के फेज-2बी के क्लीनिकल ट्रायल के परिणाम बताते हैं कि वैक्सीन सुरक्षित है और मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में कारगर है। वैक्सीन की प्रभावशीलता पचपन फीसदी बतायी गई है। उल्लेखनीय है कि मशहूर चिकित्सा पत्रिका लांसेट में प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि वैक्सीन रक्त में मौजूद मलेरिया की वजह बनने वाले परजीवियों के खिलाफ प्रभावी पायी गई है। जिसे जीवन की रक्षा के लिए बड़ी कामयाबी माना जा रहा है।

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के मुताबिक, 2017 में भारत में मलेरिया के 64 लाख मामले थे, जो 2023 में घटकर 20 लाख रह गये। इस दौरान मलेरिया से होने वाली अनुमानित मौतें भी 11,110 से घटकर 3,500 रह गयीं। रिपोर्ट बताती है कि चिकित्सीय सुविधा और सजगता बढ़ाने से भारत में जहां मलेरिया के अनुमानित 1.77 करोड़ मामलों को टाला गया, वहीं मलेरिया का जोखिम प्रति 1,000 की आबादी पर 20 से घटकर 1.5 पर आ गया, यानी इसमें 93 प्रतिशत की कमी आयी। वास्तव में, जागरूकता अभियान से उत्पन्न चेतना तथा चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से मलेरिया उन्मूलन में खासी मदद मिली है। एक अनुमान के अनुसार कोई पौने दो करोड़ मलेरिया के मामलों को टाला गया है। वहीं मलेरिया जोखिम में भी आशातीत गिरावट आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दक्षिण पूर्व एशिया के आठ देश मलेरिया से सर्वाधिक प्रभावित थे। जिसमें भारत में भी स्थिति विगत में चुनौतीपूर्ण थी। दरअसल, विश्व स्वास्थ्य संगठन इस बात को लेकर चिंतित था कि इस क्षेत्र में सघन आबादी के चलते दुनिया की एक चौथाई आबादी निवास करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दक्षिण एशिया के इन देशों में मच्छरों से पैदा होने वाले मलेरिया पर अंकुश लगाने के लिए सहज उपचार की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा था। जिससे लोगों के जीवन पर जोखिम को कम किया जा सके। यह तभी संभव था जब मलेरिया के प्रति संवेदनशील लोगों तक सहजता से उपचार पहुंचा सकें। महत्वपूर्ण बात यह है कि जहां भारत, इंडोनेशिया, बांग्लादेश व नेपाल में मलेरिया के मामलों में गिरावट आई है, वहीं म्यांमार, थाईलैंड व दक्षिण कोरिया में मलेरिया के मामलों में वृद्धि का ट्रेंड देखा गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दक्षिण पूर्व एशिया में मलेरिया के खिलाफ लड़ाई में मिली जीत की प्रशंसा तो की ही है, उसने इस रोग वाहक मच्छर जनित बीमारी की रोकथाम, निदान और उपचार तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए जोखिम संभावित लोगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा है। इसकी वजह यह है कि भारत, बांग्लादेश, इंडोनेशिया और नेपाल में मलेरिया के मामले भले ही कम हुए हों, लेकिन दक्षिण कोरिया, थाईलैंड और म्यांमार में मलेरिया के मामलों में वृद्धि देखी गई है।

विश्व ध्यान दिवसः आत्म-साक्षात्कार व विश्व शांति की ओर एक कदम

कैंसर, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों से पीड़ित रोगियों के लिए ध्यान को सहायक चिकित्सा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकॉलजी में प्रकाशित एक अध्ययन में यह पाया गया कि ध्यान से न केवल मरीजों के दर्द की अनुभूति कम होती है, बल्कि उनमें इलाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। ध्यान का प्रभाव केवल मानसिक स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान के प्रभाव को भी अब व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 21 दिसंबर से विश्व ध्यान दिवस मनाने की घोषणा एक ऐतिहासिक कदम है। दरअसल मेडिटेशन या ध्यान को सदियों से केवल आध्यात्म से जोड़ कर देखा जाता था। लेकिन आज विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मेडिटेशन का सकारात्मक प्रभाव केवल मानव के मन या मस्तिष्क ही नहीं उसके तन पर भी पड़ता है।

डॉ नीलम महेंद्र

इसलिए 21 जून को योग दिवस मनाए जाने के बाद सम्पूर्ण विश्व में अब 21 दिसंबर को ध्यान दिवस के रूप में मनाने का उद्देश्य योग की ही भांति ध्यान को जन-जन तक पहुंचाना और इसे मानव जीवन के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित करके एक स्वस्थ विश्व की नींव मजबूत करना है। वस्तुतः वर्तमान युग में जब मनुष्य तेजी से भागदौड़ और तनावपूर्ण जीवन जीने के लिए विवश है, ध्यान उसके मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को संतुलित करने का एक सहज, सरल प्राकृतिक साधन बन गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं आज वैश्विक स्तर पर प्रमुख स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक बन गई हैं। वर्ष 2023 के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 280 मिलियन लोग मानसिक रूप से पीड़ित हैं और 40% युवा तनाव और मानसिक अस्थिरता का सामना कर रहे हैं। खास बात यह है कि ध्यान, एक साधारण लेकिन शक्तिशाली प्रक्रिया, इन समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रदान कर सकती है। अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि ध्यान मस्तिष्क में डोपामाइन और सेरोटोनिन जैसे सकारात्मक रसायनों के स्तर को बढ़ाता है, जो तनाव को कम करते हैं और मूड को स्थिर रखते हैं।

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, केवल आठ सप्ताह के ध्यान अभ्यास से मस्तिष्क के ग्रे मैटर में वृद्धि देखी गई, जो सीखने, याददाश्त और भावनात्मक विनियमन में सहायक है। इस प्रकार विभिन्न शोधों में यह बात वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध हो चुकी है कि ध्यान केवल मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति का साधन नहीं है, बल्कि नियमित रूप से इसका अभ्यास उसके जीवन के हर पहलू को समृद्ध कर सकता है। ध्यान के वैज्ञानिक आधार को समझने के लिए न्यूरोसाइंस में किए गए शोधों पर ध्यान देना आवश्यक है। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में किए गए एक अन्य अध्ययन में यह पाया गया कि नियमित ध्यान मस्तिष्क के अमिगडाला (जो भय और तनाव का केंद्र है) की गतिविधि को कम करता है, जिससे व्यक्ति तनावपूर्ण स्थितियों में भी शांत और संतुलित बना रहता है।

ध्यान के इन वैज्ञानिक लाभों को अब विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। कई अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र अब ध्यान को मानसिक स्वास्थ्य उपचार का हिस्सा बना रहे हैं। कैंसर, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों से पीड़ित रोगियों के लिए ध्यान को सहायक चिकित्सा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकॉलजी में प्रकाशित एक अध्ययन में यह पाया गया कि ध्यान से न केवल मरीजों के दर्द की अनुभूति कम होती है, बल्कि उनमें इलाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। ध्यान का प्रभाव केवल मानसिक स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान के प्रभाव को भी अब व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। एक अध्ययन के अनुसार, ध्यान नियमित रूप से करने से हृदय की गति और रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद मिलती है, जिससे हृदय रोगों का जोखिम 30% तक कम हो सकता है। इसके अलावा, ध्यान प्रतिरक्षा प्रणाली को भी मजबूत करता है, जिससे शरीर बीमारियों से लड़ने में अधिक सक्षम बनता है।

इतना ही नहीं रिसर्च में यह बात भी सामने आई कि ध्यान का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर पर सीमित नहीं होता। जब एक व्यक्ति ध्यान करता है, तो वह अपनी आंतरिक ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में केंद्रित करता है, जिसका असर उसके आस-पास के वातावरण पर भी पड़ता है। कई अध्ययनों ने यह साबित किया है कि सामूहिक ध्यान के दौरान अपराध दर में गिरावट, सामाजिक सौहार्द में वृद्धि और पर्यावरणीय सामंजस्य जैसे सकारात्मक परिवर्तन देखे गए हैं। 1993 में वाशिंगटन डी.सी. में किए गए एक शोध में पाया गया कि सामूहिक ध्यान के दौरान शहर में अपराध दर में 23 फीसदी की गिरावट आई। मेडिटेशन जैसे एक सरल माध्यम से मानवीय आचरण में इस प्रकार के मूलभूत बदलाव इसकी वैज्ञानिकता (मनोवैज्ञानिकता) का प्रमाण है।

मेडिटेशन के इन्हीं सकारात्मक प्रभावों को देखते हुए आज कॉर्पोरेट कल्चर वाली कई मल्टिनैशनल कंपनियां अब ध्यान को अपनी कार्य संस्कृति में शामिल कर रही हैं। गूगल, एप्पल, और माइक्रोसॉफ्ट जैसी प्रमुख कंपनियां अपने कर्मचारियों के लिए नियमित ध्यान सत्र आयोजित कर रही हैं। आज के प्रतिस्पर्धा के दौर में हमारे बच्चे भी पढ़ाई में अपने प्रदर्शन को लेकर तनाव में रहते हैं। अध्ययन बताते हैं कि जो छात्र नियमित रूप से ध्यान करते हैं, उनकी एकाग्रता, स्मरणशक्ति और भावनात्मक संतुलन में सुधार होता है। भारतीय विद्यालयों में किए गए एक पायलट प्रोजेक्ट में पाया गया कि ध्यान के नियमित अभ्यास से बच्चों की परीक्षा में प्रदर्शन में 20 फीसदी तक सुधार हुआ।

हालांकि, ध्यान के महत्व को समझने और इसे अपने जीवन में शामिल करने के लिए जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। अभी भी दुनिया की 60 फीसदी से अधिक आबादी ध्यान के लाभों और इसकी प्रक्रिया से अनभिज्ञ है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा विश्व ध्यान दिवस मनाने का यह निर्णय निश्चित ही वैश्विक स्तर पर लोगों में मेडिटेशन के फायदों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। निस्संदेह यह प्रयास एक स्वस्थ एवं समर्द्ध विश्व की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है।

कुछ भी कहो, सरकारी तंत्र में नही घटा भ्रष्टाचार

रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि सरकारी ई-प्रोक्योरमेंट मार्केटप्लेस जैसी पहल भ्रष्टाचार को कम करने के लिए अच्छे कदम हैं, लेकिन सरकारी विभागों में रिश्वत लेने के रास्ते खुले हुए हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर डेलायट इंडिया के पार्टनर आकाश शर्मा ने कहना है कि बहुत सी कंपनियों को लगता है कि नीतियों और प्रक्रिया के मामलों में थोड़ा पैसा देते रहने नियम कानून के मोर्चे पर कड़ी जांच पड़ताल और जुर्माने से बच जाएंगे। सर्वे में 18,000 कारोबारियों के जवाब को शामिल किया गया है।

केंद्र और भाजपा शासित राज्यों की सरकारे कितना ही भ्रष्टाचार मुक्त शासन देने का दावा करें किंतु सच्चाई इसके वितरीत है। एक सर्वे में दावा किया गया है कि 100 में से 66 लोगों को अपना काम कराने के लिए सरकारी तंत्र को रिश्वत देनी पड़ती है किंतु सच्चाई इसके विपरीत है। शायद ही कोई विभाग ऐसा होगा जहां बिना रिश्वत दिए काम हो जाए।सब जगह हालत बहुत खराब है।गैर भाजपा राज्यों की तरह भाजपा शासित राज्यों में भी प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टचार का बोलबाला है। सरकारें मौन हैं। देश में केंद्र और राज्य सरकारें कारोबार में सहूलियत और निजी क्षेत्र के निवेश में तेजी लाने पर जोर दे रहीं हैं। वहीं भ्रष्ट सरकारी मशीनरी अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल कंपनियों और उद्यमियों से अवैध तरीके से पैसे उगाहने में लगी हैं, जिसके चलते देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने की सिंगल विंडो क्लियरेंस और ईज आफ डुइंग बिजनेस जैसे प्रयासों को पलीता लग रहा है।एक सर्वे में यह बात सामने आई है कि करीब 66 प्रतिशत कंपनियों को सरकारी सेवाओं का लाभ लेने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है। कंपनियों ने दावा किया कि उन्होंने सप्लायर क्वॉलीकेशन, कोटेशन, ऑर्डर प्राप्त करने तथा भुगतान के लिए रिश्वत दी है। लोकल सर्कल्स की रिपोर्ट के अनुसार कुल रिश्वत का 75 प्रतिशत कानूनी, माप- तौल, खाद्य, दवा, स्वास्थ्य आदि सरकारी विभागों के अधिकारियों को दी गई।

अशोक मधुप

जांच रिपोर्ट कहती है कि कई कारोबारियों ने जीएसटी अधिकारियों, प्रदूषण विभाग, नगर निगम और बिजली विभाग को रिश्वत देने की भी सूचना दी है। पिछले 12 महीनों में जिन कंपनियों ने रिश्वत दी, उनमें से 54 प्रतिशत को ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया, जबकि 46 प्रतिशत ने समय पर काम पूरा करने के लिए भुगतान किया। इस तरह की रिश्वत जबरन वसूली के बराबर है। सरकारी एजेंसियों के साथ काम करते समय कंपनियों के काम जान बूझ कर रोके जाते हैं और रिश्वत लेने के बाद ही फाइल को मंजूरी दी जाती है। सीसीटीवी कैमरों लगाने से सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार कम नहीं हुआ है। सर्वे में दावा किया गया है कि सीसीटीवी से दूर, बंद दरवाजों के पीछे रिश्वत दी जाती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि सरकारी ई-प्रोक्योरमेंट मार्केटप्लेस जैसी पहल भ्रष्टाचार को कम करने के लिए अच्छे कदम हैं, लेकिन सरकारी विभागों में रिश्वत लेने के रास्ते खुले हुए हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर डेलायट इंडिया के पार्टनर आकाश शर्मा ने कहना है कि बहुत सी कंपनियों को लगता है कि नीतियों और प्रक्रिया के मामलों में थोड़ा पैसा देते रहने नियम कानून

के मोर्चे पर कड़ी जांच पड़ताल और जुर्माने से बच जाएंगे। सर्वे में 18,000 कारोबारियों के जवाब को शामिल किया गया है। सर्वे देश के 159 जिलों में हुआ है।

व्यवसायों ने पिछले 12 महीनों में आपूर्तिकर्ता के रूप में अर्हता प्राप्त करने, कोटेशन और ऑर्डर सुरक्षित करने तथा भुगतान एकत्र करने के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाओं को रिश्वत देने की बात स्वीकार की है। यह सर्वेक्षण 22 मई से 30 नवंबर 2024 के बीच किया गया था। सर्वेक्षण में भाग लेने वाली व्यावसायिक फर्मों ने कहा कि 75 प्रतिशत रिश्वत कानूनी, मेट्रोलॉजी, खाद्य, औषधि, स्वास्थ्य आदि विभागों के अधिकारियों को दी गई। सरकारी विभागों को घूस देने वाले कारोबारियों का प्रतिशत इस प्रकार है। कानूनी, माप तौल, खाद्य, दवा और स्वास्थ्य विभाग- 75,लेबर और पीएफ विभाग- 69,संपत्ति और भूमि पंजीकरण ङ्क 68,जीएसटी अधिकारी- 62,प्रदूषण विभाग- 59,नगर निगम- 57,इनकम टैक्स- 47,अग्नि शमन- 45,पुलिस- 43,परिवहन- 42,बिजली- 41,आबकारी- 38। ये आंकड़े कुछ भी हों, सच्चाई इससे भी बदतर है। ये बड़े स्तर की बात है।स्थानीय स्तर पर तो हालत इससे भी खराब है।भाजपा शासित प्रदेश वाले राज्यों में तो सपा -बसपा शासन काल में जहां गलत काम एक हजार रूपये में हो जाता था, अब भाजपा शासन में गलत काम तो होता ही नही ,सही काम कराने के भी एक हजार की जगह बीस हजार रूपये दिए जाते हैं।बिजली के कनेक्शन के लिए आवेदन करिये। ये बहुत छोटा काम है, किंतु बिजली इंस्पैक्टर को रिश्वत दिए कनेक्शन स्वीकृत नही होगा।बिजली की फीटिंग किसी से भी कराएं किंतु बिजली विभाग के अधिकृत ठेकेदार से बिजली फीटिंग का प्रमाणापत्र लेना होता है। यही ठेकेदार बिजली इंस्पैक्टर का भाग भी आपसे ले लेता है। रजिस्ट्रार आफिस में धड़ल्ले से बैनामे की राशि का दो प्रतिशत वसूला जाता है। यह राशि अधिकारी सीधे नही लेते। बैनामा लिखने वाला कातिब लेता है। शाम को बैठकर आराम से दिन भर का लेन -देन हो जाता है।एनओसी देने वाले विभागों की तो हालत और भी खराब है। फायर विभाग के अधिकारियों ने तो अपने ठेकेदार रख लिए हैं। अग्नि सुरक्षा का सारा काम ये ही कराते हैं।इसके बाद भी एनओसी साइन करने के लिए लाखों रूपया वसूला जाता है। और तो और अग्निशमन अधिकारी एनओसी देने से पहले फायर उपकरण अपने चहेते ठेकेदार से सप्लाई कराते हैं। स्थानीय निकाय में निर्माण कार्यों में 45 से 55 प्रतिशत सरे आम कमीशन लिया जा रहा है। केंद्र और प्रदेश सरकार के आदेश हैं कि सरकारी खरीद जेम पार्टल से हो।इसका भी रास्ता निकल गया। कंपनी के एजेंट अधिकारियों से मिलते हैं। कमीशन तै होता है। अधिकारी अपना जैम पोर्टल का पासवर्ड कंपनी के एजेंट को बता देते हैं। एजेंट पासवर्ड लेकर जैम पार्टल से ही अपनी फर्म से खरीदारी करता है। सामान के रेट में अधिकारियों का कमीशन जुड़ जाता है।सब वैसे ही चल रहा है। कहीं कुछ नही बदला। सरकार भ्रष्टाचार रोकने को आदेश बाद में करती है। अधिकारी और सप्लायर रास्ता पहले निकाल लेतें हैं। उत्तर प्रदेश में आदेश हो गए कि सामन प्रदेश स्तर से खरीदा जाएगा। अब काम और भी सरल हो गया। पहले जिलों में अधिकारियों से संपर्क कर माल सप्लाई होता था। अब अकेले प्रदेश स्तर में ही जुगाड़ करना पड़ता है। इसी का कारण है कि जिलों के अस्पतालों में वितरण के लिए वे दवाई आती हैं, जिनकी एक्सपायर डेट नजदीक होती है। दवा आने के साथ ही आदेश आते हैं कि दवा की एक्सपायर डेट नजदीक है।

प्रदेश में शीतलहर और गलन ने बढ़ाई ठंड

22 से चलेंगी सर्द हवाएं, गोंडा-बलरामपुर में परेशान कर रही ठंड

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में ठंड ने अपने पैर पसार लिए हैं। सुबह और रात के समय कोहरा देखने को मिल रहा है। वहीं दिन में धुंधी छाई रहती है। मौसम विभाग के मुताबिक, 21 दिसंबर तक मौसम ऐसे ही रहेगा। 22 दिसंबर से न्यूनतम और अधिकतम तापमान में तीन से चार डिग्री की गिरावट हो सकती है। इससे और भी ज्?य ठंड बढ़ सकती है। गुरुवार को लखनऊ में अधिकतम तापमान 26.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 3.7 डिग्री अधिक था। वहीं, न्यूनतम तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.9 डिग्री अधिक था।

शुक्रवार को लखनऊ में मौसम विभाग ने अधिकतम तापमान 24.3 तो न्यूनतम तापमान 9 डिग्री रहने की संभावना जताई है। मौसम वैज्ञानिक डा. अतुल कुमार सिंह का कहना है कि 21 दिसंबर तक मौसम में परिवर्तन नहीं दिख रहा है। वहीं आगरा में वायु गुणवत्ता एक बार फिर खराब स्थिति में पहुंच गई है। गुरुवार को एक्यूआइ 235 दर्ज किया गया। वायु गुणवत्ता खराब स्थिति में पहुंचने में स्वस्थ लोगों को भी सांस लेने में दिक्कत होने लगती है। आज तापमान में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। अधिकतम 21.4 व न्यूनतम तापमान 7 डिग्री रहने की संभावना है।

■ **अधिकतम तापमान 22.6 तो न्यूनतम 6.6 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना**

गोंडा बलरामपुर में भी ठंड से लोग परेशान हैं। अंगीठी, अलाव या हीटर का सहारा ले रहे हैं। गोंडा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. उपेंद्रनाथ सिंह ने बताया कि गुरुवार को तेज धूप निकलने से तापमान में थोड़ा सुधार आया है। शक्रवार को ठंड का असर बढ़ सकता है। पछुआ हवा के चलने पर गलन बढ़ेगी। स्वास्थ्य प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है। आज अधिकतम तापमान 22.6 तो न्यूनतम 6.6 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। वहीं बलरामपुर में अधिकतम 23.8 डिग्री और न्यूनतम 9.8 तापमान रह सकता है।

सीतापुर के मौसम विशेषज्ञों ने बताया कि शुक्रवार को भी शीत लहर व गलन लोगों को परेशान करेगी। जिलेवासियों को सुबह-शाम ठंड का सामना करना पड़ेगा। दोपहर में धूप निकलेगी। आज अधिकतम तापमान 21.6 तो न्यूनतम 6.6 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। वहीं बलरामपुर में अधिकतम 23.8 डिग्री और न्यूनतम 9.8 तापमान रह सकता है।

अयोध्या में साफ रहेगा मौसम

अयोध्या में शुक्रवार को आसमान साफ रहेगा। आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, दिन का तापमान सामान्य स्तर यानी कि 24.0 डिग्री रहेगा। वहीं रात में तापमान में जबरदस्त गिरावट देखने को मिल सकती है। संभल में सर्दी का सितम बढ़ने लगा है। तापमान में भारी गिरावट देखने को मिल रही है। सुबह और शाम चल रही बर्फीली हवाओं ने लोगों को परेशान कर दिया है। लोगों का कहना है कि शीत लहर में बच्चों, बुजुर्गों व रोगियों को घरों में ही रखना ठीक होगा। इसके बचाव के लिए लोगों ने गर्म कपड़ों की खरीदारी शुरू कर दी है। दुकानदारों ने मौसम के अनुसार कपड़ों की बिक्री शुरू कर दी है। स्वेटर, मफलर, कार्डिगन, टोपी, शाल व ऊनी कपड़े खूब पसंद किए जा रहे हैं।

केशव मौर्य का विधान परिषद के सदस्यों को महाकुंभ में आने का निमंत्रण

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने विधान परिषद के सभी सदस्यों को महाकुंभ आने का निमंत्रण दिया है। उन्होंने कहा कि आस्था के संगम में सभी सदस्य डुबकी लगाएं। उन्होंने अच्छी तरह से सदन के संचालन में सहयोग करने के लिए नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव सहित सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

सभापति कुंवर मानवेन्द्र सिंह ने भी सदन की कार्यवाही में सहयोग के लिए विपक्ष व सत्ता पक्ष के सदस्यों का धन्यवाद किया। इससे पहले दूसरे अनुपूरक बजट को उच्च सदन से भी पास करा लिया गया। संसद में बाबा साहब भीमराव आंबेडकर को लेकर गृहमंत्री अमित शाह के बयान के बाद शुरू हुई विपक्षी दलों की सियासत की आंच तेज हो गई। गुरुवार को बसपा प्रमुख मायावती ने इसे लेकर न केवल गृहमंत्री अमित शाह को घेरा बल्कि भाजपा और कांग्रेस को भी आड़े हाथों लिया।

इस दौरान मायावती ने कहा कि अमित शाह ने संसद में संविधान निर्माता, वंचितों व अन्य उपेक्षित वर्गों के भगवान बाबा साहब डा. भीमराव आंबेडकर के बारे में जिन शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, उससे बाबा साहब की गरिमा व अस्तित्व को काफी ठेस पहुंची है। पूरे देश में बाबा साहब के अनुयायियों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है। उन्होंने कहा कि गृहमंत्री को अपने कहे गए शब्दों को जल्द ही वापस ले लेना चाहिए। इसके लिए इनको पश्चाताप भी जरूर करना चाहिए। वहीं, कांग्रेस पार्टी अब इस कोशिश में लगी है कि अमित शाह के मुद्दे पर कुछ न कुछ दलितों (वंचितों) का वोट जरूर बटोर लिया जाए। संसद में संविधान और बाबा साहब भीमराव आंबेडकर को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच चल रहे आरोप-प्रत्यारोप को लेकर भी बसपा प्रमुख ने हमला बोला।

■ **बाबा साहब के अनुयायियों में आक्रोश**

उन्होंने कहा कि विशेषकर दलितों व अन्य उपेक्षित वर्गों के वोटों के लिए पिछले एक-दो दिनों से संसद में सत्ता व विपक्ष के बीच में सियासत चल रही है। इनके वोटों के लिए मेरे आंबेडकर व तेरे आंबेडकर की यह लड़ाई धक्का-मुक्की तक पर भी आ गई है, यह सब शोभा नही दे रहा है।

फिजियोथैरेपी की फैकल्टीज़ को मिला सिग्निफिकेंट कॉन्ट्रिब्यूशन अवार्ड

अवधनामा संवाददाता

मुरादाबाद। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के डिपार्टमेंट ऑफ फिजियोथैरेपी के फैकल्टीज़ और स्टुडेंट्स ने एम्स- नई दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय भौतिक चिकित्सा सम्मेलन- आईएनसीपीटी 2024 में शिरकत की। आईएनसीपीटी में टीएमयू फिजियौथैरेपी की फैकल्टीज़ हरीश शर्मा और मिस नीलम चौहान को भौतिक चिकित्सा में उत्कृष्ट योगदान के लिए सिग्निफिकेंट कॉन्ट्रिब्यूशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता, निबंध लेखन और पोस्टर प्रेजेंटेशन की प्रतियोगिताएं भी हुईं।

क्विज प्रतियोगिता में मो. सनी, ईशा और सोनम जैन की टीम ए और प्रांजल जैन, अदीबा जब्बार और सिदा उस्मानी की टीम बी ने प्रतिभाग किया। निबंध और पोस्टर प्रतियोगिता की थीम डिजिटल डायनामिक्स इन फिजियोथैरेपी रही। निबंध लेखन में मरियम जाकिर, अनिमेश, तान्या, मो. सनी, ईशा, सोनम जैन, प्रांजल जैन, अदीबा जब्बार, सिद्रा उस्मानी, जबकि पोस्टर प्रेजेंटेशन प्रतियोगिता में आकृति, पूजा, प्रांजल, तान्या, सोनम, ईशा आदि ने प्रतिभाग किया। निबंध लेखन और पोस्टर प्रेजेंटेशन के जरिए स्टुडेंट्स ने अपने शोध और नवाचारों को रचनात्मक और सृजनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। अंतर्राष्ट्रीय भौतिक चिकित्सा सम्मेलन में उन्नत उपचार पद्धतियों जैसे- बायोफीड बैक, कम्प्रेशन पम्पस की क्रियाविधि, पुनर्वास तकनीकों और रोगियों की देखभाल में नए आयामों पर विस्तार से चर्चा हुई। साथ ही स्टुडेंट्स पेशेंट मोबिलाइजेशन, कंधे के ज्वाइंट का मोबिलाइलेशन आदि की नवीनतम तकनीकों से रूबरू हुए।

■ **निबंध लेखन और पोस्टर प्रेजेंटेशन की प्रतियोगिताएं भी हुईं**

यूपी कांग्रेस मुख्यालय का कमरा सील

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। विधानभवन का घेराव करने जा रहे कांग्रेस कार्यकर्ताओं की पुलिस से झड़प के बाद मृत अवस्था में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविल अस्पताल ले जाए गए यूथ कांग्रेस के पूर्व पदाधिकारी प्रभात पांडेय की मौत के मामले में पुलिस ने जांच तेज कर दी है। गुरुवार देर रात को श्वान दस्ते के साथ पुलिस व फॉरेंसिक की फील्ड यूनिट ने माल एवेन्यू स्थित प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के उस कमरे (कक्ष संख्या-30) को सील कर दिया था, जहां प्रभात के बेसुध पड़े होने की बात सामने आई थी।

यह कमरा में भंग चल रहे अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के चेयरमैन शाह नवाज आलम के नाम आवंटित है। गुरुवार को पुलिस ने पूछताछ के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सहित 20 लोगों को नोटिस दिया है। कांग्रेस मुख्यालय व सिविल अस्पताल से डीवीआर पुलिस ने अपने कब्जे में लिया है।

■ **पूछताछ के लिए 20 को नोटिस जारी**

इस बीच प्रभात की मौत झड़प के दौरान होने का आरोप लगाकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पुलिस का पुतला फूंक कर विरोध प्रदर्शन किया।

बुधवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय की अगुवाई में विधानसभा का घेराव होना था। प्रदर्शन में शामिल होने के लिए गोरखपुर निवासी प्रभात पांडेय भी पहुंचा था। प्रदर्शन शुरू होने के बाद प्रभात कार्यालय के अंदर गया और कुछ देर बाद उसकी संदिग्ध हालात में मौत हो गई। किसी ने फोन पर प्रभात के चाचा मनीष कुमार पांडेय को इसकी जानकारी दी तब उन्होंने एफआईआर दर्ज कराई। गुरुवार को सुबह करीब साढ़े नौ बजे एक बार फिर डीसीपी मध्य रवीना त्यागी के नेतृत्व में एडीसीपी मनीषा सिंह, एसीपी हजरतगंज विकास जायसवाल के साथ पुलिस टीम पूछताछ के लिए प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पहुंची।

पुलिस ने कंट्रोल रूम इंचार्ज राकेश के बयान दर्ज किए। सुरक्षा गार्ड सहित मौजूद चार कर्मचारियों से पूछताछ की। घटना के समय के आसपास की सीसीटीवी फुटेज देखी। इस बात की भी जानकारी ली कि प्रदर्शन के वक्त कौन-कौन कार्यालय के अंदर मौजूद था। यह भी देखा जा रहा है कि प्रभात ने मौत के पहले किस किस से बात की और बाद में किन किन का फोन आया। साक्ष्य संकलन के लिए पहुंची फॉरेंसिक की फील्ड यूनिट को कमरे से गद्दे-कुर्सी सहित कई सामान हटाए जाने के संकेत मिले हैं।

प्रभात के चाचा मनीष पांडेय ने बुधवार को ही हुसैनगंज थाने में अज्ञात में हत्या का मुकदमा दर्ज करा दिया था। रिपोर्ट में पूरे घटनाक्रम को लेकर कई सवाल उठाए गए हैं। बुधवार को मनीष पांडेय ने आरोप लगाया था कि प्रभात किसी के फोन आने पर वह धरना-प्रदर्शन में शामिल होने चला गया। शाम को कांग्रेस कार्यालय से फोन आया कि प्रभात बेहोश पड़े हैं। उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। समय से इलाज मिल गया होता तो उसकी जान बच गई होती। डीसीपी मध्य रवीना त्यागी ने बताया कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सहित 20 लोगों को पूछताछ के लिए नोटिस दिया गया है।

गृह मंत्री इस्तीफा दें और मोदी सरकार माफी मांगे : माले

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। भाकपा (माले) गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब अंबेडकर के खिलाफ संसद (राज्यसभा) में दिए गए अपमानजनक वक्तव्य के खिलाफ 21 से 26 दिसंबर तक राज्यव्यापी विरोध सप्ताह मनाएगी। इस दौरान पार्टी जिला मुख्यालय से लेकर गांवों तक धरना, प्रदर्शन व मार्च निकाल कर अमित शाह के केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा और मोदी सरकार से राष्ट्र से माफी मांगने की मांग करेगी।

राज्य सचिव सुधाकर यादव ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि गृह मंत्री, मोदी सरकार व भाजपा ने संविधान और डॉ. अंबेडकर की विरासत का अपमान किया है। गृह मंत्री के वक्तव्य से संविधान-विरोधी सोच रखने वाली मोदी सरकार का पर्दाफाश हो चुका है। डॉ. अंबेडकर रचित संविधान की शपथ लेकर उनका अपमान करने वालों ने करोड़ों-करोड़ देशवासियों को ठेस पहुंचाई है। ऐसे लोगों को सत्ता में रहने का हक नहीं है। राज्य सचिव ने कहा कि संघ और भाजपा अंदरूनी तौर पर संविधान को नहीं मानते हैं। उनके लिए असल संविधान मनुस्मृति है। संघ जब डॉ. अंबेडकर लिखित संविधान लागू हो रहा था, तभी उसके खिलाफ था। वह आज भी इसके खिलाफ है। संघ-भाजपा संविधान को मानने का दिखावा करते हैं। मोदी सरकार के गुजरे साढ़े दस वर्षों में संविधान पर सर्वाधिक हमले हुए हैं। संविधान का वे कितना सम्मान करते हैं, इसकी असलियत जाने-अनजाने अमित शाह के वक्तव्य से सामने आ गई। माले नेता ने कहा कि गुजरे लोकसभा चुनाव में देशवासियों और उत्तर प्रदेश वासियों ने यदि भाजपा को न रोका होता तो वह संविधान बदलने की ओर बढ़ चुकी होती।

■ **अपमान के खिलाफ माले राज्यव्यापी विरोध सप्ताह 21-26 दिसंबर को मनाएगी**

'निजीकरण का हर स्तर पर करेंगे विरोध'

अवधनामा संवाददाता

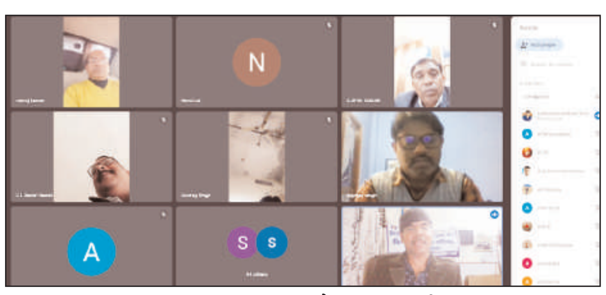

लखनऊ। दक्षिणांचल और पूर्वांचल को निजी क्षेत्र में दिए जाने के विरोध में जहां उत्तर प्रदेश पावर ऑफिसर एसोसिएशन ने आज अपने सभी पदाधिकारी की दक्षिणांचल पूर्वांचल ट्रांसमिशन उत्पादन निगम केस्को मध्यांचल पावर कॉरपोरेशन वी ट्रांसमिशन की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए एक वार्ता की जिसमें एक और से या प्रस्ताव पास किया गया की बाबा साहब के सम्मान में हम सभी रहेंगे मैदान में क्योंकि निजीकरण से बाबा साहब की संवैधानिक व्यवस्था आरक्षण पर कुठाराघात होगा इसे हम किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं करेंगे।

ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में सर्व समस्या आता है किया गया कि पूर्वांचल व दक्षिणांचल में बहुत जल्द ही एक विशाल सम्मेलन किया जाएगा इसके बाद जन आंदोलन के रूप में आंदोलन को जन-जन के बीच में ले जाने के लिए सभी सदस्य पदाधिकारी शाम 6 बजे अपना अभियान शुरू करेंगे दिनभर करेंगे काम रात को चलाएंगे अभियान इस योजना के तहत अपने आंदोलन को आगे बढाएंगे। प्रदेश भर से जुडे पदाधिकारी को पीपीपी मॉडल के तहत निजीकरण के नुकसानों की जानकारी देते हुए उत्तर प्रदेश पावर ऑफिसर्स एसोसिएशन के कार्यवाहक अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि सबसे बडा नुकसान दलित व पिछला वर्ग का होगा क्योंकि पहले उनकी पदोन्नति में आरक्षण छीना गया अब उनका आरक्षण भी छीना लिया जाएगा सबसे चिंता का बात यह है कि पूरे पूर्वांचल में 66प्रतिसत चुन चुन कर दलित अभियंताओं को पहले तैनात किया गया और अब इसका निजीकरण किया जा रहा है।

■ **बाबा साहब की संवैधानिक व्यवस्था आरक्षण पर कुठाराघात बर्दास्त नहीं**

वही हाल दक्षिण का भी है जहां चुन चुन कर दलित अभियंताओं को तैनात किया गया यह बहुत गंभीर मामला है इसकी माननीय मुख्यमंत्री जी को जांच करना चाहिए कि निजीकरण के 6 माह पहले किस प्रकार से दलित अभियंताओं को निजीकरण की प्रक्रिया में शामिल बिजली कंपनियों में जानबूझकर भेजा गया।

निजीकरण के 12 प्रयोग फेल हुए हैं : उपभोक्ता परिषद

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने कहा जनहित में उपभोक्ता परिषद उत्तर प्रदेश सरकार के सामने आज कुछ महत्वपूर्ण तथ्य रखने जा रहा है जिसमें 1993 से लेकर वर्ष 2017 तक के सभी प्राइवेट सेक्टर में दिए गए बिजली निगमों व डिस्ट्रीब्यूशन फेंचाइजी को के रूप में दिए गए बिजली निगमों की गहन समीक्षा के आधार पर कुछ तथ्य सरकार के सामने पेश कर रहा है 1993 में नोएडा पावर कंपनी उत्तर प्रदेश में प्राइवेट सेक्टर में दी गई जो हमेशा से विवादों में रही और अंततः आज भी उत्तर प्रदेश सरकार सुप्रीम कोर्ट में उसके लाइसेंस को खत्म करने की याचिका दाखिल का लडाई लड रही है वहीं 1999 में उडीसा में 3 बिजली कंपनियों को बीएसईएस रिलायंस को दिया गया और एक कंपनी को एईस एवम ज्योति इंफ्रास्ट्रक्चर को दिया गया सभी फेल साबित हुए और अंततः उनका लाइसेंस टर्मिनेट करना पडा इसी प्रकार से 2012 में सागर में एक फेंचाइजी एस्सेल को दी गई जलगांव में 2011 में एक फेंचाइजी क्रैंपटन ग्रीव्स को दी गई 2014 में उज्जैन में एक फेंचाइजी एस्सेल को दी गई और औरंगाबाद में 2011 में एक फेंचाइजी जीटीएल को दी गई मुजफ्फरपुर में एक फेंचाइजी एस्सेल को दी गई गया में एक फैंकोइस 2014 में इंडिया पावर को दी गई भागलपुर में एक फेंचाइजी एसपीएमएल इंफ्रा को दी गई नागपुर में एक फेंचाइजी 2011 में एसनपीएल को दी गई और सभी के लाइसेंस को टर्मिनेट और रेवोक करना पडा यानी निजी क्षेत्र के सभी वितरण फेंचाइजी को निरस्त अथवा टर्मिनेट करना पडा।

■ **मुख्यमंत्री से की हस्तक्षेप की मांग**

अनुयायियों ने सुनाए गए मसीह गीत

दया के घर द्वारा क्रिसमस मीटिंग का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। बेतहसदा फैलोशिप ट्रस्ट की ओर से क्रिसमस सेलिब्रेशन वीक के क्रम मे शुक्रवार को घूरामऊ में क्रिसमस का आयोजन किया गया है। इस क्रिसमस मीटिंग्स के लिए विशेष रूप से पास्टर रवि किरन को और पास्टर करुणा कर्ण को आमंत्रित किया गया है। बिशप आर.सी. शेत के अनुसार 20 को क्रिसमस मीटिंग जहां घूरामऊ लखनऊ में हुई वहीं इसी क्रम में यह आयोजन दया का घर में भी होंगे। कल 22 को ओगरापुर बंथरा मे 23 दिसम्बर को गोडवा लखनऊ में क्रिसमस को मनाया जायेंगा।

घूरामऊ मोहन में दया के घर चर्च द्वारा क्रिसमस पर्व का जोरदार आगाज किया गया। इसमें बड़ी संख्या में अनुयायियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। समारोह में संगीत दल ने मनभावन यीशु मसीह के गीत गाए गए और परमेश्वर के नाम की महिमा का गुणगान भी किया। मसीह गीत आया है यीशु आया है, मुक्त ले साथ आया, शोर दुनिया में ये हो गया आज पैदा मसीह हो गया÷का आनंद अनुयायियों ने सबसे ज्यादा लिया। इस अवसर पर सुनील भाई रामबाबू भाई निर्मल भाई भीमराव, पास्टर सुंदर ,सुमन, पास्टर अजय, पास्टर राजेश,पास्टर विनोद, पास्टर रामचंद्र,पास्टर मयंक डेविड,बिशप आर.सी. शेत ने यीशु मसीह के जीवन पर प्रकाश डाला।

ग्रामीण क्षेत्रों में आरपीएलआई निवेशकों की पहली पसंद

अवधनामा संवाददाता

रायबरेली। भारतीय डाक विभाग की सभी सेवाएं निवेशकों को खूब भा रही हैं , क्योंकि इसमें अधिक बोनस मिलने पर भी कम प्रीमियम जमा करना होता है। इसके साथ ही यह सभी योजनाएं भारत सरकार, भारतीय डाक विभाग की हैं जिसमें सभी की पूर्ण विश्वसनीयता है। रायबरेली डाक मंडल ने हर महा लॉगिन पर भारी मात्रा में ग्राहकों को जोड़ा है जिससे स्पष्ट है कि डाक विभाग लोगों की खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले ग्राहकों की पहली पसंद है। ड्राइव में उत्कृष्ट कार्य करने वाले श्री राज नारायण रालपुर शाखा डाकघर प्रीमियम -174411,सुश्री शिवानी पाण्डेय बभनपुर शाखा डाकघर प्रीमियम -44167, श्री संतराम श्रीवास्तव मीठापुर शाखा डाकघर प्रीमियम -30942 रायबरेली का कुल प्रीमियम जमा 863690 हुआ। उक्त उद्गार रायबरेली मंडल के अधीक्षक डाकघर अजय प्रकाश अस्थाना ने रायबरेली के कुल निवेश राशि में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि प्रत्येक नागरिक को इसका लाभ मिले और आजके दौर में हर व्यक्ति अपने आपको बेहतर रिटर्न के साथ ही सुरक्षित भी कर सके इसके लिए विभाग कटिबद्ध होकर हर व्यक्ति को इस योजना से आच्छादित करने का प्रयास अपने गांव गांव स्थित 392 शाखा डाकघरों द्वारा कर रहा है। डाक विभाग द्वारा सुकन्या समृद्धि योजना के भी खाते खोले जा रहे हैं जो सबसे अधिक ब्याजदर के साथ ही आयकर में छूट भी देते हैं जिसकी सरकार की महिला सशक्तिकरण अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका है।

■ **इस बार महालॉगिन में रायबरेली को पूरे लखनऊ परिक्षेत्र में प्रथम स्थान**

प्रतिभागी छात्रों ने बहुमुखी प्रतिभा की छाप छोड़ी

इण्टरनेशनल स्पोर्टस, आर्टस एण्ड म्यूजिक प्रतियोगिता 'सैम-2024' का दूसरा दिन

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, इन्दिरा नगर द्वितीय कैम्पस एवं अयोध्या रोड कैम्पस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पाँच दिवसीय इण्टरनेशनल स्पोर्टस, आर्टस एण्ड म्यूजिक प्रतियोगिता (सैम-2024) के दूसरे दिन आज नेपाल, श्रीलंका एवं देश के विभिन्न राज्यों से पधारे प्रतिभागी छात्रों ने विभिन्न रोचक व ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं के माध्यम से न सिर्फ अपने ज्ञान-विज्ञान व कलात्मक प्रतिभा का जोरदार प्रदर्शन किया अपितु एक-दूसरे के साथ अपने विचारों को भी साझा करते हुए विभिन्न देशों की संस्कृति व सभ्यता से भी रूबरू हुए। विदित हो कि सैम-2024 का आयोजन 19 से 23 दिसम्बर तक सी.एम.एस. कानपुर रोड ऑडिटोरियम में किया जा रहा है।

सैम-2024 के अन्तर्गत प्रतियोगिताओं का सिलसिला आज जूनियर वर्ग की सैम क्विजर्स से हुआ। प्रतियोगिता के प्रारम्भिक राउण्ड के उपरान्त 10 चयनित टीमों ने फाइनल राउण्ड में भाग लिया, जिसमें खेलकूद, कला व संगीत से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये। प्रतिभागी छात्रों ने बिजली की गति से प्रश्नों के जवाब देकर अपने ज्ञान-विज्ञान का जोरदार प्रदर्शन किया। आज आयोजित सैम कुजीन कानसर्स (फायरलेस कुकिंग) प्रतियोगिता भी अत्यन्त आकर्षक रही, जिसमें देश-विदेश के प्रतिभागी छात्रों ने 'टेस्ट बड्स ऑन टूर - ए ब्लेंड ऑफ टू ग्लोबल कुजीन्स' थीम पर खानपान की रुचि का प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्रों ने विभिन्न देशों के लोकप्रिय व्यंजन को तैयार कर बहुत ही रचनात्मक तरीके से उनका प्रस्तुतिकरण किया एवं साथ ही निर्णायक मण्डल द्वारा पूछे गये सवालों का जवाब दिया। प्रतिभागी छात्रों ने अपनी रचनात्मक सोच व हुनर से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इसी प्रकार सैम ग्राफ्टिर्स (डूडल) प्रतियोगिता में जूनियर व सीनियर वर्ग के प्रतिभागी छात्रों ने एक से बढ़कर एक शानदार डूडल बनाकर अपनी बौद्धिक प्रतिभा व कलात्मक प्रतिभा का आलोक बिखेरा। सैम मेलोडी मैस्ट्रो (वाद्ययंत्र) प्रतियोगिता भी आज के विशेष आकर्षण का केन्द्र रही, जिसमें प्रतिभागी छात्रों ने पुरानी चीजों को वाद्ययंत्रों के रूप में ढ़ालकर अपनी संगीत प्रतिभा का लोहा मनवाया। इस प्रतियोगिता में देश-विदेश की 17 छात्र टीमों ने प्रतिभाग किया।

सी.एम.एस. के हेड, कम्युनिकेशन्स श्री ऋषि खन्ना ने बताया कि सैम-2024 के अन्तर्गत प्रतियोगिताओं का दौर कल 21 दिसम्बर को भी जारी रहेगा। कल आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में सैम क्विजर्स (क्विज), सैम कान्क्लेव, सैम स्कल्पटर्स (3डी मॉडल मेकिंग), सैम मेलिफ्लुअस मार्शल्स (मार्शल आर्ट) आदि प्रमुख है।

'इण्डिया फिट एण्ड यंग' बाल खिलाड़ियों ने दिया संदेश

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, राजेन्द्र नगर प्रथम कैम्पस द्वारा दो-दिवसीय अन्तर-विद्यालयी खेलकूद समारोह 'फन-ए-थॉन' का शुभारम्भ आज बड़े ही भव्य स्तर पर विद्यालय के खेल मैदान में हुआ। इस खेल समारोह में लखनऊ के विभिन्न विद्यालयों के मान्टेसरी से लेकर कक्षा-2 तक के छात्रों ने बड़े उत्साह से प्रतिभाग कर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में चुस्ती-फुर्ती, दमखम व कला-कौशल का भरपूर प्रदर्शन कर 'इण्डिया फिट एण्ड यंग' का सन्देश दिया, तो वहीं दूसरी ओर उद्घाटन समारोह में विद्यालय के छात्रों ने शिक्षात्मक-साँस्कृतिक कार्यक्रमों के शानदार प्रदर्शन से सभी का दिल जीत लिया। इससे पहले, मुख्य अतिथि सुमन देवी, अन्तर्राष्ट्रीय एथलीट एवं कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट, भारत सरकार एवं श्रीमती चित्रा वेंकटरमण, को-फाउण्डर एवं डायरेक्टर, एटीआईपीएल, ने मशाल प्रज्वलित कर खेल प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में मुख्य अतिथि सुश्री सुमन देवी ने कहा कि भावी पीढ़ी में उच्च जीवन मूल्यों के विकास में खेलों की अहम भूमिका है।

जेल में निरूद्ध गैंगलीडर ने किया विषाक्त का सेवन

■ जिला अस्पताल में कराया गया भर्ती, उपचार जारी

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। जिला कारागार में निरूद्ध बन्दी को शुक्रवार की सुबह जिला अस्पताल में उपचार के लिए दाखिल कराया गया। अस्पताल में प्राथमिक उपचार के दौरान पाया गया कि बन्दी ने किसी विषाक्त पदार्थ का सेवन किया है, जिससे उसकी हालत बिगड़ गयी। सूचना मिलने पर पुलिस महकमे के अधिकारियों ने अस्पताल पहुंचकर घटना की जानकारी ली। विषाक्त पदार्थ का सेवन करने वाला बंदी गैंगस्टर एक्ट समेत कई मामले दर्ज होना बताया जा रहा है। शुक्रवार की सुबह जिला कारागार में निरूद्ध शहर के मोहल्ला लक्ष्मीपुरा निवासी करीब 22 वर्षीय मुक्कू राजा उर्फ यशराजा पुत्र भगवान सिंह लम्बे समय से जिला कारागार में निरूद्ध है। मुक्कू राजा के खिलाफ धोखाधड़ी, डकैती की मंशा से चोट पहुंचाने और चोरी का सामान बरामद होने जैसे संगीन मामलों के अलावा गैंगस्टर जैसे मामले दर्ज हैं। वर्ष 2024 के शुरू होते ही गैंगस्टर एक्ट के तहत मुक्कू राजा को उसके साथियों में सक्रिय सदस्य ग्राम मऊमाफी निवासी प्राण सिंह कबूतरा पुत्र रज्जन और ग्राम बम्हौरी नांगल निवासी राजा सिंह पुत्र रामसिंह यादव के साथ जेल भेजा गया था। शुक्रवार की सुबह मुक्कू राजा द्वारा विषाक्त पदार्थ का सेवन कर लेने की घटना के बाद जेल प्रशासन में हड़कम्प मच गया। वहीं दूसरी ओर जेल प्रशासन द्वारा आलाधिकारियों को भी घटनाक्रम की सूचना दी। हालत बिगडने पर आनन-फानन में मुक्कू राजा को जिला अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया, जहां चिकित्सकों द्वारा मुक्कू राजा का उपचार शुरू कर दिया गया था।

घटनाओं को ऐसे अंजाम देता था मुक्कू राजा: एक जनवरी 2024 को तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक कोतवाली शशिभूषण सिंह ने मुक्कू राजा, प्राण सिंह व राजा सिंह के खिलाफ गैंगस्टर की धारा 2/3 के तहत कार्यवाही करते हुये दर्ज एफआईआर में अंकित कराया गया था कि 10 जुलाई 2023 को अपराह्न करीब 2.16 बजे महरौनी के ग्राम पड़वा निवासी राहुल अहिरवार पुत्र हीरालाल ने गैंग लीडर मुक्कू राजा व उसके साथियों में प्राण सिंह व राजा सिंह के खिलाफ धारा 392 के तहत एफआईआर दर्ज की गयी थी। यह भी अंकित किया गया कि मुक्कू राजा अपने साथियों के साथ आमजनता के साथ साजिश के तहत लोगों को अपनी मोटर साइकिल पर बैठाकर कुछ दूर बाद गाड़ी रोककर चाकू अड़ाकर रुपये लूटने का अभ्यस्त अपराधी हैं।

संत गाडगे के परिनिर्वाण दिवस पर भावपूर्ण स्मरण

मथुरा। अखिल भारतीय समता फाउंडेशन जनपद मथुरा कैंप कार्यालय कृष्णा नगर बिजली घर मथुरा पर बहुजन महापुरुष महान समाज सुधारक पराधीन भारत में स्वच्छता अभियान के जनक शिक्षा के अग्रदूत अंबेडकर अनुयाई संत गाडगे जी महाराज के 68 वें परिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर समाजसेवी रमेश सैनी अध्यक्ष महात्मा ज्योतिराव फुले विकास समिति मथुरा ने संत गाडगे के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डाला और बताया वे स्वच्छता, समानता, स्वतंत्रता, भाईचारा एवं शिक्षा को मनुष्य के लिए आवश्यक बताते थे साथ कहते थे, आधी रोटी खाओ पर बच्चों को पढ़ाओ, ऐसे प्रेरक विचार रखते थे संत गाडगे उन्होंने अपने जीवन में 31 से ज्यादा शिक्षण संस्थानों की स्थापना की, सैकड़ो घाट, धर्मशालाएं मानव कल्याण के लिए बनाई आज भी भारतीय समाज में उनके विचार प्रासंगिक हैं। श्रद्धांजलि देने वालों में लुकेश कुमार राही, महेंद्र पाल सिंह, जितेंद्र दिवाकर,तरुण कनौजिया, सौदान सिंह, नरेश सर, आकाश बाबू, शैलेंद्र कुमार आदि मौजूद रहे।

मासिक धर्म की पहली शिक्षिका है मां

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के पत्रकरिता विभाग की शोधार्थी नीतिका अंबस्ता को डॉक्टर रुचिता सुजय चौधरी के मार्गदर्शन में उनके शोध विषय ग्रामीण किशोरियों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मध्यस्थ संचार की समझ पर शोध डिग्री अवार्ड की गई।

नीतिका अम्बष्ट ने अपने थीसिस में मासिक धर्म जैसे उपेक्षित किन्तु अनिवार्य विषय का अध्ययन किया और अपने व्यापक शोध और विश्लेषण के माध्यम से कई अहम तथ्यों को सामने लाया। कुल मिलाकर यह अध्ययन ग्रामीण किशोर लड़कियों के बीच मासिक धर्म के बारे में जागरूकता पैदा करने में मध्यस्थ संचार की भूमिका को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन मासिक धर्म से संबंधित प्रचलित मिथकों को दर्शाता है जैसे मासिक धर्म के दौरान पूजा करने की अनुमति नहीं होना, अचार छूने की अनुमति नहीं होना आदि। यह शोध बताता है कि मास मीडिया में टेलीविजन विज्ञापन ग्रामीण किशोरियों के बीच मासिक धर्म से संबंधित जानकारी का सबसे बड़ा स्रोत है, इसके बाद समाचार पत्र और इंटरनेट हैं। इस अध्ययन में मासिक धर्म के बारे में जागरूकता पैदा करने में रेडियो की भूमिका लगभग नगण्य बताई गई जबकि रेडियो ग्रामीण किशोरियों तथा किशोरियों की माताओं तक में मासिक धर्म से संबंधित स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जानकारी प्रसारित करने का एक बहुत ही प्रभावी माध्यम हो सकता है। ज्यादातर लड़कियां फिल्म पैडमैन देख चुकी है और फिल्म की कहानी से काफी संतुष्ट है फिर भी मासिक धर्म पर चर्चा करने से मनाही है। खासकर परिवार के पुरुष सदस्यों की उपस्थिति में अधिकांश लड़कियां मासिक धर्म से संबंधित कोई भी चीज देखने में शर्म महसूस करती हैं। व्यक्तिगत रूप से मां मासिक धर्म से संबंधित जानकारी का प्राथमिक स्रोत है। लड़कियों के एक बड़े हिस्से 46.5 प्रतिशत के पास मीडिया से जानकारी का कोई स्रोत नहीं है। केवल 42. 5 प्रतिशत लड़कियां ही मासिक धर्म के बारे में जागरूक करने में मीडिया की भूमिका से संतुष्ट हैं और 68. 25 प्रतिशत लड़कियां सूचना के स्रोत के रूप में व्यक्ति विशेष रूप से मां बहन और दोस्त की भूमिका से खुश हैं।

फार्मासिस्टों ने समस्याओं को लेकर किया धरना प्रदर्शन

अवधनामा संवाददाता

■ डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन ने सीएम को भेजा ज्ञापन

ललितपुर। डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन उ.प्र. के प्रान्तीय आव्हान पर जनपद शाखा द्वारा जिलाध्यक्ष पवन कुमार रिछारिया एवं जिलामंत्री जी.एल. गौतम के नेतृत्व में समस्त फार्मासिस्टों द्वारा उनकी मांगों के संबंध में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कर्मचारी शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष हेमन्त तिवारी एवं संयोजन जी.एल. गौतम, राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद जिलाध्यक्ष हरिहर नारायण तिवारी एवं मंत्री कमलेश कुमार, राजकीय शिक्षक संघ के मुकेश कुमार, माध्यमिक शिक्षक संघ के जे. के. वैद्य सहित जनपद के अनेक शिक्षकों एवं कर्मचारियों के माध्यम से संघ के पदाधिकारियों ने फार्मासिस्टों की मांगों के समर्थन में अपना नैतिक समर्थन देते हुए मुख्यमंत्री से 24 सूत्रीय मांगों को शीघ्र पूर्ण किये जाने का आह्वान करते हुये अन्यथा की स्थिति में डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के आगामी कार्यक्रमों में प्रदेश के समस्त शिक्षक एवं कर्मचारी भी आन्दोलन करने के लिए बाध्यता जतायी। इस दौरान फार्मासिस्ट यशपाल सिंह, महेश चन्द्र साहू, विजय कुमार वर्मा, उमाकांत कुशवाहा, मोहन कुमार, राजेश श्रीवास्तव, कमलदीप सिंह, विनोद विश्वकर्मा, अरुण कुमार, अरूण प्रताप सिंह, जितेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार (कोषाध्यक्ष नियमित वर्कचार्ज कर्मचारी संघ) द्वारा मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सौंपा गया।

पटउवा गांव से देशी शराब की दुकान हटाने की मांग

ललितपुर। थाना पाली क्षेत्र के ग्राम पटउवा से देशी शराब का ठेका हटाये जाने की मांग को लेकर भाकियू भानु ने कलेक्ट्रेट परिसर में प्रदर्शन करते हुये एक ज्ञापन जिलाधिकारी को भेजा है। ज्ञापन में किसान नेता कीरत सिंह ने बताया कि ग्राम पटउवा में महिला किसान-मजदूर और नारी शक्ति ने देशी शराब के ठेके को हटाये जाने की आवाज को बुलंद किया है। उन्होंने बताया कि गांव के लोग शराब पीकर लड़ाई-झगड़ा करते हैं और महिलाओं से मारपीट करते हैं। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि महिलाओं को रोटी-कपड़ा और बच्चों को शिक्षा से वंचित होना पड़ रहा है। बताया कि सरकारी राशन की दुकान से मिलने वाले खाद्यान्न को यहां के लोग शराब पीने के लिए बेच देते हैं और शराब पीकर हंगामा करते हैं। आगे बताया कि देशी शराब की दुकान के रास्ते में मंदिर, विद्यालय इत्यादि पड़ते हैं, जिस कारण श्रद्धालु व बच्चे विद्यालय जाने के लिए परेशान होते हैं। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से गांव की देशी शराब की दुकान हटाये जाने की मांग उठाते हुये अन्यथा की स्थिति में जनांदोलन करने की चेतावनी दी है। ज्ञापन देते समय राजेन्द्र सिंह, शिशुपाल सिंह, कीरत सिंह, ग्यासी, पुक्खन सिंह, मुकुन्द सिंह, जयहिंद सिंह, राजकुमार इमरती, माया, रूपा, देशकुमारी, पुष्पा, हन्नू के अलावा अनेकों ग्रामीण मौजूद रहे।

अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत

■ जनपद स्तरीय निबंध भाषण एवं काव्य पाठ प्रतियोगिताएं संपन्न

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। नगर के रघुवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय में भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस कार्यक्रम/सुशासन सप्ताह के अंतर्गत जिला स्तरीय निबंध भाषण एवं काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम के सह समन्वयक उच्च शिक्षा विभाग जनपद ललितपुर के नोडल अधिकारी प्राचार्य प्रो. केशव देव ने अटल जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया किया।तत्पश्चात प्रतियोगिताएं प्रारंभ की गई। प्रतियोगिता में तहसील स्तर पर चयनित प्रतिभागियों ने प्रतिभा किया। निबंध प्रतियोगिता में डॉ. अर्चना सूरोठिया,, डॉ. गजेंद्र नाथ तथा डॉ. अखिलेश कुमार बबेले निर्णायक रहे। भाषण प्रतियोगिता में श्री जयशंकर प्रसाद दुबे, डॉ. रोहित कुमार जैन, डॉ. करुणाकर शर्मा निर्णायक रहे जबकि एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता में श्री दिनेश चंद्र, डॉ. स्वीकृति सिंह तथा डॉ. रोशन सिंह निर्णायक रहे। भाषण तथा निबंध प्रतियोगिता का विषय अटल जी एवं सुशासन÷ जबकि एकल का प्रतियोगिता का विषय ÷अटल जी का जीवन एवं उनकी कविताएं÷ रहा।निबंध प्रतियोगिता में आकृति तिवारी, सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज महरौनी ने प्रथम ज्योति कुशवाहा, नगर पालिका बालिका इंटर कॉलेज ललितपुर ने द्वितीय तथा राजवीर गंधर्व, महिपाल मेमोरियल इंटर कॉलेज मड़ावरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

भाषण प्रतियोगिता में अंशिका तिवारी, रघुवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय ललितपुर ने प्रथम महक राजा, नेहरू महाविद्यालय ललितपुर ने द्वितीय तथा सिद्धि जैन, भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन, महर्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एकल पाठ प्रतियोगिता में प्रिंसी दुबे, नेहरू महाविद्यालय ललितपुर ने प्रथम रोशनी, रघुवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय ललितपुर ने द्वितीय तथा नम्रता नायक, के.पी.एस. डिग्री कॉलेज, ककरुआ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।विजयी प्रतिभागियों को सुशासन दिवस के अवसर पर दिनांक 25 दिसंबर को विकास भवन ललितपुर के सभागार में जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित वक्ताओं ने विकसित भारत एवं सुशासन की स्थापना में अटल जी के योगदान को याद किया तथा उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम में श्रीमती अनुराधा, डॉ संजीव कुमार, बारीष कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार डॉ बृजेंद्र सिंह अमित कुमार, आकिब, बलराम, आदि उपस्थित रहे।। अंत प्रतियोगिता संयोजक डॉ. रीतेश कुमार खरे ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त समाचार

जामा मस्जिद मे नमाज-ए-जुम्मा शांति पूर्वक संपन्न

संभल। संभल की ऐतिहासिक शाही जामा मस्जिद मे नमाज ए जुम्मा शांति पूर्वक संपन्न हुई नमाज के दौरान मस्जिद के आसपास भारी संख्या में पुलिस मौजूद रही संभल की ऐतिहासिक शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा के बाद से संभल की ऐतिहासिक शाही जामा मस्जिद मे जुम्मे की नमाज शांति पूर्वक संपन्न करने के लिए पुलिस प्रशासन द्वारा कढी सुरक्षा व्यवस्था की जा रही है संभल की ऐतिहासिक शाही जामा मस्जिद मे जुम्मे की नमाज अदा करने के लिए भारी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग आ रहे है इसी के कारण पुलिस प्रशासन भी तैयारी के साथ नमाज शांति पूर्वक संपन्न करने के लिए मौजूद रहता है

एएसआई की टीम ने किया सर्वेक्षण

संभल। संभल मे 68 तीर्थो व 19 घर्म कूप पौराणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है जिनका अपना अलग इतिहास है संभल मे बीते दिन वर्षो से बन्द मंदिर को पुलिस द्वारा खोला गया तो वहॉ हिन्दू समाज के लोगो ने पूजा अर्चना शुरू की शहर के मुहल्ला खग्गू सराय मे स्थित मंदिर मुस्लिम आबादी के बीच में है जिसमें वर्षो से पूजा अर्चना नहीं की गई थी मंदिर के पास ही एक कुआ है जिसको पाट दिया गया था पुलिस प्रशासन ने इसको दोबार से खुदवाया है मंदिर के आसपास अवैध कब्जो को भी हटवाया गया है आज संभल मे एएसआई की चार सदस्यों की टीम ने सर्वे किया इस संबंध में जिलाधिकारी डॉक्टर राजेन्द्र पेसिया ने बताया कि संभल मे 5 तीर्थो और 19 कुओ का सर्वे किया गया सर्वे टीम की ने लगभग आठ दस घंटे सर्वे की कार्यवाही की जिलाधिकारी ने बताया कि जो प्राचीन मंदिर खुला है उसका भी सर्वेक्षण किया गया है ए एस आई की टीम अपनी रिपोर्ट हमे सौपगी बताया गया है कि कुल 24 क्षेत्रो का सर्वेक्षण किया गया है

जुम्मे की नमाज व कानून व्यवस्था एवं शान्ति व्यवस्था के दृष्टिगत पुलिस प्रशासन ने गशत किया

संभल। जिलाधिकारी सम्भल डा0 राजेन्द्र पैंसिया व पुलिस अधीक्षक जनपद सम्भल कृष्ण कुमार द्वारा पुलिस बल के साथ शुक्रवार जुम्मे की नमाज व कानून एवं शान्ति व्यवस्था के दृष्टिगत कस्बा सम्भल में बाजारों, मुख्य मार्गो, भीड-भाड़ आदि स्थानों पर पैदल गस्त की गयी। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक (उत्तरी) श्रीश्चन्द्र, उपजिलाधिकारी सम्भल, क्षेत्राधिकारी सम्भल अनुज चौधरी आदि अधिकारीगण मौजूद रहे।

कांग्रेस नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित की

ललितपुर। गोरखपुर निवासी यूथ कांग्रेस नेता प्रभात पांडे बीती 18 दिसंबर को उत्तर प्रदेश कांग्रेस के विधानसभा घेराव के आवाहन पर लखनऊ पहुंचे थे, जिसमे घेराव के दौरान पुलिस बर्बरता से उनकी मृत्यु हुई। वहीं असम मे सरकार के विरोध प्रदर्शन कर रहे कांग्रेस नेता मृदुल इस्लाम जी की मौत हो गयी। शहीद हुये युवा नेताओं को श्रद्धांजलि देने के लिए यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष अंकित यादव की अध्यक्षता में ललितपुर घंटाघर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की प्रतिमा नीचे शहीद हुए दोनों कांग्रेस नेताओं को मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

ब्रज के प्राचीन कुंडों का जल होगा अब आचमन योग्य

मथुरा। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के साक्षी कहे जाने वाले ब्रज के प्राचीन कुंडों का जल अब आचमन योग्य होगा। उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद की पहल पर ब्रज के प्राचीन कुंडों के जल की गुणवता को सुधारने के लिए इस्कॉन और टाटा ग्रुप काम करने जा रहे हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के स्पेस डाटा के अनुसार मथुरा जनपद में 2052 जल निकाय मौजूद हैं। इनमें से 288 कुंडों के रूप में सामने आए हैं। इस स्पेस डाटा पर किए गए फील्ड सर्वे में 213 कुंड मौके पर मौजूद मिले हैं। इसमें अधिकांश देखरेख के अभाव में जीर्णशीर्ण अवस्था में थे। इन कुंडों के जल की गुणवत्ता भी ठीक नहीं है। इनका धार्मिक और इतिहासिक महत्व होने के कारण यहाँ श्रद्धालु भी पहुंचते हैं। उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा इनमें से दो दर्जन प्राचीन कुंडों का पुनरोद्धार कराया गया है। यह प्रक्रिया निरंतर जारी है।

आउट सोर्सिंग कर्मियों ने समय से वेतन दिलाने की उठायी मांग

■ लामबंद होकर डीएम के नाम सौंपा ज्ञापन

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। जिला अस्पताल में विगत कई वर्षो से आउट सोर्सिंग पर तैनात महिला व पुरुष कर्मचारियों ने लामबंद होकर जिलाधिकारी को एक ज्ञापन भेजा है। ज्ञापन के जरिए कर्मचारियों ने समय से वेतन दिलाये जाने और वेतन में वृद्धि किये जाने की मांग उठायी है। ज्ञापन में बताया कि सभी कर्मचारी पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से अपने काम को अंजाम दे रहे हैं। बताया कि कर्मचारियों की समय पर वेतन नहीं दी जा रही है। बताया कि शासनादेश के अनुसार 1 से 7 तारीख तक प्रत्येक दशा में कर्मचारियों की वेतन देने का प्रावधान है, किन्तु मेडीकल कॉलेज के बाबुओं और कर्मचारियों की लापरवाही के चलते समय पर वेतन निर्गत नहीं की जा रही है, जिससे संविदा कर्मियों को परेशानियां उठानी पड़ रहीं हैं। बताया कि इस सम्बन्ध में पूर्व में विभागीय अधिकारियों को समय से वेतन दिलाये जाने और वेतन बृद्धि को लेकर पत्र दे चुके हैं। बावजूद इसके आज तक कोई सुनवाई नहीं की गयी। आउट सोर्सिंग कर्मचारियों ने जिला प्रशासन से समय से वेतन दिलाये जाने की मांग उठायी है। ज्ञापन देते समय खुशाल, आकाश राजपूत, दीपेश सिंह, विजय वर्मा, अमित पंथ, आशीष पुलैया, रिषभ सोनी, रमाशंकर, गोविन्द, अमित दीक्षित, सुनील, ममता, ममता सेन, मनीषा, जितेन्द्र शहरदार, आशीष पंथ, अखिलेश, दिलीप के अलावा अनेकों कर्मचारी मौजूद रहे।

कान्हा माखन मिलिनियम स्कूल का वार्षिकोत्सव शुरू

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। कान्हा माखन विद्यालय परिवार द्वारा विद्यालय की ओमेक्स, वृन्दावन शाखा के सफलतापूर्वक प्रथम वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष में ÷अमरत्या÷ वार्षिकोत्सव का आयोजन कान्हा माखन मिलिनियम स्कूल, ओमेक्स, वृन्दावन में आयोजित कर रहा है। वार्षिक उत्सव में लगभग एक हजार छात्र-छात्राएँ अपनी रंगारंग प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कर कला प्रतिभा का परिचय दिया। विद्यालय में नृत्य व संगीत के माध्यम से समाज से जनता तक पहुँचने का प्रयास बनाने का यथोचित प्रयास किया गया है। जैसे- गणेश वन्दना, सुरिली बरसात, ध्यान की धुन, मेरा नाम जोकर एवं वेस्टर्न डांस इत्यादि के माध्यम से नृत्य शैली व विशेष संस्कृति का परिचय, सुर-ताल, राग नृत्य से संगीत के सुरों का ज्ञान के द्वारा हिन्दु देवी देवताओं के प्रति आस्था प्रदर्शित की गई एवं बच्चों अनेकों मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये एवं विद्यालय की उपलब्धियों का सारांश प्रदर्शित किया गया तथा विद्यालय में गतवर्षो में किये गए कार्यक्रमों की एक झझलक भी दर्शायी गयी है। कार्यक्रम की श्रृंखला में इंद्रेश महाराज, कीर्ति किशोरी, अनन्त विरयादास (अक्षयपात्र), एच.जी. पंचागुदा प्रभु (अध्यक्ष इस्कॉन टेम्पल वी.बी.एन.), डॉ0 अरविन्द कुमार (एस.पी. सिटी, मथुरा), पूजा सिंह (आर.टी.ओ. मथुरा), संजय गोस्वामी (सेवा अधिकारी राधा बल्लभ मन्दिर), डॉ0 हेमन्त जास, श्रीमति आशा, प्रशान्त, श्रीमति मीरा, ललित (केशव धाम), रामकिशन अग्रवाल (बसेरा वाले), डॉ0 अमित गुप्ता एण्ड योगिता गुप्ता (आर. के. एम.एस.) एवं कमलेश कुमार पाण्डेय (असिस्टेंट कमिश्नर जीएसटी) इत्यादि गणमान्य विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु उपस्थित रहे।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन संपन्न

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। उत्तर प्रदेश पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा के जीव रसायन विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अनिल कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बताया कि जीव रसायन एवं जैव प्रौद्योगिकी का खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में अहम योगदान है। समाज एवं देश में खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराने में जीव रसायन एवं जैव प्रौद्योगिकी अहम भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने बताया कि पशुओं के विभिन्न उत्पाद जैसे दूध, दही, घी, अंडा, मांस आदि के प्रयोग से शरीर में होने वाली विभिन्न पोषक तत्वों की कमी को पूर्ण कर, हम स्वस्थ मानव शक्ति तथा स्वस्थ समाज के स्थापना कर सकते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ जे. के. जीना ने बताया कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को संतुलित आहार मिलना अत्यंत आवश्यक है। जिससे वह व्यक्ति अपने कर्तव्यों का भली बात निर्वहन कर सके। हमारा देश, विश्व में दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है किंतु जनसंख्या के अनुसार प्रति व्यक्ति दुग्ध की उपलब्धता काफी कम है ?। जिसके लिए अच्छी उत्पादकता वाले पशुओं का होना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक ने बताया की होम्योपैथिक दवाइयां अब पशुओं के इलाज में प्रयोग की जा रही है तथा इसका अच्छा परिणाम भी मिल रहा है। होम्योपैथिक दवाइयां का पशुओं में और अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय जीव रसायन संगठन के अध्यक्ष डॉ. बी. पी. मोहती ने संगठन की संरचना एवं उसके कार्य शैली के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर संगठन के महासचिव डॉक्टर सुभाषिस बतबयाल ने संगठन द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठी एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी। आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर विकास पाठक, अधिष्ठाता पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय ने बताया कि खाद्यान्नों में पशुधन से प्राप्त होने वाले उत्पादों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बताया कि दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में पशुधन के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान तथा जैव प्रौद्योगिकी के समुचित प्रयोग से खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। इस अवसर पर प्रोफेसर पंकज कुमार शुक्ला, प्रोफेसर अरुण कुमार मदान, डॉ नित्यानंद पांडे, प्रोफेसर सरबजीत यादव, प्रोफेसर देश दीपक सिंह, प्रोफेसर अतुल प्रकाश, प्रोफेसर बृजेश यादव, प्रोफेसर अमित सिंह सहित विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक अधिकारी, कर्मचारी तथा परास्नातक छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

22 परीक्षा केन्द्रों पर 9006 परीक्षार्थी देंगे पीसीएस परीक्षा

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज द्वारा 22 दिसम्बर को जिले के 22 परीक्षा केन्द्रों पर 9006 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। ये सभी परीक्षा केन्द्र एडेड विद्यालय व सरकारी कालेज हैं। जिला विद्यालय निरीक्षक रवीन्द्र सिंह ने बताया कि मथुरा महानगर के जवाहर विद्यालय इंटर कालेज, डीएवी इंटर कालेज मसानी तिराहा, महाराजा गर्ल्स इंटर कालेज डोरी बाजार, प्रेम देवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कालेज नया बस अड्डा, केआर इंटर कालेज भरतपुर गेट जंक्षन रोड, केआर गर्ल्स इंटर कालेज भैंस बहोरा, लक्ष्मण प्रसाद चतुर्वेद आर्य कन्या इंटर कालेज आर्य समाज रोड, बीडीपी राजकीय इंटर कालेज जनरल गंज, चमेली देवी खंडेलवाल गर्ल्स इंटर कालेज वृंदावन गेट, चम्पा अग्रवाल इंटर कालेज कोतवाली रोड, केआर पीजी कालेज, पीएमवी पाली टेक्निक वृंदावन रोड, सेठ बीएन पोद्दयार इंटर कालेज कैंट रेलवे स्टेशन के पास, सुभाष इंटर कालेज जनरल गंज, आएसीए गर्ल्स डिग्री कालेज मसानी तिराहा, वृंदावन नगर के श्री वृंदावन विद्या पीठ इंटर कालेज गांधी मार्ग, हजारी मल सौमानी नगर निगम इंटर कालेज, राजकीय औद्यौगिक प्रशिक्षण संस्थान वृंदावन मथुरा रोड, महावन में श्री गुरु कार्ष्णि इंटर कालेज रमनरेती मार्ग, जैंत के पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय माडल इंटर कालेज कृष्णलोक कालोनी, पं. दीन दयाल उपाध्याय राजकीय कन्या इंटर कालेज फरह को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है।

सामुदायिक स्वास्थ केंद्र फरह चढ़ा भ्रष्टाचार की भेट

अवधनामा संवाददाता

■ हिलाओ से नार्मल डिलेवरी करने पर सीएचसी मे लिए जा रह ढाई से पांच हजार रूपये

फरह (मथुरा)। सरकारी सस्थान दफ़्तर विभाग हर जगह भ्रष्टाचार सर चढ़ बोल रहा है ऐसा ही भ्रष्टाचार का मामला सामुदायिक स्वस्थ केंद्र फरह मे सामने आया है जहा महिलाओ की नार्मल डिलेवरी करने की बात बता कर आशा बहनो की साठगाँठ मिली भगत से नार्मल डिलेवरी का झांसा देकर डिलेवरी को आयी महिलाओ के पति परिजनों से प्रसव के दौरान ढाई हजार से लेकर पांच हजार रूपये तक सरकारी सामुदायिक स्वास्थ केंद्र मे प्रसव डिलेवरी कराने वाली महिला डॉक्टर नर्स ले रही है ये खेल लम्बे समय से सीएचसी फरह मे चल रहा ज़ब ग्राम खेरिया रिफाइनरी का युवक राजकुमार शर्मा अपनी पत्नी को प्रसव डिलेवरी के लिए सीएचसी फरह गाँव की आशा बहन रेखा के साथ ले गया तो उसकी पत्नी की नार्मल डिलेवरी करने के लिए सोनम यादव नर्स ने उससे ढाई हजार रुपए मागे जब उसने आशा और नर्स से पैसे की बात पूछी तो उन्हें वताया की नार्मल डिलेवरी करके देंगे अगर पैसे नहीं दोगे तो हमारी कोइ जिम्मेदारी नहीं होंगी युवक ने पूरा मामला सीएचसी अधीक्षक डॉ रामगोपाल सीह को बताया रामगोपाल ने कहाँ की नर्स को बोलो की मुझसे आकर पाँच हजार ले जाए जब मामला मिडिया मे आया तो आशा रेखा ने पैसे के लेनदेन की बात नर्स सोनम के सामने ही कबूल की सीएचसी मे ज़ब पैसे की बात का मामला उछ्ला तो वहां एक आशा बहन से रुका नहीं गया और उसने खुद मिडिया के सामने सीएचसी मे चल रहे भ्रष्टाचार के खेल को उजागर कर दिया वही सीएचसी अधीक्षक डॉ रामगोपाल का कहना है की पैसे के लेनदेन का ममला मेरे संज्ञान मे आया है जो युवक डिलेवरी कराने महिला को लाया उसने मुझे बताया है मे मामले की जांच कराऊंगा दोषी पाए जाने पर कार्यवाही होंगी वही फरह ब्लॉक मे आशाओ की मिली भगत व कमीशन खोरी के चक्कर से दो दर्जन से अधिक बिना रजिस्ट्रेशन डिग्री लाइसेंस के फर्जी छोलाछाप डॉक्टरो के क्लिनिक संचालित है छोटी सी दुकानों मे ऑपरेशन हो रहे है दुकानों पर अस्पताल एन्ड ट्रॉमा सेंटर चला रहे है आये दिन बुजुर्ग महिलाओ बच्चों के जीवन से खिलवाड़ हो रही है स्वास्थ विभाग आंख मूद मूक दर्शक बना है क्योकी स्वास्थ विभाग मे कार्यरत कुछ लोगो को छोलाछाप क्लिनिको से प्रति महीना संचलित कराये रखने के लिए मलाई पहुच रही है।

बीमारियों से बचाव के लिए 30 की उम्र के बाद जरूर कराएं ये जांच, लंबे समय तक रहेंगे स्वस्थ

अगर आप गंभीर बीमारियों से खुद का बचाव करना चाहते हैं, तो इसका सबसे अच्छा तरीका है कि शरीर के लक्षणों पर गंभीरता से ध्यान दें। आजकल कम उम्र में ही लोगों में क्रोनिक बीमारियों का खतरा बढ़ता जा रहा है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति पहले अलर्ट हो जाना चाहिए। वहीं समय पर बीमारी का पता लगाने के लिए जरूरी है कि आप नियमित रूप से डॉक्टर की सलाह लेते रहें। वहीं जिन लोगों को पहले से कोई स्वास्थ्य समस्या है, उनको अधिक सावधानी बरतनी चाहिए।

हेल्थ एक्सपर्ट कहते हैं, अच्छी सेहत पाने और बीमारियों से खुद का बचाव करने के लिए सभी लोगों को कुछ प्रकार की जांच कराते रहना चाहिए। भले ही आप स्वस्थ और सेहतमंद हैं, लेकिन फिर भी 30 की उम्र के बाद से आप हर महीने ये 2 जाचें जरूर करानी चाहिए।

नियमित रूप से कराएं जांच

हेल्थ एक्सपर्ट के अनुसार, आजकल जिस तरह की लाइफस्टाइल और डाइट में गड़बड़ी देखी जा रही है। इस कारण सभी उम्र के लोगों को स्वास्थ्य जोखिम हो गया है। हालिया आंकड़ों की बात की जाए, तो 20 से कम उम्र वाले लोगों को भी हाई ब्लड प्रेशर, मोटापा और हाई ब्लड शुगर जैसी बीमारियां हो रही हैं। यह शरीर के कई अंगों को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में आप इन स्वास्थ्य समस्याओं पर निरंतर ध्यान देकर इसको बढ़ने से रोक सकते हैं। इसके लिए आप नियमित ब्लड प्रेशर और ब्लड शुगर की जांच कराते रहें।

ब्लड शुगर की जांच

बता दें कि ब्लड शुगर की जांच कराते रहना डायबिटीज के लिए सबसे जरूरी है। वहीं जिन लोगों को पहले से टाइप 1 या टाइप 2 डायबिटीज है या इंसुलिन लेते हैं। उनको डॉक्टर नियमित जांच की सलाह दे सकते हैं। आप घर पर ही ग्लूकोज मीटर से ब्लड शुगर के लेवल को चेक कर सकते हैं।

हेल्थ एक्सपर्ट कहते हैं कि जिन लोगों के पेरेंट्स को डायबिटीज की समस्या रही है। उन लोगों को 30 की उम्र के बाद से हर महीने ग्लूकोज मीटक से और हर 6 महीने के अंतराल पर ॥ड्ढ1ष्ट की जांच करानी चाहिए।

ब्लड प्रेशर की जांच

ब्लड प्रेशर के लेवल पर भी ध्यान देते रहना जरूरी है। क्योंकि ब्लड प्रेशर का लेवल अनियंत्रित होने से आंख, हार्ट और किडनी को खतरा हो सकता है। वहीं जिन लोगों के पेरेंट्स या परिवार में किसी को पहले से हाई ब्लड प्रेशर या हार्ट संबंधी समस्या रही है, तो इन लोगों को ज्यादा सावधानी बरतनी चाहिए। अगर आप ब्लड प्रेशर की दवा लेते हैं, तो इसकी रीडिंग को एक-दो दिन के अंतराल पर नोट करते रहें। वहीं अगर आपको ब्लड प्रेशर की समस्या नहीं है, तो आपको हर महीने इसकी जांच करवानी चाहिए।

जानिए क्या कहते हैं एक्सपर्ट

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें, तो यदि ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर को कंट्रोल कर लिया जाए, तो गंभीर और जानलेवा स्वास्थ्य समस्याओं के खतरे को कम किया जा सकता है। इसलिए एक नियमित अंतराल पर हार्ट, शुगर और आंखों की जांच कराते रहना चाहिए। वहीं अगर फैमिली में पहले से किसी को ब्लड प्रेशर, डायबिटीज या हार्ट संबंधी समस्या रही है, तो आपको अधिक सतर्क रहना चाहिए।

रोजाना 1 गाजर खाने से पास नहीं फटकेंगी मौसमी बीमारियों, कैंसर का जोखिम भी होगा कम

अगर आप हर मौसम में हेल्दी और फिट रहना चाहते हैं, तो सबसे अच्छा और आसान तरीका है कि आप उस मौसम की फल और सब्जियों का सेवन करें। अगर आप उस मौसम के सुपरफूड्स का सेवन करते हैं, तो बीमारियां आपके आसपास भी नहीं फटकेंगी। सर्दियों का एक ऐसा ही सुपरफूड गाजर है। यह एक रूट वेजिटेबल है, जोकि 900 ईस्वी के आसपास सबसे पहले अफगानिस्तान में उगाया गया था। वैसे तो गाजर पीला, नारंगी, सफेद और लाल रंग का होता है। लेकिन शुरूआती दिनों में यह पीले या बैंगनी रंग का होता है। मिडिल ईस्ट में 15वीं या 16वीं शताब्दी के आसपास नारंगी गाजर डेवलप किया गया। गाजर में विटामिन्, ष्ट और च भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, जिंक, पोटेशियम और कॉपर जैसे जरूरी मिनरल्स पाए जाते हैं। वहीं गाजर कार्बोहाइड्रेट और फाइबर का भी अच्छा स्त्रोत माना जाता है। इसका रोजाना सेवन करने से आंखों की रोशनी तेज होती है, वेट मैनेजमेंट में मदद मिलती है और कैंसर का जोखिम कम होता है।

गाजर की न्यूट्रिशनल वैल्यू

गाजर में 86त्न से लेकर 95त्न तक पानी पाया जाता है। वहीं बाकी के अन्य 10त्न हिस्से में कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसमें प्रोटीन और फैट भी होता है, लेकिन इसकी मात्रा काफी कम होती है।

विटामिन और मिनरल्स से भरपूर है गाजर

गाजर में कई तरह के विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। इसी वजह से यह सेहत के लिए फायदेमंद होता है। हालांकि अधिकतर लोग ऐसा समझते हैं कि गाजर में विटामिन्र पाया जाता है। जबकि इसमें विटामिन, विटामिन और विटामिन क्ष्6 भी बहुत ज्यादा होता है।

बेहद फायदेमंद है गाजर

बता दें कि गाजर एक ऐसी सब्जी है, जिसमें कैलोरी बहुत कम मात्रा में पाई जाती है और इसकी न्यूट्रिशनल वैल्यू ज्यादा होती है। गाजर में जरूरी विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सिडेंट की मौजूद होते हैं। ऐसे में इसका सेवन करने से इम्यूनिटी मजबूत होती है। वहीं अपने खास न्यूट्रिशनल वैल्यू की वजह से इसको खाने से किडनी, लिवर और हार्ट की सेहत अच्छी रहती है।

गाजर खाने के फायदे

ब्लड शुगर कंट्रोल में रहता है।

आंखों की रोशनी तेज होती है।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रहता है।

हार्ट हेल्थ इंप्रूव होती है।विटामिन और फ़ूड सप्लीमेंट खरीदें

कब्ज की समस्या दूर होगी।

वेट मैनेजमेंट में मदद मिलेगी।

कम होगा कैंसर का जोखिम।

स्किन हेल्दी रहती है।

इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

ब्रेन फंक्शनिंग और याददाश्त बेहतर होती है।

रोज कितनी गाजर खाएं

एक स्वस्थ व्यक्ति को दिन में 1-2 गाजर का सेवन करना चाहिए। वहीं बच्चे पूरे दिन में 1 गाजर खा सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि एक गाजर करीब 125 ग्राम से 200 ग्राम की होती है। अगर आप प्रतिदिन 125 ग्राम गाजर का सेवन करते हैं, तो आपके शरीर को जरूरत के हिसाब से विटामिन् का 100त्न से ज्यादा हिस्सा मिल जाता है।

कितनी भी अच्छी डाइट हो या फिर एक्सरसाइज करने का बाद नहीं कम हो रहा वजन, जानें इसके पीछें के कारण

बढ़ता हुआ वजन से परेशान रहते हैं। इसके लिए आप हेल्दी डाइट लेते हैं और समय-समय पर एक्सरसाइज करते हैं, तो भी आपको मनचाहा रिजल्ट प्राप्त नहीं हो रहा है। अगर आपके साथ भी यही हो रहा है, तो इसके पीछे आपकी लाइफस्टाइल भी हो सकती है। आइए आपको बताते हैं कैसे वर्कआउट करने के बाद भी वजन कम नहीं होता है।

आखिर क्यों बढ़ रहा है वजन

- रात को आप हाई कार्बोहाइड्रेट वाला डिनर करते हैं, इसिलए भी आपका वजन बढ़ता है।

- अगर आप अत्यधिक तनाव लेते हैं या फिर चिंता में लगे रहते हैं, तो आपके वेट पर असर पड़ता है।

- रात को देर से खाना खाने से।

- बहुत ज्यादा ही हैवी वर्कआउट करने से मसल्स लॉस होने की बजाय स्ट्रेंथ पाती हैं।

- पीरियड्स के दौरान भी कुछ महिलाओं को वजन बढ़ जाता है।

- यदि आपकी नींद पूरी नहीं होती, तो वेट गेन होगा।

- ज्यादा नमक और सोडियम वाले फूड्स का सेवन न करें। इससे शरीर में वाटर रिटेंशन की प्रॉब्लम हो जाती है।

कैसे पता करें कि वेट लॉस हो रहा

- इस बात का ध्यान रखें कि एक्सरसाइसज करने से वजन घट रहा है।

- कपड़ों की साइज में बदलाव या फिर फिटिंग चेंज हो गई है।

- शरीर को ज्यादा फ्रेश और स्ट्रॉग महसूस करता है, जैसे कि वेट ट्रेनिंग करना पहले से आसान बना लें।

दाल पानी पीने से बॉडी को मिलते हैं गजब के फायदे, वजन कंट्रोल करता

अक्सर देखा गया है कि दाल पानी पीना बच्चों के लिए सेहत के लिए अच्छा बताया गया है। लेकिन आप नहीं जानते होंगे कि बड़ों के लिए भी दाल पानी पीना काफी स्वास्थ्यवर्धक माना गया है। यह वजन को कंट्रोल करने में मदद करता है। इतना ही नहीं, बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने से लेकर एनर्जी और न्यूट्रिशन के लिए भी दाल का पानी हेल्थ के लिए फायदेमंद है।

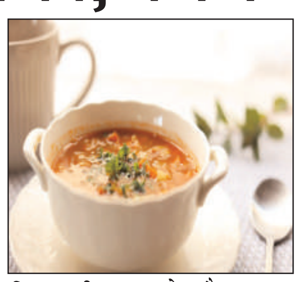

दाल का पानी पीने के फायदे

पोषक तत्वों से भरपूर

दाल के पानी में कई सारे न्यूट्रिएंट्स होते हैं। प्रोटीन, फाइबर, विटामिन से लेकर मिनरल्स और इसके साथ ही दाल का पानी विटामिन बी, आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम, जिंक से भरपूर होता है। ये सारे न्यूट्रिशन बॉडी को स्ट्रॉग बनाते हैं, इसके साथ ही इम्यून सिस्टम भी मजबूत होता है।

डाइजेशन बेहतर होता है

अगर आपका डाइजेशन खराब रहता है, तो प्रोटीन के साथ जरुरी न्यूट्रिशन के लिए दाल का पानी पी सकते हैं। हींग मिली हुई दाल पीने से बाउल सिस्टम सही होता है और पेट कब्ज दूर करना है।

वेट लॉस में मददविटामिन और फ़ूड सप्लीमेंट खरीदें

अगर आप वजन घटना चाहते हैं तो आप रोजाना दाल का पानी पी सकते हैं। इसमें अधिक मात्रा में फाइबर और प्रोटीन पाया जाता है, जो पेट को भरा हुआ रखता है।

कोलेस्ट्रॉल और हार्ट डिसीज के लिए फायदेमंद

शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ गई है, तो रोजाना दाल का पानी पीने से फायदा होता है। दाल का पानी कोलेस्ट्रॉल को बढ़ने से रोकता है। इसके साथ ही हार्ट को हेल्दी रखता है।

एनर्जी मिलती

जो लोग दाल का पानी पीते हैं, उन्हें रोजाना दाल का पानी पीने से फायदा होता। दाल पानी पीने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। जो शरीर को थकान और सुस्ती को दूर करता है।

डायबिटीज के लिए फायदेमंद

डायबिटीज रोगियों के लिए दाल का पानी पीना हेल्दी होता है। दाल के पानी में लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो डायबिटीज मरीजों के लिए फायदेमंद है।

डाइट में कम कर दें इन दो चीजों का सेवन वरना हो सकती हैं गंभीर बीमारियां, जानिए क्या कहते हैं एक्सपर्ट

डाइट में गड़बड़ी होने पर इसका असर हमारी सेहत पर देखने को मिलता है। क्योंकि आप जिस तरह की चीजों का सेवन करते हैं, उसका स्वास्थ्य पर सीधा असर होता है। कई अध्ययनों से यह पता चलता है कि अगर आपकी डाइट हेल्दी और पौष्टिक नहीं है। तो आपको कई प्रकार की क्रोनिक बीमारियों का जोखिम हो सकता है। वहीं डाइट में खराबी होने पर ही ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर के अधिकतर मामले सामने आते हैं। यही वजह है कि हेल्थ एक्सपर्ट सभी लोगों को अपनी डाइट को ठीक रखने की सलाह देते हैं।

हेल्थ एक्सपर्ट की मानें, तो जिस तरह से 30 साल से भी कम उम्र के लोग डायबिटीज और ब्लड प्रेशर का शिकार हो रहे हैं। उन्हें अपनी डाइट को लेकर खास सावधानी बरतनी चाहिए। क्योंकि अगर आपको स्वस्थ रहना है और भविष्य में गंभीर बीमारियों से बचाव करना है, तो आपको अपनी डेली डाइट में दो चीजों की मात्रा कम कर देनी चाहिए। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इन दो चीजों के बारे में बताने जा रहे हैं और साथ ही यह भी जानेंगे कि इन चीजों का अधिक सेवन करने से स्वास्थ्य को क्या नुकसान हो सकते हैं।

डाइट में गड़बड़ी से होने वाली दिक्कतें

नमक और चीनी का अधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक माना जाता है। इसलिए इन दोनों चीजों को व्हाइट पॉइजन भी कहा जाता है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि यदि आप रोजाना इन दोनों चीजों का अधिक सेवन करते हैं, तो समय के साथ डायबिटीज और हृदय रोग का खतरा काफी बढ़ जाता है। ज्यादा चीनी खाने से डायबिटीज का खतरा रहता है और नमक भी दिल के लिए अच्छा नहीं माना जाता हैं। हेल्थ एक्सपर्ट सभी लोगों को डाइट में नमक और चीनी का कम मात्रा में सेवन करने की सलाह दी जाती है।

अधिक चीनी खाना भी नुकसानदायक

चीनी का अधिक सेवन करने से कैलोरी की मात्रा बढ़ जाती है। वहीं हाई कैलोरी वाली चीजों को खाने से ग्लूकोज और मोटापा को बढ़ाने वाला माना जाता है। हेल्थ एक्सपर्ट की मानें, तो चीनी आपके दिल को सीधे तौर पर प्रभावित नहीं करती है और न ही इससे डायबिटीज होता है। लेकिन अगर आप चीनी वाली चीजों का अधिक सेवन करते हैं, तो वह जोखिम कारकों को जरूर बढ़ाते हैं। इसका आपकी सेहत पर खराब असर हो सकता है। सोडा, मिठाइयों और सॉफ्ट ड्रिंक में शुगर की मात्रा अधिक होती है।

नमक की अधिकता है नुकसानदेह

बता दें कि चीनी की तरह ही अधिक नमक का सेवन भी सेहत के लिए हानिकारक है। क्योंकि नमक में सोडियम पाया जाता है। हालांकि यह शरीर के कार्यों के लिए जरूरी है। लेकिन अगर आर अधिक मात्रा में नमक का सेवन करते हैं, तो इससे ब्लड प्रेशर और हृदय रोगों का खतरा बढ़ सकता है। वयस्कों के लिए रोजाना 1500 मिलीग्राम सोडियम का सेवन पर्याप्त माना जाता है। लेकिन अगर आप अधिक मात्रा में इसका सेवन करते हैं, तो आपको लिवर, किडनी और मेटाबॉलिज्म से संबंधित रोगों का खतरा हो सकता है।

जानिए क्या कहते हैं एक्सपर्ट

डाइट एक्सपर्ट की मानें, तो हम सभी चीनी और नमक का सेवन रोजाना करते हैं। ब्लड प्रेशर और हार्ट के मरीजों को इन दोनों ही चीजों को जोखिम का कारक माना जाता है। अगर आप भी अच्छी सेहत पाना चाहते हैं, तो डाइट में नमक और चीनी की मात्रा कम कर दें। क्योंकि चीनी आपको मोटापे का शिकार बना सकती है और इससे मधुमेह का भी खतरा रहता है। वहीं अधिक नमक का सेवन करने से ब्लड प्रेशर और हार्ट संबंधित रोगों का खतरा रहता है। इसलिए आप डाइट में इन दोनों की मात्रा कम कर दें। यह क्रोनिक बीमारियों से बचाव के लिए भी जरूरी है।

कुंदरु की सब्जी के फायदे किसी चमत्कार से कम नहीं, ये बीमारियां जड़ से होगी दूर

बाजार में आप ने परवल की तरह ही कुंदरु की सब्जी जरुर देखी होगी। कई लोगों के घर यह सब्जी खाई जाती है। लेकिन क्या आप इस सब्जी के फायदे जानते हैं। कुंदरु खाने से पेशाब के रोगों में काफी फायदेमंद होता है, इसके साथ ही हाई ब्लड प्रेशर को मैनेज करने में सहायक है। कुछ लोगों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

कुंदरु की सब्जी खाने के फायदे

पेशाब के रोगिया के लिए फायदेमंद

जिन लोगों को यूटीआई, ब्लैडर, किडनी इंफेक्शन आदि की वजह से पेशाब के रोग हो सकते हैं। वहीं, डॉक्टर कहना है कि इन लोगों के लिए कुंदरु खाना अच्छा होता है। कुंदरु खाने से यूरीनरी ट्रैक्ट की हेल्थ सही होती है और रोग दूर होते है।

हाई बीपी में फायदेमंद

जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर की समस्या उनके लिए कुंदरु की सब्जी बेहद फायदेमंद है। कई अध्ययनों से पता चला है कि पोटैशियम की मदद से हाई ब्लड प्रेशर को मैनेज किया जा सकता है। कुंदरु में भारी मात्रा में पोटैशियम होने से ब्लड प्रेशर की समस्या कंट्रोल होती है।

यह लोग कुंदरु का सेवन न करें

एक्सपर्ट के मुताबिक, कुंदरु में पोटैशियम हाई मात्रा में होता है, जिन मूत्र रोगी के पोटैशियम बढ़ा हुआ है, उन्हें इसका सेवन नहीं करना चाहिए। वैसे इस स्थिति को हाइपरकलेमिया कहा जाता है।

या आप मूंगफली खाने के बाद तुरंत पानी पी लेते हैं, हो जाएं सावधान सेहत को मिलते हैं ये 5 नुकसान

सर्दियों में सबसे ज्यादा मूंगफली का सेवन किया जाता है। चाहे धूप में बैठकर इसका सेवन करना हो या फिर नाश्ते में पोहा के साथ मूंगफली खाना सेहत के लिए अच्छा होता है। लेकिन आप मूंगफली खाने के बाद पानी पीते हैं, तो यह नुकसान करता है। मूंगफली में कैल्शियम, आयरन, विटामिन जैसे कई पोषक तत्व मौजूद होते हैं। लेकिन अगर आप मूंगफली खाने के बाद पानी पीते हैं, तो यह नुकसान करता है। क्या कहता है आयुर्वेद आपको बताते है।

आयुर्वेद में आहार का नियम

आयुर्वेद में पाचन तंत्र में तीन दोषों (वात, पित्त और कफ) का बैलेंस होना जरुरी माना जाता है। जब इन तीनों में से किसी भी एक दोष का असंतुलन होने पर शरीर में कई तरह की समस्याएं पैदा होती है। बता दें कि, मूंगफली की तासीर गर्म होती है। इसके सेवन करने के बाद पानी पीने से गला ठंडा हो जाता है। आयुर्वेद की मानें तो ऐसी चीजों का सेवन करने के बाद कम से कम 20 मिनट तक कुछ नहीं खाना चाहिए।

मूंगफली खाने के तुरंत बाद पानी पीने के नुकसान

मूंगफली खाने से एलर्जी की समस्या बढ़ जाती है। मूंगफली खाने के तुरंत बाद पानी पीने से डायजेस्टिव जूस डाइल्यूट हो सकते हैं, इससे एलर्जी का खतरा बढ़ सकता है। एलर्जी खासतौर से रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट के लिए खतरनाक है।

मेटाबॉलिज्म पर असर

यदि आप मूंगफली खाने के बाद पानी पीने से मेटाबॉल्जिम पर बुरा असर पड़ सकता है। मूंगफली का सेवन करने के बाद शरीर को इसे पचाने के लिए एनर्जी का प्रयोग करना पड़ता है। ऐसे में इसका सेवन करने के बाद पानी का सेवन इस प्रक्रिया को और भी ज्यादा धीमा कर देता है, इससे वजन बढ़ने, गैस, अपच और पेट में भारीपन के साथ मेटाबॉलिज्म संबंधी समस्याएं पैदा हो सकती है।

गले और छाती में तकलीफ

मूंगफली की तासीर गर्म होती है और इसको खाने के बाद पानी पीते हैं, तो गले और छाती पर बुरा असर पड़ता है। जिससे गले और छाती में बलगम जमा हो जाता है।

एसिडिटी और पेट में जलन

मूंगफली का सेवन करने से गर्मी पैदा होती है। अगर आप मूंगफली खाने के तुरंत बाद पानी पीते हैं, तो यह पेट की गर्मी को अचानक से ठंडा कर देते हैं, इससे एसिडिटी या पेट में जलन जैसी समस्याएं पैदा होती है।

पाचन क्रिया पर भी बुरा असर

मूंगफली खाने के तुरंत बाद पानी पीने से पाचन क्रिया पर बुरा असर पड़ता है। अगर आप मूंगफली खाने के बाद पानी पीने से पाचन रस पतला हो जाता है। इससे मूंगफली को पचाने में दिक्कत आ सकती है। जो गैस, अपच और पेट में भारीपन जैसी समस्याओं का कारण बनती है।

सर्दियों का सुपरफूड बाजरा है विटामिन और मिनरल्स का खजाना, रोजाना खाने से मिलेंगे ढेरों फायद

आज भी भारत और अफ्रीका में बाजरा मुख्य रूप से उगाया जाता है। वहीं पीएम मोदी ने भी संसदीय दल की बैठक में इसको ज्यादा उगाने और खाने की अपील की थी। वहीं हमारे बड़े-बुजुर्ग भी मौसम के हिसाब से सब्जियों के साथ अनाज में भी बदलाव करते थे। आमतौर पर पुराने समय में लोग सर्दियों में ज्वार और बाजरा का सेवन अधिक करते थे। क्योंकि इसकी तासीर गर्म होती है और यह जरूरी पोषक तत्वों से भी भरपूर होता है।

अब धीरे-धीरे बाजरे की मांग पूरी दुनिया में बढ़ रही है। खास बात यह है कि बाजरा में कॉम्प्लेक्स कार्ब होता है, जिससे हमारे शरीर को धीरे-धीरे देर तक एनर्जी मिलती है। बाजरा खाने से दांत और हड्डियां मजबूत होती हैं और ब्लड शुगर लेवल भी कंट्रोल में रहता है। वहीं इसका सेवन करने से कैंसर और अस्थमा का जोखिम भी कम होता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि बाजरा की न्यूट्रिशनल वैल्यू क्या है और इसके सेवन से क्या फायदे मिलते हैं।

बाजरा का न्यूट्रिशनल वैल्यू

अक्सर सर्दियों में नानी-दादी बाजरे के पुए बनाती थीं। खास बात यह थी कि वह इसमे सारे सुपरफूड्स का इस्तेमाल करती थीं। बाजरा के पुए में तिल और गुड़ भी जाता था। क्योंकि पुराने समय में संसाधन और ऊनी कपड़े कम होते थे। ऐसे में सर्दियों में हमारे पूर्वज यह सुपरफूड्स खाकर खुद को स्वस्थ रखते थे। बाजरा भी एक ऐसा ही सुपरफूड है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है।विटामिन और फ़ूड सप्लीमेंट खरीदें

पोषक तत्वों से भरपूर है बाजरा

बाजरा में ऐसे ढेरों जरूरी न्यूट्रिएंट्स पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर के लिए बेहद जरूरी होते हैं। इनमें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन भी पाया जाता है। साथ ही बाजरा में जरूरी कार्ब्स और फाइबर भी पाया जाता है।

ढेर सारे विटामिन और मिनरल

बाजरा में ढेर सारे विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। इसमें विटामिन बी1, बी2, सी3 और डी6 होता है। इसके साथ ही बाजरा में फॉस्फोरस, जिंक, आयरन और मैग्नीशियम जैसे जरूरी मिनरल्स भी पाए जाते हैं। ऐसे में अगर आप रोजाना एक कप बाजरा खाते हैं, तो इससे शरीर को सारे जरूरी विटामिन्स और मिनरल्स मिल जाते हैं।

किसान नेता डल्लेवाल को अस्थायी अस्पताल में शिफ्ट करें, पंजाब सरकार को सुप्रीम निर्देश

नई दिल्ली। पीठ ने अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे डल्लेवाल का मेडिकल परीक्षण न कराने के लिए पंजाब सरकार की खिंचाई की थी। डल्लेवाल 26 नवंबर से खनौरी बॉर्डर पर अनिश्चितकालीन अनशन कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को पंजाब सरकार को निर्देश दिया है कि वे अनशन कर रहे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल को खनौरी बॉर्डर पर ही एक अस्थायी अस्पताल बनाकर उसमें स्थानांतरित करें, ताकि उनकी सेहत पर चौबीस घंटे नजर रखी जा सके। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने पंजाब सरकार के एडवोकेट जनरल गुरमिंदर सिंह से कहा कि वे डल्लेवाल को पंजाब और हरियाणा के बीच स्थित खनौरी बॉर्डर पर विरोध स्थल के पास बने अस्थायी अस्पताल में स्थानांतरित करने के संबंध में आज ही एक अंडरटेकिंग दाखिल करें।

पीठ आज दोपहर करीब ढाई बजे फिर से मामले पर सुनवाई करेगी। पंजाब सरकार के वकील ने पीठ को बताया कि गुरुवार को किसान नेता ने सहयोग किया है और उनके ईसीजी और ब्लड टेस्ट समेत कई टेस्ट करवाए गए। उन्होंने कहा कि डल्लेवाल की स्वास्थ्य स्थिति फिलहाल स्थिर लग रही है। गुरुवार को पीठ ने नागरिक अधिकार कार्यकर्ता इरोम शर्मिला द्वारा चिकित्सा देखरेख में एक दशक से अधिक समय से अपना विरोध जारी रखने का उल्लेख करते हुए पंजाब सरकार से डल्लेवाल को स्वास्थ्य जांच कराने के लिए मनाने को कहा।

संसद की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

> अध्यक्ष स्तर से इसका समाधान होना चाहिए था। यह संसद और परिषद में हमारे अध्यक्ष की सर्वोच्चता को चुनौती है।

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर से राज्यसभा में डॉ. बीआर आंबेडकर पर की गई टिप्पणी के विरोध में विपक्षी गठबंधन के सांसदों का विरोध प्रदर्शन जारी रहा। जिसके चलते संसद की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। हालांकि संसद परिसर में धरना प्रदर्शन आज भी जारी रहे। जदयू सांसद और केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन (ललन) सिंह ने कहा, %कांग्रेस पार्टी के शासनकाल के दौरान बाबा साहब भीम राव अंबेडकर को अपमानित किया गया और अब राहुल गांधी खुद की तुलना भीम राव अंबेडकर से कर रहे हैं। यह बचपना नहीं तो और क्या है? कल की जो घटना है, उनकी (राहुल गांधी) अगर नीयत सही होती तो ये घटना नहीं होती। यह सब अपरिपक्वता के गुण हैं। वे(राहुल गांधी) छात्र नेता की तरह व्यवहार करते हैं और सपना प्रधानमंत्री बनने का देखते हैं। लोकतंत्र इस तरह नहीं चलता है।

भाजपा सांसद दीपक प्रकाश ने कहा, बड़ा दुर्भाग्य है कांग्रेस की मानसिकता पर, कांग्रेस की सोच पर और कांग्रेस के पागलपन पर कि अब वे बाबा साहब की तुलना राहुल गांधी से कर रहे हैं। और कल तो उन्होंने (राहुल गांधी) आदिवासी महिला को अपमानित करके खुद को आदिवासी और महिला विरोधी भी साबित कर दिया है। सपा सांसद धर्मेंद्र यादव ने कांग्रेस सांसद और लोकसभा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ स्नढ्डक्र दर्ज होने पर कहा, यह संसद परिसर का मामला है। अगर कोई बात थी तो पहले लोकसभा अध्यक्ष के संज्ञान में जानी चाहिए थी। अध्यक्ष स्तर से इसका समाधान होना चाहिए था। यह संसद और परिषद में हमारे अध्यक्ष की सर्वोच्चता को चुनौती है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा, मैं बहुत निराश हूं। मुझे लगता है कि हमारे देश में कई ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन पर चर्चा होनी चाहिए। दुख की बात है कि इस समय का अधिकांश हिस्सा व्यवधान में बर्बाद हो गया है। मुझे लगता है कि हमने भारत के लोगों को निराश किया है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। संसद बहस और चर्चा के लिए एक मंच है लेकिन व्यवधान के लिए नहीं है।%

भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने कहा, राहुल गांधी का जो अहंकार कल देखने को मिला और अपने साथी सांसदों का प्रति जो उनका रवैया था वो बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। सब नियमों का उल्लंघन करके, जो तय रास्ता था वहां से जाने के बजाय जान-बूझकर दलबल को साथ में लेकर जिस तरह से उन्होंने हुड़दंग मचाया है। यह माफी लायक नहीं है। एक नेता प्रतिपक्ष क्या इस सोच के साथ जा सकता है? जब उन्हें(राहुल गांधी) घायल के पास लेकर गए तो हाल चाल पूछना छोड़िए, माफी मांगना छोड़िए उनके चेहरे पर अहंकार नजर आ रहा था। उनका (राहुल गांधी) बयान था कि धक्का-मुक्की तो होती रहती है। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी सोच है कि किसी के साथ कुछ भी कर दो, हमें तो कुछ होने वाला नहीं है।राज्यसभा की कार्यवाही भी 12 बजे फिर शुरू हुई, लेकिन हंगामे के चलते सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने गुरुवार को संसद परिसर में सांसदों की धक्का-मुक्की वाले विवाद पर कहा, यह सरकार डरती है। यह सरकार अदाणी मामले पर चर्चा करने से डरती है।

ईवीएम सत्यापन के लिए नीति बनाने की मांग वाली याचिका पर दूसरी बेंच करेगी सुनवाई

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों के सत्यापन के लिए नीति बनाने की मांग वाली याचिका पर अगले साल जनवरी में जस्टिस दीपांकर दत्ता की अध्यक्षता वाली बेंच सुनवाई करेगी। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की पीठ ने कहा कि इस मुद्दे पर हरियाणा के पूर्व मंत्री और पांच बार के विधायक करण सिंह दलाल और लखन कुमार सिंगला की नई याचिका पर जस्टिस दत्ता की अध्यक्षता वाली पीठ 20 जनवरी, 2025 से सुनवाई करेगी। चुनाव आयोग की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मनिंदर सिंह ने याचिका को खारिज करने की मांग करते हुए कहा कि इसी तरह की याचिकाएं पहले भी खारिज की जा चुकी हैं। इससे पहले 13 दिसंबर को जस्टिस विक्रम नाथ और पी बी वराले की पीठ ने याचिका पर सुनवाई करने से इनकार करते हुए कहा था कि इसे उसी पीठ को सुनने दिया जाए जिसने इसी तरह की याचिकाओं पर सुनवाई की है। अब इसे सीजेआई की अगुवाई वाली पीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया गया है। 26 अप्रैल को अपने फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने ईवीएम में हेराफेरी के संदेह को निराधार करार दिया था। हालांकि, शीर्ष अदालत ने चुनाव परिणामों में दूसरे और तीसरे स्थान पर आने वाले असफल उम्मीदवारों के लिए एक रास्ता खोल दिया और उन्हें चुनाव पैनल को शुल्क का भुगतान करके लिखित अनुरोध पर प्रति विधानसभा क्षेत्र में पांच प्रतिशत ईवीएम में लगे माइक्रोकंट्रोलर चिप्स के सत्यापन की मांग करने की अनुमति दी थी।

रायगढ़ में बारातियों से भरी बस पलटी, तीन महिलाओं समेत पांच की मौत

मुंबई। महाराष्ट्र के रायगढ़ में बारातियों से भरी एक प्राइवेट बस घाट के पास पलट गई। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई और 27 घायल हो गए। यह घटना तम्हिनी घाट पर सुबह के 9ः15 बजे घटी। एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बारातियों को लेकर बस लोहेगांव से महाड में बिरवाडी की तरफ जा रही थी। इस दौरान बस चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिसके कारण बस पलट गई।

इस हादसे में मरने वालों में दो पुरुष और तीन महिलाएं शामिल हैं। 27 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए माणगांव ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया। मृतकों की पहचान संगीता जाधव, गौरव दराडे, शिल्पा पवार और वंदना जाधव के तौर पर की गई है, जबकि एक व्यक्ति की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। बता दें कि यह हादसा मुंबई तट के पास बुधवार को नौसेना के एक पोत के एक नौका से टकराने वाली घटना के बाद घटी। महाराष्ट्र में मुंबई तट के पास बुधवार को एक बड़ा हादसा हो गया। नौसेना के एक पोत के एक नौका से टकराने से 13 लोगों की मौत हो गई जबकि 101 अन्य लोगों को बचा लिया गया। नौसेना के मुताबिक, नौसेना का पोत इंजन परीक्षण के लिए जा रहा था, लेकिन तभी शाम चार बजे इसने नियंत्रण खो दिया और करंजा के पास यह नीलकमल नामक नौका से टकरा गया। यह नौका यात्रियों को गेटवे ऑफ इंडिया से लोकप्रिय पर्यटन स्थल एलीफेंटा द्वीप पर लेकर जा रही थी।

हंगामे की भेंट चढ़ा शीतकालीन सत्र, राज्यसभा में हुआ महज 40 फीसदी काम

प्रदर्शन

> सुबह जब राज्यसभा में कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्ष ने प्रदर्शन किया। इसके बाद सदन की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित कर दी गई।

नई दिल्ली। राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि सदन में केवल 43 घंटा 27 मिनट काम हुआ। उन्होंने कहा कि सांसद के तौर पर देश के लोग हमारी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। यह सही भी है क्योंकि लगातार हो रहे व्यवधान लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता के विश्वास को लगातार कम कर रहे हैं। इसके बाद सदन को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। संसद का शीतकालीन सत्र हंगामे की भेंट चढ़ गया। इस सत्र में राज्यसभा में केवल 40.03 फीसदी ही काम हुआ। राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि सदन में केवल 43 घंटा 27 मिनट काम हुआ। जबकि लोकसभा का हाल भी कुछ ऐसा ही रहा है। शुक्रवार को एक देश एक चुनाव विधेयक के लिए बन रही जेपीसी में राज्यसभा के 12 सांसदों को नामित किया गया। इसके बाद सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। सुबह जब राज्यसभा में कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्ष ने प्रदर्शन किया। इसके बाद सदन की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित कर दी गई। इसके बाद सभापति ने सदन के नेता जेपी नड्डा और विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने बिना किसी हंगामे के सदन चलाने के लिए कहा। जब सदन की कार्यवाही 12 बजे फिर से शुरू हुई तो सभापति ने विधि मंत्री अर्जुन राम मेघवाल से एक देश एक चुनाव विधेयक को लेकर बन रही जेपीसी के लिए उच्च सदन से सदस्यों को नामित करने का प्रस्ताव रखने के लिए कहा। जेपीसी के लिए 12 सदस्यों को नामित करने के प्रस्ताव को ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। इसके बाद अपने समापन भाषण में सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि इस सत्र में 40.03 फीसदी ही काम हुआ। पूरे सत्र में 43 घंटा 27 मिनट काम हो सका। उन्होंने कहा कि सांसद के तौर पर देश के लोग हमारी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। यह सही भी है क्योंकि लगातार हो रहे व्यवधान लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता के विश्वास को लगातार कम कर रहे हैं।

संजय राउत के घर की रेकी करते हुए सीसीटीवी में कैद हुए दो संदिग्ध

मुंबई। संजय राउत के परिवार ने दावा किया है कि बाइक सवार दो लोगों ने उनके घर की रेकी की है। दोनों संदिग्ध सीसीटीवी फुटेज में भी कैद हुए हैं। फुटेज में दिख रहा है कि संदिग्धों ने हेलमेट और मास्क पहना हुआ है। महाराष्ट्र में शिवसेना यूबीटी के नेता संजय राउत के घर की रेकी करते हुए दो संदिग्ध देखे गए हैं, जिसके बाद राउत के घर की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। दरअसल संजय राउत के परिवार ने दावा किया है कि बाइक सवार दो लोगों ने उनके घर की रेकी की है। दोनों संदिग्ध सीसीटीवी फुटेज में भी कैद हुए हैं। फुटेज में दिख रहा है कि संदिग्धों ने हेलमेट और मास्क पहना हुआ है। शिकायत के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। साथ ही शिवसेना यूबीटी नेता के आवास के बाहर सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी कर दी गई है।

रोड्स द्वीप पर प्रवासियों को ले जा रही बोट पलटी, आठ की मौत

रोड्स। रोड्स द्वीप के पास प्रवासियों को ले जा रही स्पीडबोट पलट गई। इस हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। हालांकि, 18 लोगों को बचा लिया गया है। ग्रीक तट रक्षक बलों ने इसकी जानकारी दी। रोड्स द्वीप के पास प्रवासियों को ले जा रही स्पीडबोट पलट गई। इस हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। हालांकि, 18 लोगों को बचा लिया गया है। ग्रीक तट रक्षक बलों ने इसकी जानकारी दी। यह घटना कांगो में लोगों से भरी एक नाव के फिमी नदी में पलट जाने के दो दिन के बाद घटी। बता दें कि कांगो में मंगलवार, 18 दिसंबर को लोगों से खचाखच भरी एक नाव फिमी नदी में पलट गई। हादसे में बच्चों सहित 25 लोगों की मौत हो गई और दर्जनों लोग लापता हो गए। नाव में सामान भी लदा हुआ था और मरने वालों में बच्चे भी शामिल हैं। यह घटना कांगो की राजधानी किंशासा से उत्तर-पूर्व में स्थित इनोंगो शहर के पास हुई। अधिकारियों और स्थानीय निवासियों के अनुसार, नाव में 100 से ज्यादा लोग सवार थे। यह हादसा माई-एनडोम्बे प्रांत में इस साल का चौथा हादसा है। यह क्षेत्र नदियों से घिरा हुआ है और यहां के लोग नदी परिवहन पर निर्भर हैं। इससे पहले, अक्तूबर में कांगो के पूर्वी हिस्से में एक अत्यधिक भरी हुई नाव डूबने से करीब 78 लोगों की मौत हो गई थी। इसके अलावा, जून में भी किंशासा के पास इसी तरह की घटना सामने आई थी, जिसमें करीब 80 लोगों की जान चली गई थी। इस ताजा हादसे के बाद सरकार ने प्रांत में सुरक्षा बढ़ाने और नावों को बचाव उपकरणों से लैस करने का निर्णय लिया है।

चीन ने संबंधों की बेहतरी के लिए व्यापक सहमति पर दिया जोर

बीजिंग। चीनी प्रवक्ता लिन जियान ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि दोनों देशों के कीमती संसाधनों को विकास और पुनरोद्धार में लगाया जाए। यह सुनिश्चित भी किया जाना चाहिए कि सीमा विवाद के मुद्दे को द्विपक्षीय संबंधों में उचित रूप से रखा जाए। इतना ही नहीं, सीमावर्ती क्षेत्रों में संयुक्त रूप से शांति और सौहार्द बनाए रखा जाए। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल की चीन यात्रा के बाद दोनों देशों के बीच रिश्तों पर जमी बर्फ पिघलनी शुरू हो गई है। चीन ने संबंधों को बेहतर बनाने के लिए व्यापक सहमति पर जोर दिया है। चीन की ओर से यह बयान भारतीय एनएसए डोभाल की चीन दौरे के ठीक बाद आया है।

नम आंखों से दी गई तबला वादक जाकिर हुसैन को अंतिम विदाई

खाक

> पूरी दुनिया में मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन को गुरुवार को सैन फ्रांसिस्को में सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया।

वॉशिंगटन। प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा के पुत्र जाकिर हुसैन का जन्म नौ मार्च 1951 को हुआ था। उन्हें उनकी पीढ़ी के सबसे महान तबला वादकों में से एक माना जाता है। उनके परिवार में उनकी पत्नी एंटोनिया मिनेकोला और उनकी बेटियां अनीशा कुरैशी और इजाबेला कुरैशी हैं। पूरी दुनिया में मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन को गुरुवार को सैन फ्रांसिस्को में सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया। दुनिया के सबसे बेहतरीन तबलावादकों में से एक जाकिर हुसैन का सोमवार को सैन फ्रांसिस्को के एक अस्पताल में निधन हो गया था। वह 73 वर्ष के थे। वे फेफड़ों की बीमारी इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस से उत्पन्न जटिलताओं से परेशान थे। प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा के पुत्र जाकिर हुसैन का जन्म नौ मार्च 1951 को हुआ था। उन्हें उनकी पीढ़ी के सबसे महान तबला वादकों में से एक माना जाता है। उनके परिवार में उनकी पत्नी एंटोनिया मिनेकोला और उनकी बेटियां अनीशा कुरैशी और इजाबेला कुरैशी हैं। परिवार की ओर से जारी बयान में कहा गया है, %वह दुनिया भर के अनगिनत संगीत प्रेमियों द्वारा संजोई गई एक असाधारण विरासत छोड़ गए हैं, जिसका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक बना रहेगा। छह दशकों के अपने करियर में जाकिर हुसैन ने कई प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय और भारतीय कलाकारों के साथ काम किया, लेकिन गिटारवादक जॉन मैकलॉघलिन, वायलिन वादक एल शंकर और तालवादक टीएच विक्कू विनायक्रम के साथ 1973 में भारतीय शास्त्रीय संगीत और पश्चिमी जैज संगीत के तत्वों के उनके संलयन को काफी सराहा गया। जाकिर हुसैन ने महज सात वर्ष की आयु से ही तबले पर हाथ आजमाना शुरू कर दिया था और आगे चलकर उन्होंने पंडित रविशंकर, अली अकबर खान और शिवकुमार शर्मा जैसे दिग्गजों सहित भारत के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत कलाकारों के साथ काम किया। यो-यो मा, चार्ल्स लॉयड, बेला फ्लेक, एडगर मेयर, मिकी हार्ट और जॉर्ज हैरिसन जैसे पश्चिमी संगीतकारों के साथ उनके अभूतपूर्व संगीत ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाया। जाकिर हुसैन ने अपने करियर में पांच ग्रैमी पुरस्कार जीते, जिनमें से तीन इस साल की शुरुआत में 66वें ग्रैमी पुरस्कार में मिले थे। भारत के सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतकारों में से एक हुसैन को 1988 में पद्म श्री, 2002 में पद्म भूषण और 2023 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

बशर अल असद का शासन समाप्त होने के बाद सड़कों पर उतरे लोग

शासन

> 50 साल से अधिक हम अत्याचारी शासन के अधीन रहे। जिसने देश में पूरी तरह से पार्टी और राजनीतिक गतिविधियों खत्म कर दिया था।

दमिश्क। आठ दिसंबर को सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद के रूस भागने और देश पर विद्रोही गुट हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) का कब्जा होने के बाद राजधानी दमिश्क की सड़कों पर जबरदस्त जश्न मनाया गया था। अब गुरुवार को दमिश्क के उम्मयद स्कवायर में सैकड़ों लोगों ने प्रदर्शन किया। उन्होंने अलग लोकतांत्रिक राज्य बनाने की मांग की। सीरिया में राष्ट्रपति बशर अल असद का 50 साल का शासन समाप्त होने के बाद अब अलग लोकतांत्रिक राज्य बनाने की मांग उठने लगी है। गुरुवार को दमिश्क के उम्मयद स्कवायर में सैकड़ों लोगों ने प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि अलग लोकतांत्रिक राज्य में महिलाओं को भी सार्वजनिक जीवन जीने का मौका दिया जाए। प्रदर्शन में शामिल लोगों ने धार्मिक शासन नहीं, ईश्वर धर्म के लिए है और मातृभूमि सभी के लिए है और हमें लोकतंत्र चाहिए, धार्मिक राज्य नहीं के नारे लगाए। 13 साल से गृह युद्ध झेल रहे सीरिया में कृत्रिम अंग निर्माता अयहम हामशो ने कहा कि हम यहां उस क्रांति के लाभों की रक्षा के लिए आए हैं, जिसकी बदौलत आज हम यहां स्वतंत्रता से खड़े हैं। 50 साल से अधिक हम अत्याचारी शासन के अधीन रहे। जिसने देश में पूरी तरह से पार्टी और राजनीतिक गतिविधियों खत्म कर दिया था। अब हम अपने मामलों को व्यवस्थित करने का प्रयास कर रहे हैं। ताकि हम एक धर्मनिरपेक्ष, नागरिक और लोकतांत्रिक राज्य बना सकें। आठ दिसंबर को सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद के रूस भागने और देश पर विद्रोही गुट हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) का कब्जा होने के बाद राजधानी दमिश्क की सड़कों पर जबरदस्त जश्न मनाया गया। वहीं एचटीएस ने धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आश्वासन देकर यहां एक मार्च 2025 तक के लिए अंतरिम प्रधानमंत्री की नियुक्ति की है।

यूक्रेन पर बातचीत के लिए ट्रंप से किसी भी समय मिलने को तैयार; जंग के बीच पुतिन का बड़ा बयान

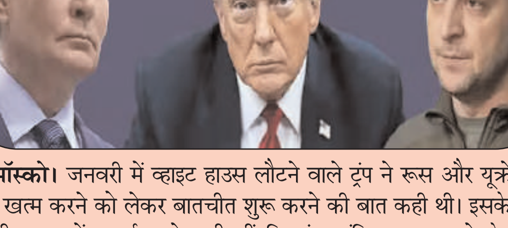

मॉस्को। जनवरी में व्हाइट हाउस लौटने वाले ट्रंप ने रूस और यूक्रेन से जंग खत्म करने को लेकर बातचीत शुरू करने की बात कही थी। इसके बाद से ही अटकलें लगाई जाने लगी थीं कि ट्रंप शांति कायम करने के लिए यूक्रेन को रूस की शर्तें मानने के लिए मजबूर कर सकते हैं। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर समझौतों को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने गुरुवार को कहा कि वह अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से किसी भी समय बातचीत के लिए तैयार हैं। इस दौरान वे ट्रंप से यूक्रेन को लेकर समझौतों पर बात भी करेंगे। हालांकि, पुतिन ने इस बात पर खेद जताया कि उन्होंने यूक्रेन के खिलाफ कार्रवाई पहले शुरू क्यों नहीं की। इससे पहले जनवरी में व्हाइट हाउस लौटने वाले ट्रंप ने रूस और यूक्रेन से जंग खत्म करने को लेकर बातचीत शुरू करने की बात कही थी। इसके बाद से ही अटकलें लगाई जाने लगी थीं कि ट्रंप शांति कायम करने के लिए यूक्रेन को रूस की शर्तें मानने के लिए मजबूर कर सकते हैं। रूस के वार्षिक समाचार सम्मेलन में 72 साल के पुतिन ने कहा कि उनके सैनिकों ने युद्ध बहादुरी दिखाई है। उन्होंने यूक्रेन के खिलाफ जंग के मैदान में बढ़त बना रखी है। उनका यह बयान ऐसे वक्त आया, जब कीव ने दावा किया है कि उत्तर-पूर्वी यूक्रेन पर रूसी हमलों में तीन लोग मारे गए हैं।

क्या है चीन का जादुई हथियार FWD: खुफिया गतिविधियों ने बढ़ाई दुनिया की टेंशन

चीन। चीन के यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट को लेकर पश्चिमी देशों में हंगामा मचा हुआ है। खासकर ड्रैगन की बढ़ती सैन्य क्षमताओं और उसके जासूसी तंत्र की पहुंच को देखते हुए। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि हाल ही में ब्रिटिश राजघराने के सदस्य प्रिंस एंड्रयू से एक कथित चीनी जासूस के नजदीकी रिश्तों को लेकर खुलासे हुए हैं। चीन की बढ़ती ताकत के साथ उसकी खुफिया गतिविधियों को लेकर पूरी दुनिया में तनाव की स्थिति रही है। हालांकि, चीन के लिए खुफिया गतिविधियां सिर्फ जासूसी या निगरानी तक सीमित नहीं हैं। बल्कि चीन की एक और ताकत पूरी दुनिया में उसको लेकर हो रही चर्चाओं और उसके प्रोपेगैंडा के प्रबंधन का काम करती है। ड्रैगन की यह ताकत है उसका यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट- जिसे आठ दशक पहले इसके संस्थापक माओ जेदॉन्ग ने चीन का जादुई हथियार तक करार दिया था। अब चीन के मौजूदा राष्ट्रपति इस जादुई हथियार का बेधड़क इस्तेमाल करने में भी जुटे हैं।बताया गया है कि चीन के यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट को लेकर पश्चिमी देशों में हंगामा मचा हुआ है। खासकर ड्रैगन की बढ़ती सैन्य क्षमताओं और उसके जासूसी तंत्र की पहुंच को देखते हुए। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि हाल ही में ब्रिटिश राजघराने के सदस्य प्रिंस एंड्रयू से एक कथित चीनी जासूस के नजदीकी रिश्तों को लेकर खुलासे हुए हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि प्रिंस एंड्रयू ने जासूस के तौर पर पहचाने गए क्रिस यांग (यांग तेंग्बो) को एक समय चीन में निवेशकों से बातचीत के लिए अपना प्रतिनिधि तक करार दे दिया था। जबकि उन्हें यांग के जासूस होने की जानकारी नहीं थी। इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली घटना यह रही कि यांग से जो डिवाइस जब्त किया गया, उसमें प्रिंस एंड्रयू के एक सलाहकार का संदेश भी पाया गया। इसमें लिखा था, आपके मार्गदर्शन से हमें विंडसर (शाही परिवार का घर) के अंदर-बाहर बिना पकड़ में आए प्रासंगिक लोगों तक पहुंचने का रास्ता मिल गया है।÷ इसी घटना ने दुनियाभर में सुरक्षा एजेंसियों के कान खड़े कर दिए हैं कि आखिर कैसे चीन का एक कथित जासूस राजपरिवार तक पहुंच बनाने में सफल रहा है। इस पूरे घटनाक्रम के बाद दुनिया की नजर यूएफडब्ल्यूडी पर पड़ी है।

कृपाशंकर सिंह ने माना रेल मंत्री और शिक्षा मंत्री का आभार

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। किसी भी शहर के विकास के लिए यातायात की साधनों और शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही कारण है कि जौनपुर को रेल परिवहन से जोड़ने की दिशा में महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्यमंत्री तथा जौनपुर लोकसभा से बीजेपी के पूर्व प्रत्याशी कृपाशंकर सिंह लगातार प्रयत्नशील रहे। अंततः रेल मंत्री ने लंबी दूरी की 6 ट्रेनों को जौनपुर से होकर जाने की मांग को हरी झंडी देकर जौनपुर स्टेशन के कद को बड़ा कर दिया है। मुंबई के लिए जिन दो गाड़ियों को जौनपुर स्टेशन से होकर जाने का आदेश दिया गया है उनमें लोकमान्य तिलक से गोरखपुर जाने वाली 11081 तथा गोरखपुर से लोकमान्य तिलक जाने वाली 11082 ट्रेन शामिल है। इसी तरह हावड़ा रूट की चार ट्रेनों को जौनपुर होकर जाने का आदेश दिया गया है। इन ट्रेनों में कोलकाता से गाजीपुर सिटी जाने वाली 22323 शब्दभेदी एक्सप्रेस, गाजीपुर सिटी से कोलकाता जाने वाली 22324 शब्दभेदी एक्सप्रेस, गोरखपुर से शालीमार जाने वाली 15022 शालीमार एक्सप्रेस तथा शालीमार से गोरखपुर जाने वाली 15021 शालीमार एक्सप्रेस का समावेश है। कृपाशंकर सिंह ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को जौनपुर जनपद की जनता की तरफ से धन्यवाद दिया है। साथ ही उन्होंने जौनपुर में केंद्रीय विद्यालय की स्वीकृति के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का भी जौनपुर की जनता की तरफ से आभार मानते हुए धन्यवाद दिया है। कृपाशंकर सिंह ने कहा कि पूर्वांचल विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने के लिए वह लगातार प्रयासरत है। पूर्वांचल विश्वविद्यालय को केंद्रीय विद्यालय का दर्जा मिल जाने से यहां अनुसंधान और नवाचार के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हो जाएगी।

अटल सुशासन सप्ताह के अंतर्गत हुई भाषण प्रतियोगिता

अवधनामा संवाददाता

आजमगढ़। उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरुप महाराज सुहेलदेव विश्विद्यालय द्वारा दिये गए निर्देश के क्रम में 'अटल सुशासन सप्ताह' के अंतर्गत शुक्रवार को प्राचार्य प्रो0 प्रेमचंद्र यादव की अध्यक्षता में डी ए वी पी जी कॉलेज के सभागार में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के स्मृति में 18 दिसम्बर से 25 दिसम्बर तक मनाए जा रहे अटल सुशासन सप्ताह के अंतर्गत एन सी सी,एन एस एस,रोवर्स-रेंजर्स के कैडेटों के मध्य भाषण एवं एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें भाषण प्रतियोगिता में वर्षा भारती प्रथम स्थान,पूजा गुप्ता द्वितीय स्थान एवं अमिता यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया वहीं एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता में नीतीश कुमार प्रथम, कयूम आलम द्वितीय एवं अभयराज यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य ने पूर्व प्रधानमंत्री को भारतीय राजनीति का अजातशत्रु बताते हुए कहा कि राजनीति और मानव मूल्यों के अनुपम सामंजस्य को व्यक्त करता हुआ। उनका जीवन सार्वजनिक जीवन के लिए व्यक्तिगत जीवन के त्याग की एक अद्भुत मिसाल है, अटल जी के विचार,व्यक्तित्व और कृतित्व, वर्तमान भारतीय राजनीतिक नेतृत्व के लिए आज भी आदर्श और प्रासंगिक है। कार्यक्रम का संचालन सहयुक्त एन सी सी अधिकारी ले0 डॉ0 पंकज सिंह तथा आभार ज्ञापन शिक्षक प्रो0 गीता सिंह ने किया।कार्यक्रम के संयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ0 राजेश कुमार और रोवर्स, रेंजर्स के प्रभारी कृष्णानंद पाण्डेय का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर एन सी सी,एन एस एस तथा रोवर्स-रेंजर्स के कैडेट्स ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई।

संविधान की रक्षा के लिए मैं कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हूँ: डॉ. अमित यादव

- मंगदपुर ग्राम के आंबेडकर पार्क में हुआ धरना प्रदर्शन

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। समाजवादी मजदूर सभा के राष्ट्रीय महासचिव अमित यादव ने अपने हजारों समर्थकों के साथ आंबेडकर पार्क में पहुँच कर बाबा साहेब आम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर सभा को संबोधित किया। जबकि प्रशासन द्वारा उन्हें रोकने की कोशिश की गयी। पुलिस सुबह से ही घर पहुँच कर कार्यक्रम रद्द कराना चाहा पर अमित यादव ने कहा कि मैं किसी का अपमान करने नहीं जा रहा हूँ। मुझे माल्यार्पण करने से रोकने कोशिश न करें। मैं कोई कानून नहीं तोड़ रहा हूँ। किसी का भी सम्मान करने से मुझे कोई नहीं रोक सकता। अपने वक्तव्य में उन्होंने आंबेडकर के योगदान को परिभाषित किया। तथा उनके द्वारा रचित कानून की उपलब्धि का बयान किया। गिरफ्तारी के मिडिया के सवाल पर उन्होंने कहा कि मुझे गिरफ्तार होने का कोई डर नहीं है। संविधान की रक्षा के लिए मैं कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हूँ। अपने दादा राजबहादुर यादव तथा पिता अर्जुन सिंह यादव को याद करते हुए कहा कि मेरे रगों में उन लोगों का खून दौड़ रहा है। जो जौनपुर के बिकास के लिए जीवन भर समर्पित रहे। अमित शाह के बयान की निंदा करते हुए कहा कि ऐ सरकार सामंती सरकार है। ऐ संविधान खत्म कर मनुस्मृति कानून लागू करना चाहती है। हम जनता के अधिकारों का हनन नहीं करने देगें। अन्त में उन्होंने कहा कि समाजवादी अध्यक्ष अखिलेश यादव के बिचारों व निर्देशों का तन मन धन से पालन करेंगे।

संजय उपाध्याय बने जिलाध्यक्ष लोगों ने दी बधाई

- अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय प्रबंधक सभा द्वारा द्वारा मनोनीत किया गया जिलाध्यक्ष

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। क्षेत्रीय सचिव पूर्वांचल प्रभारी गजेंद्र सिंह द्वारा प्रस्तुत प्रगति आख्या पर विचार विमर्श करते हुए प्रादेशिक स्तर पर यह पाया गया कि जनपद जौनपुर में कतिपय विसंगतियों के कारण संगठन के क्रियाकलाप बाधित हो रहे हैं संगठन कार्यो को सुदृढ़ बनाए जाने की दृष्टिकोण से जिला अध्यक्ष को तत्काल प्रभाव से मुक्त करते हुए संजय उपाध्याय प्रबंधक इंटर कॉलेज मीठेपार को जौनपुर जिला अध्यक्ष मनोनीत किया गया तथा उन्हें यह भी निर्देश दिया गया कि अपने जिले के समस्त अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के प्रबंधकों को अग्रिम एक माह में एकत्रित कर जिला कार्यकारिणी पुनर्गठित कर 18,19 फरवरी को प्रयागराज में आयोजित हो रही संगठन की बैठक में जनपद जौनपुर के आधिकाधिक प्रबंधकों की सहभागिता सुनिश्चित करायेगे यह जिम्मेदारी दी गई वहीं उनके उज्जवल भविष्य की कामना संगठन के उच्च पदाधिकारी ने की। जहां संजय उपाध्याय के जिला अध्यक्ष बनने पर उन्हें विभिन्न विद्यालयों के प्रबंधकों ने बधाई दी जिनमें घनश्यामपुर इंटर कॉलेज के प्रबंधक अनिल कुमार सिंह ,गद्दोपुर के प्रबंधक रवींद्र सिंह , के पी पांडेय इंटर कॉलेज ज़फ़राबाद के प्रबंधक बेटू पांडेय,बहुधन्धी इंटर कॉलेज के प्रबंधक पंकज शुक्ला, बी आर पी इंटर कॉलेज के प्रबंधक दिलीप श्रीवास्तव, इंटर कॉलेज महरूपुर के प्रबंधक पंपम सिंह, महराजगंज के प्रबंधक जयप्रकाश जयसवाल, दसरथपुर इंटर कॉलेज के प्रबंधक राकेश पांडेय, इंटर कॉलेज बदलापुर के प्रबंधक ओम प्रकाश सिंह, सुजानगंज के प्रबंधक जयप्रकाश मिश्र, मेहँदी के यादव जी, फतेहगंज इंटर कॉलेज अजय सिंह, गोहका के प्रबंधक मुकेश तिवारी, मडियाहूं कॉलेज के प्रबंधक पवन तिवारी, बड़ेरी के राजेश त्रिपाठी तथा अन्य विद्यालयों के प्रबंधक एवं शिक्षकों ने उन्हें बधाई दी।

मंदिर में चोरी के तीन आरोपी को पुलिस ने 24 घण्टे के अन्दर किया गिरफ्तार

जौनपुर (बरसठी) थाना क्षेत्र के चंद्रभानपुर गांव स्तिथ श्री संकट मोचन विजय हनुमान मंदिर में चोरी करने वाले आरोपित को बरसठी पुलिस ने 24 घण्टे के अंदर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। पुलिस ने चोरी की घटना का पर्दाफाश करते हुए सामान सहित उनके पास से अवैध असलहा, कारतूस व नगदी भी बरामद किया है। आरोपितों की निशानदेही पर छिपाकर रखे गए भगवान राम, लक्ष्मण और हनुमान के चाँदी धातु के बने मुकुट सहित अन्य सामान बरामद किया है। पुलिस ने तीनों आरोपियों के विरुद्ध चोरी का मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी राजेश यादव ने बताया कि, उक्त गांव निवासी रमेशचंद्र दुबे ने बरसठी पुलिस को सूचना दी की उनके गांव में विजय हनुमान मंदिर से किसी ने चाँदी से बनी तीन कीमती मुकुट, चाँदी से बनी मछली के आकार का कुंडल और अन्य सामान रात में चोरी कर लिया है। जिसका साक्ष्य सीसीटीवी फुटेज है। फुटेज के आधार पर सक्रिय हुई बरसठी पुलिस ने मंदिर में चोरी करने वाले रंजीत सरोज पुत्र शिवशंकर, तेजा बनवासी व कुंदन बनवासी पुत्र पन्नालाल निवासी खरगापुर थाना बरसठी शामिल रहे। शुक्रवार को पुलिस ने तीनों आरोपियों को बबूरीगांव मोड़ के पास से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस द्वारा जामातलाशी के दौरान आरोपियों के पास एक 315 बोर का तमंचा, जिंदा कारतूस व नगदी बरामद हुए।

स्टॉक से अधिक शराब मिलने पर अंग्रेजी शराब की गोदाम सील

- गोदाम के अनुज्ञापी और आबकारी विभाग के बीच एक साल से चल रही नूराकुश्ती
- गोदाम के अनुज्ञापी के पति जा चुके हैं जेल

अवधनामा संवाददाता

बलिया। कदम चौराहा स्थित अंग्रेजी शराब की गोदाम पर बीती रात आबकारी विभाग की टीम ने छापेमारी कर सील कर दिया। अधिकारियों की मानें ते स्टॉक से अधिक शराब की खेप पाए जाने पर सील की कार्रवाई की गई है। वहीं आबकारी विभाग की इस कार्रवाई से जनपद के अन्य शराब कारोबारियों में हड़कंप मचा हुआ है। हालांकि स्टॉक से कितना अधिक शराब बरामद हुआ है, इसका स्पष्ट आंकड़ा विभाग ने अभी तक जारी नहीं की है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि इस गोदाम के साथ आबकारी विभाग की नूराकुश्ती विगत एक साल से जारी है। पिछली बार नूराकुश्ती में जहां गोदाम की अनुज्ञापी संगीता देवी के पति छितेश्वर प्रसाद जेल भी गए थे, वहीं बाद में छितेश्वर प्रसाद जेल से निकलने के बाद शासन तक गुहार लगातार न सिर्फ आबकारी विभाग के भंडाफोड़ किए थे, बल्कि दो–दो इंस्पेक्टर के खिलाफ न्यायालय से मुकदमा भी दर्ज करवाए थे। कुछ भी हो गोदाम सील की कार्रवाई से एक बार फिर शराब कारोबारियों में हड़कंप की स्थिति है। आबकारी विभाग के अधिकारियों के अनुसार उनको सूचना मिली थी कि गोदाम में स्टॉक से अधिक शराब है। इस पर टीम बनाकर जब छापेमारी की गई तो बात सही निकली। इस पर सील की कार्रवाई की गई है।

ठीक से जांच हुई तो हर गोदाम में मिल सकती है स्टॉक से अधिक शराब

बलिया। कदम चौराहा स्थित अंग्रेजी शराब की दुकान में स्टॉक से अधिक शराब की खेप मिलना तो एक बानगी है, जनपद के लगभग हर गोदाम चाहे देसी शराब की हो या फिर अंग्रेजी शराब, सबमें यही हाल है। विस्तार से बात करें तो मौजूदा समय में शराब तस्करी मामले में बलिया जिला हब बन गया है। रोज रात को गंगा और घाघरा नदी के रास्ते नाव के सहारे बड़े पैमाने में शराब की तस्करी होती है और यह शराब इन्हीं गोदामों से निकलकर उपर जाती है। ऐसा नहीं कि आबकारी विभाग कुछ मालूम नहीं है। मालूम सब है, बस एक आध कार्रवाई करके कानून पालने करने का ढोंग रचता है। बाकी साठगांठ तो ऐसी है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

कैंडल मार्च कर शहीद स्थल पर दी गई श्रद्धांजलि

अवधनामा संवाददाता

आजमगढ़। जिला, शहर कांग्रेस कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष मोहम्मद नजम शमीम की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर 18 दिसंबर को शांतिपूर्ण ढंग से विधानसभा घेराव में पुलिसिया बर्बरता के शिकार युवा कांग्रेस के नेता गोरखपुर के निवासी प्रभात पांडे की हृदय विदारक मृत्यु हो गई।

इसी क्रम में असम के गुवाहाटी के कांग्रेस नेता मृदुल इस्लाम की भी शांतिपूर्ण प्रदर्शन में पुलिसिया बर्बरता के शिकार होने के बाद मृत्यु हो गई। इसी कारण में आज दोनों नेताओं को आजमगढ़ कार्यालय पर श्रद्धांजलि सभा की गई और कैंडल मार्च पर शहीद स्थल पर श्रद्धांजलि दी गई। नजम शमीम ने दोनों कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भाजपा सरकार के कुशासन के खिलाफ हम कांग्रेस जन आम जनता के हित के लिए लड़ते रहेंगे जब हम कांग्रेसी अंग्रेजों से नहीं डरे तो तो इनसे क्या डरेंगे हमारे बहादुर नेताओं की शहादत रहेगा नहीं जाएगी ना यह हमारे हौसले तोड़ पाएंगे देश में बढ़ती बेरोजगारी कमर तोड़ महंगाई लूट हत्या बलात्कार सांप्रदायिकता और संविधान और बाबा साहब का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे और इसका मुंहतोड़ जवाब देंगे। कार्यक्रम में सर्वश्री तेजबहादुर यादव, बेलाल अहमद बेग, चंद्रपाल यादव, मुन्नू यादव, रामप्यारे यादव, मंत्राज यादव, गोविंद शर्मा, बालचंद राम, शीला भारती, मोहम्मद आमिर, मुन्नू मौर्य, धर्मेंद्र यादव, शंभू शास्त्री आदि लोग उपस्थित रहे।

पुलिस की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

प्रयागराज। महाकुम्भ मेला-2025 के सकुशल एवं निर्विघ्न आयोजन के दृष्टिगत आज अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज जोन तथा पुलिस आयुक्त प्रयागराज द्वारा कुम्भमेला की तैयारियों के सम्बन्ध में संकल्प सभागार, रिजर्व पुलिस लाइन कुम्भ मेला में प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। प्रशिक्षण कार्यशाला में मेले की सुरक्षा व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, प्रमुख एजेंसियों से सहयोग, श्रद्धालुओं से व्यवहार तथा आपातकालीन प्लान के सम्बंध में अवगत कराते हुए मेला ड्यूटी में लगे सभी राजपत्रित अधिकारी एवं थाना प्रभारियों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये गए।

अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के ट्रॉयल में भाग लेंगे अवधेश

प्रयागराज। ईगल आई शूटिंग स्पोर्ट्स अकादमी के प्रशिक्षु अवधेश कुमार पटेल का चयन जनवरी माह में डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज नई दिल्ली में होने वाले अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं के ट्रॉयल लिए किया गया है। अकादमी के पिस्टल कोच विजय चंदेल व राइफल कोच फरीद सिद्दीकी ने बताया कि अकादमी के प्रशिक्षु एवं उत्तर मध्य रेलवे में कार्यरत अवधेश कुमार पटेल एयर राइफल इवेंट में भाग लेंगे। इस ट्रॉयल में सफल होने के बाद वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में भाग ले सकेंगे। अवधेश अभी भोपाल में चल रही 67वीं नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जहां प्रदर्शन के आधार पर इन्हें ट्रॉयल के लिए चयनित किया गया है। उनके कोच ने बताया कि आर्थिक रूप से कमजोर अवधेश रेलवे में नियुक्ति के बार लगातार अपने खेल में निखार ला रहे हैं। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि अवधेश जल्द ही देश का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

साधना अरुणाचल प्रदेश की अंडर-19 टीम में

प्रयागराज। कैंटोन्मेंट बोर्ड क्रिकेट अकादमी की प्रशिक्षु साधना पाल का चयन बीसीसीआई द्वारा आयोजित वूमेंस अंडर-19 वनडे ट्रॉफी के लिए अरुणाचल प्रदेश की 17 सदस्यीय टीम में हुआ है। अरुणाचल प्रदेश की टीम चार जनवरी को त्रिवेंद्रम (केरल) में छत्तीसगढ़ के खिलाफ अपना पहला मुकाबला खेलेगी। साधना कैंटोन्मेंट बोर्ड क्रिकेट अकादमी के कोच संजीव कुमार से प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं। अशोक नगर निवासी हरिश्चंद्र पाल एवं शमा पाल की पुत्री साधना दाहिने हाथ की ओपनर बल्लेबाज हैं। साधना के चयन पर छावनी परिषद इलाहाबाद के मुख्य अधिशाषी अधिकारी मोहम्मद समीर इस्लाम, कैंट हाई स्कूल की प्रधानाचार्या कल्पना शर्मा, अनिल मिश्र और शालू सिंह ने बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी हैं।

गृहमंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग को लेकर सपा नेता ने लगाये बैनर

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी लोहिया वाहिनी के महानगर अध्यक्ष सौरभ यादव रामा द्वारा शहर के विभिन्न चौराहों पर गृहमंत्री अमित शाह द्वारा संविधान निर्माता डॉ बाबासाहेब आंबेडकर का अपमान करने पर इस्तीफे की मांग का बैनर लगाते हुए विरोध जताया। बताते चलें की गृह मंत्री अमित शाह ने भारत की संसद में बाबा साहब के प्रति अशोभनीय भाषा का प्रयोग कर संविधान रचयिता का अपमान किया था। जिसके विरोध में समाजवादी पार्टी मुखर हो कर विरोध कर रही है। 21 दिसम्बर शनिवार को सपा मुखिया अखिलेश यादव के निर्देश पर सभी ज़िला मुख्यालयों पर इसको लेकर विरोध भी होगा। इसी सम्बन्ध में लोहिया वाहिनी के महानगर अध्यक्ष सौरभ यादव रामा ने सुभाष चौराहा, बालसन चौराहा, कम्पनी बाग़, सोहबतियाबाग सहित विभिन्न इलाक़ों में बैनर लगा कर विरोध जताते हुए अमित शाह से इस्तीफा देने की मांग की। उन्होंने कहा कि भाजपा की दलित एवं पिछड़े वर्ग विरोधी मानसिकता उजागर हो गई है।अमित शाह अपने वक्तव्य पर देश से माफी मांगे अन्यथा सपा उनसे इस्तीफा देने की मांग करती है।

सूत्रकृमियों से होने वाली हानियों व निदान हेतु जागरूकता जरूरी: डॉ. हेमलता पंत

प्रयागराज। सी एम पी कॉलेज, प्रयागराज के जंतु विज्ञान विभाग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा वित्तपोषित परियोजना शीर्षक निमाटोड्स आर यूसिंग एज ए बायोमानीटोरिंग एजेंट टू एनालाइज सॉयल हेल्थ स्टेट्स ऑफ़ रीवर गंगा और यमुना एट प्रयागराज में हुए बारह क्षेत्रों क्रमशः नैनी, अरैल, श्रृंगवेरपुर, झूँसी, बलुआघाट, दारागंज, जमुनीपुर, फाफामऊ, मनकामेश्वर, छतनाग, मेकफरसन लेक और संगम घाट की मृदा नमूनों का सर्वेक्षण किया गया। इन क्षेत्रों की मृदा के भौतिक रासायनिक गुणों के साथ-साथ मृदा में उपस्थित पादप परजीवी सूत्रकृमियों की जांच भी की गई। परीक्षण उपरांत यह पाया गया कि इन सभी क्षेत्रों में मिलैडोगाइन, हेटरोडेरा, रोटाइलिंकस, प्रेटाइलिंकस, टाइलिंकस एवम् हेलिकोटाइलिंकस प्रजाति के सूत्रकृमि पाए गए हैं। मिलैडोगाइन, हेटरोडेरा, रोटाइलिंकस एवं प्रेटाइलिंकस सूत्र कृमियों की अधिकतम संख्या क्रमशः नैनी , अरेल , श्रृंगवेरपुर, झूँसी क्षेत्रों की मृदा नमूनों में उपस्थित थी। सूत्र कृमियों की यह संख्या सबसे अधिक जनवरी, सितंबर, मार्च, जुलाई एवं मई में लिए गये मृदा नमूने में पाई गई। उन्होंने बताया कि सूत्रकृमि (निमाटोड) धागे समान जंतु होते हैं। जो पौधे , जंतु व मनुष्यो में रोग फैलाते हैं। पादप परजीवी सूत्रकृमि आकार में बहुत छोटे होते हैं । सूत्रकृमि मृदा में जड़ों पर तथा मृदा के ऊपर पौध भागों में तना, पत्ती और बीज आदि पर लगाते हैं।

हरि इच्छा के अनुसार चलेगा भंडारा

प्रयागराज। आवाहन अखाड़ा के राष्ट्रीय सचिव महंत सत्यगिरि ने बताया कि भंडारे का आयोजन शुरू हो चुका है और पूरा महाकुम्भ यह निरंतर चलेगा। सभी श्रद्धालुओं को यहां निशुल्क भरपेट भोजन प्राप्त होगा। वहीं, रघुवंश सेवा संकल्प ट्रस्ट, अयोध्या द्वारा भी भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। राम वैदेही मंदिर के महंत स्वामी दिलीप दास त्यागी जी महाराज ने बताया कि यह भंडारा हरि इच्छा के अनुसार 24 घंटे चलेगा। हमारा प्रयास संगम स्नान के लिए आए समस्त श्रद्धालुओं को अन्न प्रसाद ग्रहण कराना है। इसी तर्ज पर खरगौन मध्य प्रदेश का मां रेवा फाउंडेशन भी महाकुम्भ में भंडारे का आयोजन करेगा, जो 24 घंटे का होगा। इसे अनन्य अन्न क्षेत्र का नाम दिया गया है। यहां पूरे 45 दिन सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद प्राप्त हो सकेगा।

पंचदशनाम आवाहन अखाड़ा की पेशवाई कल

- बैंड बाजा हाथी घोड़ा पालकी के साथ निकलेंगे संत

अवधनामा संवाददाता

महाकुम्भ नगर। सबसे प्राचीन अखाड़ा श्री पंच दशनाम अखाड़ा की पेशवाई भव्यता के साथ रविवार 22 दिसम्बर को निकलेगी। पेशवाई शोभा यात्रा में सैकड़ों रथों पर सवार होकर साधु संत नैनी स्थिति मडेका आश्रम से निकलकर विभिन्न मार्गो से होते हुए काली मार्ग सेक्टर नंबर 20 पर पहुंचेंगे। इस शोभा यात्रा में हाथी घोड़ा पालकी के साथ देश भर के दर्जनों नामचीन बैंड भी शामिल होंगे यह जानकारी आवाहन अखाड़ा के महामंत्री महंत सत्य गिरी ने दी है।

महंत गिरी ने बताया पेशवाई का नेतृत्व आवाहन अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधूत बाबा अरुण गिरी जी महाराज करेंगे। पेशवाई में शामिल होने के लिए बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ अशोक चौधरी भी आयेगे। गौरतलब हो कि आवाह्न अखाड़ा शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित सबसे प्राचीन अखाड़ा हैं। महंत राहुल गिरि महाराज ने बताया कि पेशवाई की सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई है। शोभायात्रा में अखाड़े के नागा संत आकर्षण का केंद्र रहेंगे। बैंड बाजा की धुनों पर नागा संत करतब दिखाएँगे।

ज्ञात हो कि आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अरुण गिरि महाराज भी अपनी पर्यावरण प्रेम के कारण मेले में अलग पहचान रखते हैं।

40 फीट का पुल मुकम्मल न कर पाने वाले बलिया को चले है मुंबई बनाने : शमीम खान

अवधनामा संवाददाता

- विकास के मुद्दे पर प्रदेश महासचिव ने भाजपा के मंत्री पर कसा तंज

बलिया। माल्देपुर से कदम चौराहा तक फोरलेन की सड़क डिवाइडर और कटहरनाला पुल बनाए जाने में हो रही लापरवाही के विरोध में ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुसलमीन पार्टी के पदाधिकारी कलेक्ट्रेट पहुंच कर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेता बड़े-बड़े वादे और दावे करते हैं लेकिन उनके दावों और वादों का कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने कहा था कि हम बलिया को मुंबई बना देंगे, लेकिन आज डेढ़ साल से ज्यादा का समय बीत चुका है। एक 40 फीट का पुल भी मुकम्मल नहीं कर पाए। बलिया में जाम की लंबी-लंबी लाइन लगा जा रही है। राहगीरों और यात्रियों को जाम में घंटों मशक्कत करना पड़ रहा है। रेफर मरीजों की गाड़ियां भी घंटो जाम में फंसी रह रही हैं, पुल निर्माण का कार्य अधर में लटका हुआ है। डिवाइडर का कार्य भी धीमी गति से चल रहा है। सुरक्षा मानकों की घोर लापरवाही है, जिसके कारण कई हादसे हुए। जिसमें कई लोगों ने अपनी जान गंवा दी और कई लोग अस्पतालों में भर्ती हैं। आखिर इन सब की जिम्मेदारी कौन लेगा, हम जिलाधिकारी के माध्यम से चाहते हैं कि मुख्यमंत्री जी इसे संज्ञान में लें और इस तरह की व्यवस्था पर संबंधित विभागों को प्रभावी आदेश करें। ताकि इस तरह की घटनाओं से बलिया वासियों की सुरक्षा हो सकें। इस अवसर पर जिला संगठन प्रभारी मोहम्मद नसीम खान, जिलाध्यक्ष राकेश कुमार गुप्ता, जिला प्रमुख महासचिव महताब आलम, जिला कोषाध्यक्ष आबिद अली, जिला सचिव दीपक यादव, जिला संगठन मंत्री मुदस्सिर अंसारी, जिला सचिव फरीद अहमद मुराद, जिला कार्य समिति के सदस्य सनाउल्लाह खान और नियाज अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

कार्यालय: अधिशासी अभियन्ता, जोन-7, इन्दिरा नगर जलकल विभाग, नगर निगम, लखनऊ

प0सं0-178/EE-7/L.J.S/24-25 दिनांक: 20.12.2024

(अल्पकालीन निविदा -सूचना)

जलकल विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से नीचे दिये गये विवरण के अनुरूप कार्य कराने हेतु निविदायें दिनांक 27.12.2024 के सायंकाल 4:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र किसी भी कार्य दिवस में दिनांक 27.12.2024 को 1:00 बजे तक निविदा मूल्य का नगद भुगतान कैश काउन्टर पर करके निविदा प्राप्त किये जा सकते है। भरी हुई सील्ड निविदायें उसी दिन अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में सायंकाल 3:30 बजे तक निविदा बाक्स में प्राप्त की जायेगी। निविदा बाक्स से प्राप्त सभी निविदायें उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष सांय 4:00 बजे खोली जायेगी।

क0 सं0	कार्य का विवरण	निविदा का मूल्य	धरोहर धनराशि
1	जोन-7 इन्दिरा नगर के अंतर्गत अवध विहार कॉलोनी में मकान नं0-29 से मकान नं0-49 तक एवं श्री डी0 एस0 शुक्ला के मकान से श्री गोपाल शुक्ल के मकान तक 110 एम0 एम0 डाया की लगभग 135 मीटर पी0 वी0 सी0 पाइप लाइन गौपिंग का कार्य पूर्ण करने हेतु।	200.00	2900.00

नियम एवं शर्ते निविदा प्रपत्र में दी गई हैं, जिन्हे देखा जा सकता है। विस्तृत जानकारी अधिशासी अभियंता जोन-7 इन्दिरा नगर लखनऊ के कार्यालय में सम्पर्क कर किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है। निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी/महाप्रबन्धक में निहित है।

अधिशासी अभियन्ता जोन-7
जलकल विभाग

पोको का धमाका, सबसे चमकदार AMOLED डिस्प्ले वाला M7

लखनऊ। भारत के सबसे लोकप्रिय और तेजी से बढ़ते कंज़्यूमर टेक ब्रांड पोको ने साल का शानदार समापन करते हुए दो नए स्मार्टफोन पोको M7 Pro 5G और पोको C75 5G लॉन्च किए हैं। इन स्मार्टफोन्स को अपने-अपने सेगमेंट में सर्वश्रेष्ठ अनुभव देने के लिए डिजाइन किया गया है। ये डिवाइस बेहतरीन डिस्प्ले, दमदार परफॉर्मेंस और किफायती कीमत के साथ स्मार्टफोन के नए मानक तय करते हैं। पोको इंडिया के कंट्री हेड हिमांशु टंडन ने इस मौके पर कहा, पोको में हमारा लक्ष्य हमेशा ऐसी तकनीक पेश करना है, जो सभी के लिए सुलभ और उपयोगी हो। उन्होंने बताया कि पोको M7 Pro 5G एक पावरफुल मिड-रेंज स्मार्टफोन है, जिसमें सेगमेंट का सबसे चमकदार U AMOLED डिस्प्ले, शानदार ऑडियो क्वालिटी और फ्लैगशिप-ग्रेड कैमरा दिया गया है। वहीं, पोको ष्75 5त्र भारत का सबसे किफायती 5G स्मार्टफोन है, जिसमें खासतौर पर सोनी का कैमरा सेंसर लगा है। उन्होंने आगे कहा, इन नए लॉन्च के साथ पोको अपने वादे को दोहराता है कि हम अपने ग्राहकों को

बेहतरीन तकनीक और फीचर्स को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराते रहेंगे। पोको M7 Pro 5G - एक ऐसा शानदार फोन जो आपका पूरा मनोरंजन करेगा और हर अनुभव को खास बनाएगा।

बेहतर और चमकीली तस्वीरें

इस फोन में आपको सेगमेंट का सबसे चमकदार AMOLED डिस्प्ले मिलेगा। इसकी 6.67 इंच FHD+ स्क्रीन 2100 निट्स की पीक ब्राइटनेस देती है, जिससे धूप में भी स्क्रीन साफ नजर आती है। HDR10+ और 120H5 की एडैप्टिव रिफ्रेश रेट के साथ हर फ्रेम न सिर्फ सुपर क्लियर बल्कि एकदम स्मूथ दिखता है।

शानदार आवाज का अनुभव

फोन में दिए गए डॉल्बी एटमॉस-पावर्ड स्पीकर्स आपको सिनेमाई अनुभव देते हैं। इसमें आवाज को 300% तक तेज करने की क्षमता है, जिससे आवाज़ साफ, तेज और दमदार सुनाई देती है।

फ्लैगशिप-ग्रेड कैमरा

फोटोग्राफी का मजा लेने के लिए इसमें 50 MP का सोनी LYT-600 कैमरा है, जो OIS (ऑप्टिकल इमेज स्टेबिलाइजेशन) और सेगमेंट के सबसे बड़े f/1.5 अपर्चर के साथ आता है।

इससे आप बेहद साफ और खूबसूरत तस्वीरें ले सकते हैं, चाहे दिन हो या रात। AI नाइट मोड और AI जूम जैसे फीचर्स फोटोग्राफी को आसान और ज्यादा मजेदार बना देते हैं। अब चाहे आप खूबसूरत लैंडस्केप कैप्चर कर रहे हों या रात में डिटेल्ड शॉट्स ले रहे हों, पोको M7 Pro 5G हर तस्वीर को खास बना देगा।

भारत में बदल रहे हैं शादियों के ट्रेंड्स : विंधम रिसर्च

आकर्षण

भारत में भव्य शादी की वापसी के बाद गोवा और उदयपुर जैसे विश्व प्रसिद्ध और उभरते हुए डेस्टिनेशंस आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं

लखनऊ। भारत में शादी करने के तौर-तरीकों में बदलाव देखा जा रहा है। विंधम होटल्स एंड रिसॉर्ट्स द्वारा जारी एक नई रिपोर्ट में भारतीय शादी की योजनाओं में हो रहे दिलचस्प बदलावों का खुलासा किया गया है। बदलाव संबंधी यह रिपोर्ट हाल ही में सगाई या शादी कर चुके 1,000 लोगों के सर्वेक्षण पर आधारित है, जिसमें बताया गया है कि गोवा, उदयपुर और जयपुर जैसी जगहें अब भी शादी के लिए सबसे पसंदीदा गंतव्य स्थान बनी हुई हैं। दूसरी तरफ, दार्जिलिंग, अमृतसर, मसूरी और देहरादून जैसे सुंदर और शांत स्थान भी तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। ये जगहें अपनी प्राकृतिक खूबसूरती और अनोखेपन के कारण कपल्स (युगलों) को आकर्षित कर रही हैं। यह बदलाव इस बात को दर्शाता है कि आज के युगल अपने खास दिन को पारंपरिक तरीकों से अलग हटकर और भी ज्यादा निजी, यादगार और खास बनाना चाहते हैं।

इस रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि आज की शादियों में परिवार और दोस्तों के साथ स्थायी यादें बनाने पर खास ध्यान दिया जा रहा है। बड़ी और कई दिनों तक चलने वाली शादियों का चलन फिर से लौटता हुआ दिख रहा है। युवा पीढ़ी, खासकर नई पीढ़ी (ज़ेन ज़ी), अपनी शादी में बजट का ध्यान रखते हुए भी भव्यता का एक अच्छा संतुलन बनाने की कोशिश कर रही है। वे शादी की योजना बनाते समय व्यावहारिक दृष्टिकोण अपना रहे हैं। यह बदलाव दिखाता है कि लोग अब प्रामाणिक और अपनी जरूरतों के अनुसार अनोखे समारोहों को प्राथमिकता दे रहे हैं। ये समारोह न केवल परंपराओं का सम्मान करते हैं, बल्कि स्थिरता और नई तकनीकों जैसे आधुनिक पहलुओं को भी अपना रहे हैं। देश भर में लगभग 60 होटलों और कई खूबसूरत जगहों पर मौजूदगी के साथ, विंधम होटल्स एंड रिसॉर्ट्स हर शादी के लिए उपयुक्त स्थान, उसकी भव्यता (व्यापकता) और बजट के अनुसार शानदार व्यवस्था प्रदान करता है। पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी प्रगति को ध्यान में रखते हुए, विंधम शादी के बदलते रुझानों को समझने और उन्हें बेहतर बनाने के लिए तत्पर है। यह जोड़ों को उनके खास दिन को यादगार बनाने के लिए हर संभव सुविधा और सेवा प्रदान करता है।

विंधम होटल्स एंड रिसॉर्ट्स के अध्यक्ष, दिमित्रिस मानिकिस ने कहा, " हमारी रिपोर्ट से पता चलता है कि जोड़े अब गोवा और उदयपुर जैसे विशेष और वैयक्तिक (पर्सनलाइज्ड) शादी के गंतव्यों की ओर रुख कर रहे हैं। यह उनके द्वारा किये जा रहे अधिक अनोखे अनुभवों की तलाश को दर्शाता है। बड़ी और लंबे समय तक चलने वाली शादी समारोहों की परंपरा वापस आ रही है। खासकर युवा पीढ़ी (ज़ेन ज़ी), जो पर्यावरण और बजट के प्रति जागरूक है, लग्जरी और तकनीक का शानदार तालमेल बना रही है।

विंधम में, हम जोड़ों को उनकी जरूरतों के अनुसार अविस्मरणीय शादी समारोह की योजना बनाने और इसे यादगार बनाने के लिए पूरी तरह समर्पित हैं।

सोशल द्वारा नॉटी लिस्ट बैश की मेज़बानी क्रिसमस पार्टी जिसे आप मिस नहीं कर सकते

इस क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, सोशल द नॉटी लिस्ट बैश के साथ उत्सव के माहौल को और भी बेहतर बना रहा है, यह एक अनोखा उत्सव है जिसे उन लोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है जो अपनी छुट्टियों के मज़े को एक चुटीले अंदाज़ में बिताना पसंद करते हैं। पार्टी की शुरुआत दोपहर 12 बजे से शाम 7 बजे तक ड्रिंक्स पर 1+1 के शानदार ऑफ़र के साथ होती है, जो पूरे महीने उपलब्ध रहता है, जो इसे एक शानदार शाम के लिए एकदम सही वार्म-अप बनाता है। जैसे-जैसे रात आगे बढ़ती है, मेहमान मज़ेदार हॉलिडे एलिमेंट्स, लाइव म्यूज़कि और सोशल के विंटर मेन्यू से शानदार खाने-पीने की चीज़ों के साथ अनोखे सजावट के साथ एक हाई-एनर्जी माहौल का आनंद ले सकते हैं - एक ऐसा उत्सव जो उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो अलग तरीके से जश्न मनाने की हिम्मत रखते हैं।

जश्न की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए जाना जाने वाला, सोशल एक बोल्ड और अविस्मरणीय रात का वादा करता है जो क्रिसमस की भावना को एक चंचल किनारे के साथ मिलाता है। चाहे आप कॉकटेल, कंपनी या सिर्फ़ यादें बनाने के लिए वहां जा रहे हों, 'द नॉटी लिस्ट बैश' वह हॉलिडे पार्टी है जिसे आप मिस नहीं करना चाहेंगे। अपने कैलेंडर पर निशान लगाएँ और अपने नज़दीकी सोशल पर जश्न में शामिल हों!

लखनऊ 2024 में क्रिप्टो निवेश में आठवें स्थान हासिल किया

लखनऊ। भारत के सबसे बड़े क्रिप्टो ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म कॉइनस्विच ने अपनी वार्षिक निवेशक रिपोर्ट- इंडियाज क्रिप्टो पोर्टफोलियो 2024 हाउ इंडिया इन्वेस्ट्स का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया है। बिटकॉइन के ऐतिहासिक 100,000 डॉलर तक पहुंचने वाले वर्ष में, भारतीय निवेशकों ने मेम कॉइन्स में ज्यादा रुचि दिखाई। डॉजकॉइन सबसे अधिक निवेश किए गए कॉइन की सूची में शीर्ष पर रहा, जबकि SHIB सबसे अधिक ट्रेड किए गए कॉइन के रूप में उभरा। PEPE ने 2024 में 1300% की अविश्वसनीय वृद्धि के साथ शीर्ष प्रदर्शन करने वाली संपत्ति के रूप में अपना स्थान सुनिश्चित किया।रिपोर्ट के अनुसार, लखनऊ 2024 में भारत के क्रिप्टो निवेश में आठवें सबसे बड़े योगदानकर्ता के रूप में उभरा है।डिजिटल एसेट निवेशकों के लिए एक उभरता हुआ क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ निवेशक सफलता के मामले में विशेष रूप से अग्रणी है। शीर्ष 10 शहरों में, लखनऊ ने दूसरा स्थान हासिल किया है, जहां 85% निवेशकों को सकारात्मक रिटर्न प्राप्त हुआ है। कॉइनस्विच के वाइस प्रेजिडेंट बालाजी श्रीहरि ने कहा, 2024 वैश्विक क्रिप्टो इकोसिस्टम के लिए एक बड़ा साल साबित हुआ है। बड़े राजनीतिक और नियामक परिवर्तनों ने मुख्यधारा में क्रिप्टो को तेजी से आगे बढ़ाया है। कॉइनस्विच पर, हमने पूरे भारत में क्रिप्टो निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। जो निवेश पहले केवल प्रमुख मेट्रो शहरों तक सीमित था, वह अब तेजी से टियर-2 और टियर-3 शहरों तक फैल रहा है, जो इसकी बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। भारतीय निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला रहे हैं और मीम कॉइन्स से लेकर लेयर-1 और डीफाई टोकन्स तक की खोज कर रहे हैं। यह क्रिप्टो एसेट्स के प्रति उनकी बदलती रुचि को दर्शाता है। बिटकॉइन के 100,000 डॉलर के स्तर को पार करने और साल का अंत करने के साथ, 2025 में विकास की एक रोमांचक यात्रा की नींव रखी गई है।

लाईफस्टाइल की सेल ऑफ द सीज़न में पाएं आकर्षक डिस्काउन्ट

लखनऊ। नए ट्रैंड्ज़ के लिए भारत के अग्रणी फैशन डेस्टिनेशनल लाईफस्टाइल ने इस सीज़न के लिए अपनी सेल की घोषणा कर दी है। लाईफस्टाइल में खरीददारी करने वाले उपभोक्ता टॉप फैशन ब्राण्ड्स के नए स्टाइल्स पर 50 फीसदी तक छूट का लाभ उठा सकते हैं।

'लीव नथिंग' के दृष्टिकोण के साथ लाईफस्टाइल की सेल उपभोक्ताओं को फैशन के बोल्ड विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वे बिना कुछ पीछे छोड़े अपने अनूठे स्टाइल को अपना सकें। वे व्यापक कलेक्शन में सीज़न के सबसे स्टाइलिश और आकर्षक पीसेज़ अपने लिए चुन सकते हैं, इस कलेक्शन में पार्टी से लेकर कैजुअल और फ्युज़न लुक्स तक हर मौके के लिए परिधान उपलब्ध हैं लाईफस्टाइल की सेल में भारतीय ओर इंटरनेशनल फैशन ब्राण्ड्स की ओर से एक्सकलुज़िव डील्स लाई गई हैं, जिनमें ओनली, वेरो मोडा, बीबा, मेलांज, जैक एण्ड जॉन्स, अमेरिकन ईगल, लिवाईस, पार्क एवेन्यू, कोड, प्यूमा, स्कैचर्स, काप्पा, जिंजर, फेम फॉरएवर, टॉमी हिलफिगर, फॉसिल, गेस, मेबिलिन, लॉरियाल, बैगिट, कैटवॉक और बहुत कुछ शामिल है। उपभोक्ता परिधानों, फुटवियर, हैण्डबैग, ब्यूटी प्रोडक्ट्स और एक्सेसरीज़ पर आकर्षक डिस्काउन्ट पा सकते हैं और अपने फैशनेबल लुक को अपग्रेड कर सकते हैं।

कैलिफोर्निया आमंड्स के साथ क्रिसमस को बनाएं और भी ज्यादा खुशनुमा और सेहतमंद

क्रिसमस अपने करीबियों और दोस्तों के साथ एक सुखद वक्त बिताने और बेहतरीन यादों को संजोने का मौका होता है। जब आप क्रिसमस के मीठे और पारंपरिक पकवान पकाएं तो कैलिफोर्निया आमंड्स की अच्छाइयों के साथ अपनी खुशियों को और बढ़ाएं। तरह-तरह से उपयोग की जाने वाली ये सामग्री आपके पंसदीदा पकवानों में क्रंच, लज्जत और पोषण लेकर आएगी। मशहूर कैलिफोर्निया आमंड्स, पोषण का भंडार है। इसमें प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, फाइबर, मैग्नीशियम, जिंक और फॉस्फोरस जैसे 15 जरूरी पोषक तत्व हैं। केक से लेकर कुकीज़ तक, बादाम ड्राय फ्रूट्स का राजा है जो ना केवल स्वाद बढ़ाता है, बल्कि त्योहारों के पकवानों को पौष्टिक भी बनाता है। प्रमुख वैज्ञानिक जर्नल में प्रकाशित 200 से भी ज्यादा अध्ययनों में बताया गया है कि रोजाना मुट्ठीभर कैलिफोर्निया आमंड्स खाने से ब्लड शुगर को नियंत्रित करने, एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को कम करने और दिल की सेहत को बेहतर बनाने में मदद मिलती है। पेट भरे होने का एहसास कराने के इसके गुणों की वजह से त्योहारों के मौसम में भूख को नियंत्रित करने और वजन को संतुलित बनाए रखने में भी

सहायता करता है। इसके साथ ही, भारतीयों के लिए आईसीएमआर-एनआईएन डाइटरी गाइडलाइन्स में बादाम को सबसे पौष्टिक नट में से एक माना गया है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए इसे रोजाना भी खाया जा सकता है। त्योहारों के अपने पकवानों में कैलिफोर्निया आमंड्स को शामिल करते हुए अपने त्योहार को और भी ज्यादा खुशनुमा और सेहतमंद बनाएं। अपने प्रियजनों को देने के लिए भी ये एक अच्छा तोहफा है। एक तरह से आप उन्हें अच्छी सेहत का उपहार दे रहे होते हैं।

बॉलीवुड अभिनेत्री सोहा अली खान कहती हैं, मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखती हूं कि मैं अपनी रेसिपीज में गुड़ और बादाम जैसी सेहतमंद चीजें डालूं। क्रिसमस के मौके पर मैं सबसे यही कहना चाहूंगी कि खाने की चीजें सोच-समझकर चुनें और सेहतमंद तरीके से त्योहार मनाएं।''

शीला कृष्णास्वामी, न्यूट्रिशन एवं वेलनेस कंसल्टेंट का कहना है, त्योहार में हम कई बार कुछ ज्यादा ही खा लेते हैं, लेकिन अपने भोजन में बादाम जैसी सेहतमंद चीजों को शामिल करना बेहद जरूरी है। बादाम को एलडीएल और टोटल कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मददगार माना जाता है। साथ ही यह आपके दिल को स्वस्थ रखने के लिए भी अच्छा है। बादाम की सबसे अच्छी बात है इसकी विविधता- ये किसी भी व्यंजन में बड़ी ही आसानी से घुल-मिल जाता है, उसमें क्रंच, स्वाद और पौष्टिकता लेकर आता है। क्रिसमस के मौके पर मेरी यही सलाह है कि स्वाद और सेहत दोनों पर खरा उतरने वाले विकल्पों को सतर्कता से चुनें।

फिटनेस मास्टर व पिलेट्स इंस्ट्रक्टर यास्मिन कराचीवाला बताती हैं, त्योहारों के मौसम में एक्टिव बने रहना, समझदारी भरे खाद्य पदार्थों का चुनाव करने जैसा ही महत्वपूर्ण है। चाहे झटपट वाला वर्कआउट हो या फिर वॉक अपनी दिनचर्या में तरह-तरह की गतिविधियां शामिल करें, इससे ज्यादा खाने पर भी संतुलन बनाने में मदद मिलती है। मसल की रिकवरी और ऊर्जा के लिए मैं बादाम जैसे प्राकृतिक चीजों को खाने की सलाह देती हूं। प्रोटीन और हेल्दी फैट्स से भरपूर बादाम, पौष्टिक होने के साथ-साथ मसल्स की मरम्मत करता और आपको ऊर्जा देता है। इसकी विविधता इसे त्योहारों के पकवानों और स्नैक में शामिल करने का एक अच्छा विकल्प बनाती है। त्योहार का आनंद उठाते हुए यह आपको अपने ट्रैक पर बने रहने में मदद करता है।

कीको ने गुरूग्राम के एम्बिएन्स मॉल में खोला अपना सबसे बड़ा फ्लैगशिप स्टोर

लखनऊ। 65 सालों से 120 देशों में पैरेंट्स के भरोसेमंद बेबी

केयर ब्राण्ड कीको ने गुरूग्राम के एम्बिएन्स मॉल में अपने नए फ्लैगशिप स्टोर का लॉन्च किया। यह नया स्टोर भारत में रीटेल फुटप्रिन्ट बढ़ाने तथा गुरूग्राम के परिवारों के लिए भरोसेमंद बेबी केयर सोल्युशन्स उपलब्ध कराने के कीको के प्रयासों की पुष्टि करता है। आर्टसाना इंडिया (कीको) के सीईओ श्री राजेश वोहरा ने फ्लैगशिप स्टोर का उद्घाटन किया, जो देश में ब्राण्ड का सबसे बड़ा स्टोर भी है। शहर की प्राइम लोकेशन में मौजूद यह स्पेशियस स्टोर एम्बिएन्स मॉल की दूसरी मंज़िल पर स्थित है। स्टोर के अनुकूल माहौल में पैरेंट्स अपने बेबी के लिए प्रोडक्ट्स की व्यापक रेंज की खरीदारी कर सकते हैं जैसे कपड़े, स्ट्रॉलर, कार सेफ्टी सीट, कॉस्मेटिक्स, फीडिंग एक्सेसरीज़, खिलौने, हाईचेयर, कॉट्स एवं क्रिब्स आदि। 'कीको रीसर्च सेंटर' में रीसर्च के बाद बेबी की सुरक्षा और आराम को ध्यान में रखते हुए इन प्रोडक्ट्स को तैयार किया जाता है, ऐसे प्रोडक्ट्स जिन पर पैरेंट्स पूरा भरोसा कर सकते हैं।''कीको के भरोसेमंद बेबी केयर सोल्युशन्स को परिवारों के करीब लाने के मिशन के साथ हमने यह स्टोर खोला है, जहां पैरेंट्स अपने बेबी की देखभाल के लिए सर्वोच्च गुणवत्ता के प्रोडक्ट्स आसानी से खरीद सकते हैं। हम उन्हें ऐसा माहौल उपलब्ध कराना चाहते हैं, जहां वे प्रोडक्ट्स को देखकर, सोच-समझ कर इन्हें खरीद सकें। हालांकि कीको देश भर में ऑनलाईन एवं डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क के माध्यम से उपलब्ध है, वहीं चुनिंदा महानगरों में हमारे अपने स्टोर्स भी हैं। इस विस्तार के साथ हम उपभोक्ताओं को स्टोर में खरीददारी का बेजोड़ अनुभव प्रदान करना चाहते हैं और कीको के प्रोडक्ट्स को मेट्रो और मिनी-मेट्रो शहरों में अधिक परिवारों तक पहुंचाना चाहते हैं।'' आर्टसाना इंडिया (कीको) के सीईओ राजेश वोहरा ने कहा।

Paytm Money ने लॉन्च किया 'Pay Later (Margin Trading Facility)', निवेशको को मिलेगा Low-Cost ट्रेडिंग का विकल्प

नई दिल्ली। भारत के घरेलू वेल्थ टेक ऐप Paytm Money ने 'Pay Later' Margin Trading Facility शुरू की है, जिससे निवेशक कुल मूल्य का केवल एक अंश अग्रिम भुगतान करके स्टॉक खरीद और उसमें निवेश कर सकते हैं। प्लेटफ़ॉर्म बाकी राशि का भुगतान करेगा और 'Pay Later' के ज़रिए इसे एग्ज़क्यूट किया जाएगा जिसपर हर महीने 1% का इंट्रोडक्ट्री इंटरेस्ट लगेगा। यह निवेशकों की बाजार के अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता को बढ़ाता है और यह सुनिश्चित करता है कि निवेशक केवल उन फंडों के लिए भुगतान करें जिनका वो असल में इस्तेमाल करते हैं। Paytm Money पर Pay Later (MTF) की शुरुआत से ट्रेडर्स और निवेशकों को फायदा होगा, क्योंकि इससे ट्रेडिंग ज़्यादा आसान और लचीली हो जाएगी, खासकर उन लोगों के लिए जो पूरी पूंजी लगाए बिना शेयर बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाना चाहते हैं। इसके अलावा, यह शेयर बाजार में भागीदारी को लोकतांत्रिक बनाता है, जिससे देश भर के खुदरा निवेशकों के लिए यह आसान और अधिक किफायती हो जाता है। एक आसान अनुभव प्रदान करने के अपने कमिटमेंट के हिस्से के रूप में, Paytm Money ने Pay Later (MTF) की एक्टिवेशन प्रक्रिया को सरल और यूज़र-फ्रेंडली बनाया है। निवेशक सीधे अपनी अकाउंट सेटिंग के ज़रिए कुछ ही मिनटों में Pay Later (MTF) को आसानी से एक्टिवेट कर सकते हैं। इसके अलावा, यूजर्स किसी ऐसे स्टॉक,जिनके लिए वो योग्य है का ऑर्डर देते समय मार्जिन विकल्प का चुनाव करके और ऑर्डर पेज पर नियमों और शर्तों से सहमत होकर Pay Later (MTF) को एक्टिवेट कर सकते हैं। Paytm Money के MD & CEO राकेश सिंह ने कहा, हम निवेश को आसानबनाने और वित्तीय पहुंच बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारी 'Pay Later (Margin Trading Facility)' निवेशकों की खरीदने की शक्ति को बढ़ाती है।

कुकिंग ऑयल के जरिए अपने कैलोरी सेवन को कैसे बनाए रखें?

क्या आपने कभी सोचा है कि आपका कैलोरी-नियंत्रित आहार आपको मनचाहे नतीजे क्यों नहीं दे पा रहा है। इसका जवाब शायद आपकी रसोई में ही छिपा हो, तेल पोषण की भूलभुलैया से रास्ता निकालना। जी हां, आपने सही सुना। कुकिंग ऑयल के पीछे के विज्ञान को समझना जिम जाने जितना ही जरुरी है। यही कारण है कि हम यहां अनुशंसित कैलोरी सेवन के रहस्यों को उजागर करने और आपके कुकिंग ऑयल के पोषक तत्वों का विश्लेषण करने के लिए मजेदार सुझाव देने आए है।

किसी व्यक्ति के अनुशंसित दैनिक कैलोरी सेवन में कौन से कारक शामिल होते हैं?

स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने के लिए अनुशंसित दैनिक कैलोरी सेवन को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य स्थितियों, आयु और शारीरिक गतिविधि के स्तर के आधार पर भिन्न होता है।

स्वास्थ्य स्थितियों के आधार पर

अनुशंसित दैनिक कैलोरी का सेवन स्वास्थ्य स्थितियों से प्रभावित

होता है। मधुमेह या चयापचय संबंधी विकारों जैसे कुछ स्वास्थ्य समस्याओं वाले व्यक्तियों को व्यक्तिगत कैलोरी योजनाओं की आवश्यकता हो सकती है। चिकित्सा पेशेवर उपयुक्त कैलोरी सेवन निर्धारित करने के लिए चयापचय, पोषक तत्वों के अवशोषण और समग्र स्वास्थ्य जैसे कारकों का आकलन करते हैं। एक संतुलित और सहायक पोषण योजना सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए कैलोरी की अनुशंसाओं को तैयार करने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से परामर्श करना आवश्यक है।

2. उम्र के आधार पर

अनुशंसित दैनिक कैलोरी सेवन के निर्धारण में उम्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों और किशोरों को, जो तेजी से विकास के दौर से गुजर रहे है। उन्हें इसके लिए आमतौर पर अधिक कैलोरी की आवश्यकता होती है। इस बीच वृद्ध वयस्कों को चयापचय और मांसपेशियों के द्रव्यमान में कमी का अनुभव हो सकता है, जिसमें अत्यधिक वजन बढ़ने से रोकने के लिए समायोजन की आवश्यकता होती है। जीवन भर कैलौरी की जरुरतों में बदलाव होते रहते है, जिससे समग्र कल्याण और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आयु के अनुसार उपयुक्त पोषण संबंधी दिशानिर्देशों के महत्व पर जोर दिया जाता है।

3. शारीरिक गतिविधि के आधार पर

शारीरिक गतिविधि का स्तर सीधे अनुशंसित दैनिक कैलोरी सेवन को प्रभावित करता है।

केनरा एचएसबीसी का 'प्रॉमिस4फ्यूचर' प्लान, भविष्य की सुरक्षा के साथ अब धन कमाने का बेहतरीन मौका

नई दिल्ली। मौजूदा समय में लोग ऐसी योजनाओं को प्राथमिकता दे रहे हैं जो न केवल जीवन की सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि धन-संपत्ति बढ़ाने की क्षमता भी रखती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए, केनरा एचएसबीसी लाइफ इंश्योरेंस का प्रॉमिस4फ्यूचर प्लान एक लंबी अवधि की वित्तीय सुरक्षा का शानदार विकल्प है। यह योजना पॉलिसीधारकों को न केवल जीवन बीमा सुरक्षा देती है, बल्कि कंपनी के पार्टिसिपेटिंग फंड से उत्पन्न रिटर्न का लाभ लेने का मौका भी देती है। यह प्रोडक्ट सुरक्षा और बचत का बेहतरीन संतुलन बनाए रखता है, ताकि भविष्य में पॉलिसीधारकों की वित्तीय जरूरतें पूरी हो सकें।

प्रॉमिस4फ्यूचर केवल एक साधारण जीवन बीमा योजना नहीं है। यह ग्राहकों के लिए अधिक फायदे लेकर आता है। अगर पॉलिसीधारक के साथ कोई अनहोनी हो जाती है, तो उनके परिवार को आर्थिक सुरक्षा मिलती है। केनरा एचएसबीसी लाइफ इंश्योरेंस द्वारा किए गए हालिया सर्वे के अनुसार, 50त्न से ज्यादा भारतीय उपभोक्ता जब कोई जीवन बीमा पॉलिसी चुनते हैं, तो वे बचत और अपने परिवार की आर्थिक सुरक्षा को सबसे ज्यादा महत्व देते हैं। प्रॉमिस4फ्यूचर प्लान इसी भरोसे और जरूरत को पूरा करने का वादा करता है, जिससे पॉलिसीधारक निश्चिंत होकर अपने और अपने परिवार के भविष्य को सुरक्षित बना सकें।

यह प्लान दो वैरिएंट्स में उपलब्ध है

सेविंग्स4फ्यूचर खासतौर पर उन लोगों के लिए बनाया गया है, जो अपनी बचत को बढ़ाना चाहते हैं और जीवन के हर चरण में सुरक्षित भी रहना चाहते हैं। यदि पॉलिसीधारक की मौत हो जाती है तो नॉमिनी बनाए गए व्यक्ति को निम्नलिखित में से जो भी सबसे अधिक अधिक होगी, मृत्यु पर बीमा राशि और बोनस (अगर कोई है तो) या कुल भरे गए प्रीमियम का 105त्न दिया जाएगा। यदि पॉलिसीधारक पॉलिसी अवधि पूरी होने तक जीवित रहते हैं, तो उन्हें बीमा की गारंटीड राशि के साथ बोनस भी दिया जाएगा।

इनकम4फ्यूचर एक ऐसा प्लान है, जो पॉलिसीधारक को नियमित आमदनी और अंतरिम वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए एकमुश्त राशि दोनों का लाभ देता है। पॉलिसी अवधि के अंत में, पॉलिसीधारक को एकमुश्त भुगतान, गारंटीड आय, नकद बोनस मिलता है, जिससे पॉलिसीधारक की भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित होती है। अगर पॉलिसीधारक की मौत हो जाती है, तो नॉमिनी को पॉलिसी के अंत तक मिलने वाली गारंटीड राशि और बोनस प्रदान किए जाते हैं।

पार्टिसिपेटिंग प्रोडक्ट्स पॉलिसीधारकों को हर साल बोनस देते हैं, इतना ही नहीं, यह पॉलिसी की समाप्ति पर टर्मिनल बोनस भी मिल सकता है, जिससे मैच्योरिटी पर पॉलिसी की कीमत बढ़ जाती है। इसमें पॉलिसीधारक अपनी जरूरत के अनुसार प्रीमियम भुगतान का विकल्प चुन सकते हैं, आंशिक निकासी कर सकते हैं। यदि पॉलिसी लैप्स हो जाए तो इसे दोबारा शुरू किया जा सकता है।

केनरा एचएसबीसी लाइफ इंश्योरेंस में चीफ डिस्ट्रीब्यूशन ऑफिसर-ऑल्टरनेट चैनल्स और चीफ मार्केटिंग ऑफिसर श्री ऋषि माथुर ने कहा, प्रॉमिस4फ्यूचर जैसे पार्टिसिपेटिंग प्रोडक्ट्स आज के ग्राहकों की बदलती वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए खासतौर पर डिजाइन किए गए हैं।

प्रमा ने स्वदेशी वीडियो सुरक्षा उत्पादों और इनोवेटिव वर्टिकल समाधानों की विस्तृत श्रृंखला पेश की

नई दिल्ली। प्रमा ने इफसेक इंडिया सिक्योरिटी एक्सपो 2024, में स्वदेशी रूप से निर्मित वीडियो सुरक्षा उत्पादों और विशेष वर्टिकल समाधानों की अपनी विस्तृत श्रृंखला पेश की है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और आईओटी सुरक्षा प्रौद्योगिकियों, उत्पादों और समाधानों जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को प्रमा बूथ में प्रदर्शित किया गया। इफसेक इंडिया के प्रमा बूथ ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में स्वदेशी रूप से निर्मित उत्पादों और नवीन वर्टिकल समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित की। इनमें नए लॉन्च किए गए वीडियो सुरक्षा कैमरों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी और डिस्प्ले पर वर्टिकल समाधान थे।

प्रमा इंडिया के प्रवक्ता ने कहा, प्रमा ने इफसेक में अपने स्वदेशी वीडियो सुरक्षा उत्पादों और समाधानों को प्रदर्शित किया था। हम उन्नत

प्रौद्योगिकियों को अपनाकर अपने स्वदेशी विनिर्माण रोडमैप का पालन कर रहे हैं। वीडियो सुरक्षा उत्पादों के लिए भारत को वैश्विक मानचित्र पर लाने के मूल विश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए, प्रमा आत्मनिर्भर भारत अभियान के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वदेशी ब्रांड, प्रमा मुंबई के पास अपनी स्वदेशी विनिर्माण सुविधा में उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो सुरक्षा उत्पाद बनाती है। प्रमा वीडियो सुरक्षा उत्पादों और समाधानों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अपनी विनिर्माण सुविधा का विस्तार कर रहा है।

प्रमा बूथ पर प्रदर्शित उत्पाद में एआई सेंस सीरीज कैमरा, रंगीनव्यू सीरीज, एटीएमएस सीरीज कैमरा, डीवीआर और एनवीआर, नेटवर्क स्विच और केबल आदि शामिल हैं। प्रमा वीडियो प्रबंधन सॉफ्टवेयर सुरक्षा पेशेवरों के लिए उपलब्ध है।

प्रमा बूथ पर वर्टिकल समाधानों की विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित की गई। इनमें शिक्षा-स्कूल निगरानी समाधान, परिवहन-उन्नत यातायात प्रबंधन समाधान, मातृभूमि सुरक्षा-मोबाइल प्रवर्तन समाधान, स्मार्ट शहर और सुरक्षित शहर शहर निगरानी समाधान, परिवहन-परिवहन निगरानी समाधान, रक्षा क्षेत्र समाधान, रियल एस्टेट-बिल्डिंग सेक्टर समाधान, खुदरा-खुदरा स्टोर समाधान, पर्यटन-धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत स्थल सुरक्षा समाधान, अस्पताल-स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र समाधान और बीएफएसआई-बैंक क्षेत्र समाधान शामिल थे। अभिनव परिकल्पना और अलंकृत रूप से डिजाइन किए गए विशाल प्रमा बूथ में विविध उत्पाद और वर्टिकल समाधान प्रदर्शित किए गए।

वीडियो निगरानी प्रौद्योगिकियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अनुप्रयोगों को शामिल करने से इसके परिणामों में बड़ा परिवर्तन आ रहा है।

मथौली में बेतिया स्टेट की जमीन का हुआ सर्वे, टीम ने बनाई वीडियोग्राफी

अवधनामा संवाददाता

- बीते एक सितम्बर को भी स्टेट की टीम ने जमीन का किया था सर्वे

मथौली बाजार, कुशीनगर। बेतिया स्टेट की जमीन का सर्वे पुनः एक बार फिर से शुरू हो गया है। शुक्रवार को गोरखपुर से आई मंडलीय टीम ने हाटा तहसील क्षेत्र के नगर पंचायत मथौली समेत कई जगहों पर राजस्व टीम के साथ सर्वे किया। इसके बाद जमीनों का वीडियो ग्राफी भी बनाया। बता दें कि बिहार सरकार के निर्देश पर कुशीनगर जिले में बेतिया स्टेट की जमीन सर्वे की जा रही है। इसी क्रम में हाटा तहसील क्षेत्र के नगर पंचायत मथौली स्थित चेड़ा देवी मंदिर व कचहरी तथा अहिरौली तुला में स्टेट की जमीनों का सर्वे किया गया। इस दौरान नक्शे के साथ तहसील के राजस्व कर्मी भी मौजूद थे, जो बेतिया स्टेट की जमीनों का विवरण बताते रहे। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य बेतिया स्टेट की जमीन सुरक्षित रहे और उसका ठीक से देखभाल किया जाए। हाटा तहसील क्षेत्र के मथौली में 5.15 एकड़ व चेड़ा देवी मंदिर पर 74 डिसमिल जमीन है। शुक्रवार को गोरखपुर से पहुंची बेतिया स्टेट की मंडलीय टीम ने उपरोक्त जमीन का सर्वे कराकर वीडियो ग्राफी बनाया। इसी प्रकार कप्तानगंज तहसील क्षेत्र के गंभीरपुर में 2.9270 एकड़, साखोपर में 1.8250, मोहनमुंडेरा में 3.4390, डोमबरवा में 0.1130 व पेमली में 0.1620 यानी कुल 8.4660 रकबा जमीन है जिसका सर्वे कर वीडियो ग्राफी बनाया गया।

नदी के बीच मझधार में घंटो तक फंसे रहे किसान, सभी को सुरक्षित निकाला

अवधनामा ब्यूरो

किसानों को सुरक्षित बाहर निकालती प्रशासन

- नदी पार खेती करने गए थे 20 गांव के लोग
- वापस लौटते समय सिल्ट में फंस गई थी नाव

कुशीनगर। गंडक नदी पार नाव से खेती के लिए गए करीब सैकड़ों किसान लौटते समय नदी के बीच मझधार में देर रात तक फंसे रहे। इसकी जानकारी होने पर एसडीएम तमकुहीराज और तरया सुजान पुलिस नदी घाट पर पहुंच गई। गांव वालों की भीड़ भी जुट गई।

नदी उस पार फंसे किसानों को लाने के लिए पुलिस-प्रशासन गोताखोरों की मदद से छोटी नाव लेकर नदी में पहुंच गए और फंसे हुए लोगों को रेस्क्यू कर बाहर निकाला। हालांकि, नदी में पानी कम होने के कारण नाव में सभी लोग सुरक्षित रहे। तमकुहीराज तहसील के तरया सुजान थाना क्षेत्र के जवही दयाल, गौराहा, घघवा, विरवट कोन्हवलिया समेत बीस से अधिक गांव के किसान बड़ी गंडक नदी उस पार खेती किसानी करते हैं। रोज की तरह बृहस्पतिवार को सुबह खेती के लिए गए थे। शाम करीब छह बजे काम निपटाने के बाद बड़ी नाव पर 200 से अधिक लोग सवार होकर घर के लिए चले थे कि रात 08:30 बजे चयनपट्टी के पास नदी के बीच धार में नाव पहुंची थी कि सिल्ट में फंस गई। घर आने में देरी होने पर परिजन संपर्क किए तो पता चला कि बीच नदी में नाव फंसी हुई है। इसके बाद अफरा तफरी का माहौल कायम हो गया। प्रशासन को इसकी जानकारी दी गई। एसडीएम तमकुहीराज विकाश चंद्र व प्रभारी तहसीलदार कुंदन वर्मा तरया सुजान पुलिस के साथ मौके से पहुंच गए। नदी में फंसे एक एक किसानों को रेस्क्यू करने लगे। सुरक्षित किसानों के घर पहुंचने के बाद प्रशासन राहत की सांस ली। तहसीलदार श्री वर्मा ने बताया कि सिल्ट में बड़ी नाव फंस गई थी। दो घंटे से लोग फंसे हुए हैं। छोटी नाव की मदद से सभी को सुरक्षित निकाला गया।

27 साल बाद फैसला

दुकानदार को बम से मारने वाले बदमाश को दस साल की कारावास

अवधनामा ब्यूरो

- कई जनपदों में राजेश के खिलाफ दर्ज है केस, पडरौना कोतवाली का है हिस्ट्रीशीटर

कुशीनगर। दिनदहाड़े दुकानदार पर बम से हमला करने वाले बदमाश को कोर्ट ने 27 साल बाद दस साल का सश्रम कारावास और आर्थिक दंड से दंडित किया है। इसके खिलाफ पडरौना कोतवाली और महराजगंज जिले के थानों में कई केस दर्ज हैं। राजेश यादव पडरौना कोतवाली का हिस्ट्रीशीटर है।

रविंद्रनगर धूस थाना क्षेत्र के भिसवा सरकारी गांव निवासी मोहन राय की रविंद्र नगर में कपड़े की दुकान थी। चार जून वर्ष 1997 को दुकान पर मोहन राय के बेटे राघवेंद्र राय बैठे थे। इस दौरान पडरौना कोतवाली क्षेत्र के माघी विशुनपुरा गांव निवासी राजेश यादव अपने दो साथियों के साथ बिना नंबर प्लेट की बाइक से पहुंचा और राघवेंद्र पर बम से हमला कर दिया। घटना को अंजाम देने के बाद वहां से फरार हो गया। गंभीर रूप से घायल राघवेंद्र का इलाज पुलिस की मौजूदगी में हुआ था। मोहन राय की तहरीर पुलिस ने राजेश समेत इसके साथियों पर हत्या के प्रयास समेत कई गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया था। वादी की ओर से दी गई तहरीर में विवाद की वजह उधार दिए गए कपड़े का पैसा मांगना बताया गया था। विवेचक ने विवेचना उपरांत आरोपी के आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया।

यह मामला जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुशील कुमार शशि की न्यायालय में चल रहा था। न्यायालय ने आरोपी को दोषी करार देते हुए धारा 307 भारतीय दंड संहिता में 10 वर्ष कठोर कारावास, 10 हजार अर्थ दंड और धारा पांच विस्फोटक पदार्थ अधिनियम में पांच वर्ष कठोर कारावास तथा पांच हजार रुपये अर्थ दंड से दंडित किया गया है।

खेलकूद से बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से विकसित होते है : बीएसए

द क्रिसेंट स्कूल कप्तानगंज में छः दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

प्रतियोगिता का शुभारंभ करते बीएसए राम जियावन मौर्य

अवधनामा संवाददाता

कप्तानगंज, कुशीनगर। दी क्रिसेंट स्कूल कप्तानगंज में छः दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन शुक्रवार से शुरू हो गया। जिसमें बच्चो ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में खेल के प्रति बच्चों में उत्साह दिखाई दिया। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राम जियावन मौर्या रहे। बच्चों ने मुख्य अतिथि का स्वागत गार्ड ऑफ ऑनर और मार्च पास्ट से किया। मुख्य अतिथि ने मशाल जलाकर सौ मीटर रेस को हरी झंडी दिखा शुभारम्भ किया। प्रतियोगिता में लम्बी दौड़ में अर्पिता सिंह, खो खो में माही सिंह, भाला क्षेपड में मनमोहन सिंह, ऊंची कुद में अमन यादव ने बाजी मारी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अरमान हाशमी, अभय सिंह, दिव्यांश गोंड, राज चौरसिया, विनायक राय आदि ने बाजी मारी। कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि ने प्रथम स्थान आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया और उनके उज्ज्वल भविष्य कि कामना की। इस दौरान मुख्य अतिथि ने खेल के महत्त्व के बारे में बताते हुए कहा कि खेल का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है जिससे बच्चों के जीवन में सहयोग कि भावना का विकास होता हैं। इस अवसर पर विद्यालय के सीएमडी शिफा फातिमा, प्रबन्धक मो. शबीब अहमद, प्रधानाचार्य मो. हसीब, उप प्रधानाचार्य खुर्शीद आलम, आनन्द सिंह, राकेश राय, आशुतोष बंका, श्री कृष्णा सिंह, दिवाकर गोंड, पीताम्बर यादव, राकेश राय, सेराज, रागिनी मिश्रा, दिलीप गुप्ता, अनिल दुबे, संतोष शर्मा आदि मौजूद रहे।

विराट किसान मेले का आयोजन 23 से

अमेठी। उप कृषि निदेशक सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस के अवसर पर विराट किसान मेला जनपद में 23 दिसम्बर 2024 से 25 दिसम्बर 2024 तक किसान सम्मान दिवस मिलेट्स कार्यशाला एवं रबी उत्पादकता गोष्ठी का आयोजन नवोदय विद्यालय गौरीगंज के प्रांगण में किया जायेगा। उन्होंने बताया कि रबी उत्पादकता गोष्ठी के अवसर पर रबी 2023-24 एवं खरीफ-2024 में उत्कृष्ट उत्पादन प्राप्त करने वाले किसानों को सम्मानित करने के साथ ही कृषि विभाग द्वारा एक दिवसीय जनपद स्तरीय किसान मेला सह प्रदर्शनी रंगोली पेंन्टिग व सांस्कृतिक प्रतियोगिता मिलेट्स रेसिपी एवं उपभोक्ता जागरूकता विकास कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने बताया कि उक्त किसान मेले में समस्त विभागों द्वारा मिलेट्स रेसिपी विकास एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम में सम्बन्धित विभागों के क्रिया कलापों एवं शासन द्वारा अनुमन्य सुविधाओं की जानकारी प्रदर्शनी स्टाल के माध्यम से मेले में भाग लेने वाले किसानों उपभोक्ताओं को दी जायेगी।

जड़ चेतन सब उसी ईश्वर की संतान : बाबा मनोहर सिंह

अमेठी अवधनामा संवाददाता। ईश्वर एक है जड़ चेतन सब उसी परमपिता की संतान हैं। मानवता की सेवा ही सच्ची पूजा है नेक कमाई करो और दीन दुखियों की मदद करो भूखे को भोजन कराओ।उक्त बातें बाबा मनोहर सिंह ने शुक्रवार को श्री गुरु गोबिंद सिंह लंगर आयोजन समिति की ओर से नगर स्थित चाणक्यपुरी मोहल्ले में साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में श्री पटना साहिब रेल यात्रियों के लिए 52 दिवसीय लंगर के शुभारंभ पर बताई। विगत नव वर्षों से श्री पटना साहिब रेल यात्रियों के लिए लंगर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष भी 20 दिसंबर से 10 फरवरी तक दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाश पर्व मनाने हेतु श्री पटना साहिब जाने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए लंगर का आयोजन किया जा रहा है। शुक्रवार को पूर्वान्ह 11 बजे श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के सहज पाठ के भोग पड़ें। दोपहर सवा बजे रेलवे स्टेशन अमेठी से लंगर वितरण का शुभारंभ हुआ। जिसमें कोअर बोर्ड भारत सरकार की सदस्य रश्मि सिंह भी शामिल हुई। बाबा मनोहर सिंह ने बताया कि सिक्ख परंपरा में लंगर का विशेष महत्व है जिसकी शुरुआत पहले गुरु श्री गुरुनानक देव जी ने की थी। तभी से सिक्ख धर्मावलंबी इस परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं। बताया कि भूखे को भोजन दान से बड़ा कोई पुण्य नहीं है।यही सच्ची सेवा है। इसी दृष्टिकोण से 52 दिन का यह लंगर कार्यक्रम होता है। समिति के सेवादार यहां से लंगर तैयार करके वितरण के लिए रेलवे स्टेशन ले जाते हैं। इस मौके पर सेवादार संजीव भारती गुरु मिंदर सिंह रोहित अजय दिनेश सिंह डिप्टी शुक्ल वीरेंद्र तिवारी आदि ने रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को लंगर वितरित किए।

कप्तानगंज बार संघ चुनाव में मिर्जा एक्तेदार अध्यक्ष व उमेश दुबे महामंत्री निर्वाचित

अवधनामा संवाददाता

नवनिर्वाचित अधिवक्ता संघ के पदाधिकारी

- कलेक्ट्रेट बार एसोशिएशन संघ कप्तानगंज का चुनाव संपन्न

कप्तानगंज कुशीनगर। कलेक्ट्रेट बार एसोसिएशन तहसील कप्तानगंज का चुनाव हुआ जिसमे मिर्जा एक्तेदार हुसैन अध्यक्ष व उमेश दुबे महामंत्री निर्वाचित हुए। शुक्रवार को तहसील परिसर में हुए मतदान के दौरान कुल 69 मतों में से 67 वोट पोल हुआ जिसमें अध्यक्ष पद में दो प्रत्याशियों में मिर्ज़ा एकतेदार हुसैन को 40 वोट हीरा पांडेय को 24 वोट व 3 अवैध मत पड़े। जिसमे मिर्ज़ा एकतेदार हुसैन 16 वोट से अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

वही महामंत्री पद के लिए तीन प्रत्याशियों में अमरनाथ शर्मा को 21 वोट, उमेश दुबे 41 वोट व गिरजेश कुमार को 4 वोट मिले 1 वोट अवैध पड़ा। जिसमें उमेश दुबे 20 वोट से महामंत्री निर्वाचित हुए। इस प्रकार कलेक्ट बार एसोसिएशन 2025 के चुनाव में मिर्जा एक्तेदार हुसैन अध्यक्ष, उमेश दुबे महामंत्री निर्वाचित हुए हैं। कोषाध्यक्ष के लिए आशुतोष कुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष के लिए उदयभान पटेल, कनिष्ठ उपाध्यक्ष दो पद के लिए लालमन सिंह सतीश चंद्र गोड, कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद हेतु दो पद मनोज कुमार राय ब्रह्मानंद प्रसाद, संयुक्त मंत्री तीन पद के लिए अभिनेंद्र प्रताप सिंह, राजन पांडेय, गोविंद कुमार निर्विरोध चुने गए। इस दौरान नवनिर्वाचित अध्यक्ष मिर्ज़ा एकतेदार हुसैन व महामंत्री उमेश दुबे ने संयुक्त रूप से अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कप्तानगंज तहसील के अधिवक्ताओं ने जो माला मेरे गले में डाला है उस पर आच पर नहीं आने दूंगा सभी अधिवक्ताओं का सम्मान सर्वोपरि है। इस दौरान चुनाव अधिकारी राजनंदन लाल श्रीवास्तव, तेज बहादुर मिश्रा, विनोद मिश्रा, रामप्रताप सिंह, अरुण सिंह, मुकेश सिंह, अमरनाथ शुक्ला, राजन पांडे, सर्वेस कुमार कनौजिया, शैलेश प्रताप सिंह आदि उपस्थित रहे।

असंवैधानिक व्यवहार कर रहे राहुल गांधी: पवन मिश्र

देवरिया अवधनामा संवाददाता। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी द्वारा संसद में धक्कामुक्की और मारपीट करके भाजपा के दो सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत को घायल कर देने के मामले में भाजपा किसान मोर्चा देवरिया के कार्यकर्ताओं द्वारा शहर के सुभाष चौक पर राहुल गांधी का पुतला फूंका और राहुल गांधी मुर्दाबाद, कांग्रेस पार्टी माफी मांगो के नारे लगाए। इस अवसर पर उपस्थित किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष पवन कुमार मिश्र ने कहा कि पुलिस रिकार्ड के मुताबित राहुल गांधी के ऊपर अभी तक जानलेवा हमले समेत विभिन्न धाराओं में 2 दर्जन से ऊपर मुकदमे दर्ज है, राहुल गांधी के अमर्यादित आचरण को पूरे देश ने देखा है, राहुल गांधी को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जेब मे संविधान की किताब रखकर बाबा साहब अम्बेडकर का अपमान करने वाली कांग्रेस के सांसद राहुल गांधी असंवैधानिक व्यवहार कर रहे है।

श्रीमद्भागवत की निकली भव्य कलश यात्रा

अमेठी अवधनामा संवाददाता। श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ की भव्य कलश यात्रा शुक्रवार को नगर में निकाली गई। शोभा यात्रा ककवा रोड स्थित प्लाजा मैरिज लान से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गो से भ्रमण करती हुई हनुमानगढ़ी मंदिर दर्शन करने पहुंची वहां से निकल कर धम्मौर रोड स्थित गायत्री मंदिर परिसर में दर्शन करने के उपरांत रोडवेज तिराहा होते हुए रामलीला मैदान के रास्ते राजर्षि तिराहा गांधी चौक होते हुए कथा स्थल पर पहुंचकर संपन्न हुई। शोभा यात्रा में रथ पर आरूढ़ सुप्रसिद्ध कथा वाचक स्वामी ओमानंद जी महाराज के पीछे कलश लिए महिला श्रद्धालु बड़ी संख्या में शामिल थी। गाजे बाजे के साथ चल रही शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में नगर के स्त्री पुरुष श्रद्धालु शामिल हुए।कोतवाली तिराहे के पास श्रद्धालुओं के जलपान की व्यवस्था की गई थी। कलश यात्रा में मुख्य यजमान विद्या देवी बरनवाल सुनील कुमार बरनवाल रिंकी बरनवाल बद्रीश कुमार बरनवाल अंबरीश बरनवाल शिव कुमार गोपाल शुभम अमर दीपिका यशी शिवम मिश्र अजुग पांडे अनिल त्रिपाठी सहित तमाम लोग शामिल हुए। श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा 21 दिसंबर से प्रारंभ होकर 28 दिसंबर को पूर्णाहुति के साथ संपन्न होगी।

शिक्षा से वंचित बच्चों को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए शारदा प्रशिक्षण आवश्यक

भटनी अवधनामा संवाददाता। नगर के बीआरसी सभागार में शारदा प्रशिक्षण का दूसरा सत्र शुक्रवार को आरम्भ हुआ। प्रशिक्षण की शुरुआत प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलामंत्री अवनी श कुमार दीक्षित ने सरस्वती प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया। प्रशिक्षक माधव शुक्ल ने कहा कि शिक्षा से वंचित या किसी कारण से 30 दिनों से अधिक स्कूल से गायब बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए शारदा प्रशिक्षण शुरु हुआ है। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में प्राथमिक तथा जूनियर वर्ग में भाषा, गणित, विज्ञान सहित सभी प्रमुख विषयों के लिए अलग किताब शासन स्तर से उपलब्ध कराया गया है। ऐसे चिन्हित बच्चों को उनके आयु वर्ग के हिसाब कक्षा में नामांकित किया जाएगा। बच्चों को बेहतर तरीके से शिक्षण विधि से जोड़ने के लिए भाषा में चित्र आदि के जरिए कक्षा कक्ष में जोड़े रखने का प्रयास करना है। प्रशिक्षक कुंवर अजीत ने भाषा, रवि चौधरी ने गणित तथा मारुति नंदन ने पर्यावरण संबंधी प्रशिक्षण दिया। नोडल शिक्षकों ने चार्ट आदि के जरिए बच्चों को कक्षा में जोड़ने के लिए विषय वस्तु रखी। इस दौरान प्रमुख रुप से आशुतोष पति त्रिपाठी, अजय कुमार दीक्षित, अनिल कुमार तिवारी, छेदी लाल यादव, राजा राम प्रसाद, रमेश यादव, शत्रुघ्न यादव, रीना वर्मा, नंदेश मिश्र, प्रेमलता यादव, जैतुन निशा, रम्भा देवी, कृपानारायण मिश्र, प्रमोद सिंह, अनिल कुमार सिंह, मधु मल्ल, गीता राय, बिन्दु राय, श्रीराम प्रसाद, महेन्द्र यादव आदि प्रमुख रुप से मौजूद रहे।

समाज के प्रति समर्पित रहा राम दयाल जी का जीवन

अवधनामा संवाददाता

रुद्रपुर देवरिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बौद्धिक सह प्रमुख रहे स्वर्गीय राम दयाल वर्मा की दसवीं पुण्यतिथि शुक्रवार को केशव सरस्वती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पर मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि भाजपा के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष छेद्दे लाल निगम द्वारा स्वर्गीय रामदयाल वर्मा की मूर्ति पर माल्यार्पण कर किया गया इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्व. रामदयाल जी का जीवन देश और समाज के प्रति हमेशा समर्पित रहा है बच्चों के प्रति स्नेह और मां भारती के प्रति अटूट आस्था कूट कूट कर भरी थी उनकी कमी हमेशा खलेगी। मुख्य अतिथि द्वारा इस अवसर पर मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय की प्रबंधक प्रतिष्ठा वर्मा द्वारा अतिथियो का स्वागत किया गया। इस मौके पर आरएसएस के नगर प्रचारक सौरभ, मृत्युंजय प्रसाद विशारद, प्रधानाचार्य रामदयाल वर्मा, हरदयाल सिंह, प्रहलाद आदि लोग उपस्थित रहे।

गृहमंत्री के बयान को लेकर सपाइयों ने दिया ज्ञापन

अमेठी अवधनामा संवाददाता। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन स्थानीय प्रशासन को सौंपा।सपाइयों ने संसद में बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर पर दिए गए बयान को लेकर आक्रोश जताया गया है। शुक्रवार को समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता सपा नेता जयसिंह प्रताप यादव की अगुवाई में तहसील परिसर में एकत्रित हुए और एक ज्ञापन स्थानीय प्रशासन को सौपा।जिसमें कहा गया है कि महामानव डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का देश के गृहमंत्री ने जिस तरह मजाक उड़ाया है वह घृणित और निंदनीय है। इससे देश का आम जनमानस दुखी और आहत है।उन्होंने गृह मंत्री को बर्खास्त करने की मांग की है। संसद में डा आंबेडकर पर दिए गए गृहमंत्री के बयान को लेकर सपाइयों में आक्रोश दिखा। लोग हाथ में डा आंबेडकर का चित्र लेकर नारेबाजी कर रहे थे। इस मौके पर अभय सरोज मनु पाल सुधांशु शर्मा अंकुश कोरी पंकज चौरसिया रणधीर प्रियांशु अमित रजनीश लवकुश मुकेश अरविन्द श्रवण अमन सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

जिला कारागार में बन्दियों के विधिक अधिकार विषय पर आयोजित हुआ जागरुकता शिविर

रायबरेली अवधनामा संवाददाता। उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ तथा माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली राजकुमार सिंह के दिशा-निर्देशन में अनुपम शौर्य अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली द्वारा जिला कारागार, रायबरेली का निरीक्षण किया गया। इस दौरान अपर जिला जज/सचिव द्वारा जिला कारागार की पुरुष बैरक, पाकशाला व लीगल ऐड क्लीनिक का निरीक्षण किया गया। सचिव द्वारा बन्दियों से पूछा गया कि उनके पास अधिवक्ता है अथवा नहीं तथा ऐसा कोई बन्दी तो नहीं है जिसकी जमानत न्यायालय से होने के बाद भी जमानतदार न दाखिल होने के कारण रिहाई नहीं हो सकी हो। इस अवसर पर जिला कारागार में निरुद्ध नवीन बन्दियों को विधिक रुप से जागरुक करने हेतु विधिक जागरुकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित नवीन बन्दियों को उनके विधिक अधिकार बताये गये तथा यह भी बताया गया कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर जेल में स्थित लीगल ऐड क्लीनिक के माध्यम से मदद ले सकते है। शिविर में बन्दियों को लीगल एड डिफेन्स काउन्सिंल के कार्यों से परिचय कराते हुए उन्हें बताया गया कि निःशुल्क अधिवक्ता के रुप में सभी बन्दी लीगल एड डिफेन्स काउन्सिंल की सेवाये ले सकते है।

देवरिया में कांग्रेस कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन: अमित शाह के इस्तीफे की मांग, बोले- टिप्पणी से पूरे देश का हुआ अपमान

अवधनामा संवाददाता

देवरिया। राज्यसभा में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के खिलाफ की गई अशोभनीय टिप्पणी के विरोध में शुक्रवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। निवर्तमान जिलाध्यक्ष रामजी गिरि के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन अपर उपजिलाधिकारी हरिशंकर लाल को सौंपा और गृह मंत्री के इस्तीफे की मांग की। प्रदर्शन के दौरान जिलाध्यक्ष रामजी गिरि ने कहा, डॉ. अंबेडकर दबे-कुचले, निराश्रित और पिछड़े वर्गो के मसीहा थे। गृह मंत्री अमित शाह ने उनके खिलाफ अशोभनीय टिप्पणी कर न केवल बाबा साहब बल्कि पूरे देश का अपमान किया है। संविधान के बल पर ही समाज का हर वर्ग सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा है, और इस अपमान को कांग्रेसी बर्दाश्त नहीं करेंगे। गृह मंत्री को तत्काल इस्तीफा देकर देश से माफी मांगनी चाहिए। रामजी गिरि ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा, आज भाजपा नेता राहुल गांधी को अपमानित कर फर्जी मुकदमों में फंसा रहे हैं। संसद चलाने की जिम्मेदारी जिनके हाथों में है, वही इसे बाधित कर रहे हैं। भाजपा नेता देश में अराजकता और नफरत फैला रहे हैं। लेकिन कांग्रेस का एक-एक कार्यकर्ता भाजपा के इन इरादों को सफल नहीं होने देगा। ज्ञापन सौंपने वालों में पूर्व जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह, जयदीप त्रिपाठी, मुकुन्द भाष्कर मणि त्रिपाठी, समीर पांडेय, दीनदयाल प्रसाद, सत्यप्रकाश मणि त्रिपाठी, जुलेखा खातून, नीलेश मणि, ऋषिकेश मिश्र, नागेन्द्र शुक्ल, आलोक त्रिपाठी, सुनील तिवारी, वशिष्ठ मोदनवाल, गोविंद मिश्र, इस्लाम खान, जयप्रकाश पाल, उपेन्द्र कुमार, अशोक गोंड, प्रेमलाल भारती, वजीर अहमद, नौशाद खान, विजय शंकर मिश्र, शहनवाज जफर, रीता देवी, सुहैल अंसारी, अब्दुल जब्बार, धर्मेन्द्र पांडेय, पन्नालाल पाठक, वीरेंद्र तिवारी, रणजीत शुक्ल, कमलेश मिश्र, शिवशंकर सिंह, हर्षित सिंह, अंकुर भारती, गंगा कुशवाहा, हासन आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

फाइनल मुकाबले में लखनऊ ने दी आजमगढ़ को शिकस्त

अमेठी अवधनामा संवाददाता। नगर स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में चल रही प्रदेश स्तरीय समन्वय सीनियर पुरुष हैण्डबाल प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में लखनऊ मंडल ने आजमगढ़ मंडल को शिकस्त देकर प्रतियोगिता पर कब्जा किया। उपक्रीड़ाधिकारी मो मोसर्रफ खॉ ने बताया कि शुक्रवार को चौथे दिन सीनियर पुरूष हैण्डबाल प्रतियोगिता दो टीमों (टीम-ए) व (टीम-बी) के मध्य खेला गया जिसमें दोनों टीमों द्वारा खेले गये दो सेमीफाइनल तथा फाइनल मैच के तहत क्रमशः प्रथम सेमीफाइनल मैच में आजमगढ़ मण्डल ने 37-36 से अयोध्या मण्डल को एवं द्वितीय सेमीफाइनल मैच में लखनऊ मण्डल ने 37-25 से झांसी मण्डल को पराजित किया तथा फाइनल मैच में लखनऊ मण्डल ने 27-15 से आजमगढ़ मण्डल को हराकर टीम विजेता हुई।

टेड़वाबसन्तपुर में आयोजित हुई वानिकी कार्यों से सम्बन्धित गोष्ठी

अवधनामा संवाददाता

बहराइच। जिलाधिकारी मोनिका रानी के निर्देशन में बहराइच वन प्रभाग, बहराइच द्वारा पौधशाला, वृक्षारोपण एवं वानिकी कार्यो से संबंधित गोष्ठी का आयोजन बहराइच रेंज की टेड़वाबसन्तपुर पौधशाला में आयोजित किया गया। जिसमें वानिकी कार्यो के अन्तर्गत माईक्रोप्लानिंग-आगामी वृक्षारोपण हेतु स्थल चयन व स्थन के अनुरूप पौध प्रजाति का चिन्हीकरण कर ग्राम पंचायतवार सूक्ष्य नियोजन तैयार किया जाना, नर्सरी में पौध उगान, अग्रिम मृदा कार्य(गडढा खुदान), वृक्षारोपण की सुरक्षा एवं देख-रेख, सिल्वीकल्चरल (वन वर्धन) आपरेशन, कटान के लाटों की मार्किंग व पातन में सावधानियॉ, वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा एवं मानव-वन्य जीव संघर्ष आदि विषयों पर व्यापक चर्चा की गयी। मौके पर प्रदर्शन के तहत उपस्थित समस्त जन प्रतिनिधियों /अधिकारियों/विभागीय प्रतिनिधियों /कृषकों को उप प्रभागीय वनाधिकारी, नानपारा एवं क्षेत्रीय वन अधिकारी, बहराइच रेंज द्वारा नर्सरी में पौध उगान हेतु मृदा तैयार करना, थैला भरान, बीज बुआन, अग्रिम मृदा कार्य/गडढा खुदान कर पौधारोपण कर वानिकी कार्यो तथा वृक्षारोपण की सुरक्षा एवं देख-रेख तथा जीवामृत व वर्मी कम्पोस्ट तैयार किये जाने संबंधी तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी ताकि आगामी वृक्षारोपण 2025 में समस्त विभाग/कृषक और बेहतर तरीके से पौधरोपण कार्य सम्पादित कर सके। उक्त के अतिरिक्त ग्रामपंचायतवार माईक्रोप्लानिंग, सिल्वीकल्चरल (वन वर्धन) आपरेशन, कटान के लाटों की मार्किंग व पातन में सावधानियॉ, वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा एवं मानव-वन्य जीव संघर्ष पर भी जानकारी प्रदान की गयी। उक्त कार्यक्रम में ग्रामप्रधान टेड़वाबसन्तपुर श्री रामलखन सिंह, उप प्रभागीय वनाधिकारी, नानपारा राशिद जमील, क्षेत्रीय वन अधिकारी, बहराइच रेंज मो0 साकिब, वन विभाग के कर्मचारीगण, प्रतिनिधि-स्वास्थ्य विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, ऊर्जा विभाग, खाद्य विभाग एवं 12 अन्य विभागों के प्रतिनिधिगण, आसपास के ग्रामीण/कृषकगण आदि उपस्थित रहें।

परीक्षा केन्द्रों का स्थलीय निरीक्षण कर परीक्षा को संपन्न कराए

अवधनामा संवाददाता

मैनपुरी। जिलाधिकारी अंजनी कुमार सिंह ने पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार के साथ दि. 22 दिसंबर को 02 पालियों में आयोजित होने वाली उ.प्र. पी.सी.एस. प्रारंभिक परीक्षा को शांतिपूर्ण, सुचिता के साथ संपन्न कराए जाने के उद्देश्य से आज कु. आर.सी. कन्या महाविद्यालय ब्लॉक-ए, ब्लॉक-बी, रामचन्द्र सिंह लालचन्द्र कन्या इंटर कॉलेज, सनातन धर्म इंटर कॉलेज, चित्रगुप्त इंटर कॉलेज आदि परीक्षा केन्द्रों का स्थलीय निरीक्षण कर परीक्षा को संपन्न कराए जाने हेतु की गई तैयारियों का जायजा लेते हुए मौके पर उपस्थित केंद्र व्यवस्थापकों से कहा कि उ.प्र. सम्मिलित राज्य, प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा-2024 बेहद संवेदनशील है, सभी केन्द्र व्यवस्थापक परीक्षा सम्पन्न होने तक बेहद सावधानी बरतें, आयोग के निर्देशों को भली-भांति बार-बार पढ़ लें, कक्ष निरीक्षकों को उनके दायित्वों, कर्तव्यों के बारे में बतायें, प्रश्न पत्र के बंडल सेक्टर मजिस्ट्रेट, स्टेटिक मजिस्ट्रेट, केंद्र व्यवस्थापक की उपस्थिति में खोले जाएं, प्रश्न पत्र खोलने, परीक्षा के उपरांत ओ.एम.आर. शीट पैकिंग की निरंतर वीडियोग्राफी करायी जाए। श्री सिंह ने निरीक्षण के दौरान केन्द्र व्यवस्थापकों से कहा कि सीटिंग प्लान आज सायं तक प्रत्येक दशा में पूर्ण किया जाये, परीक्षार्थियों की संख्या के अनुसार सभी व्यवस्थाएं मुकम्मल रहें, सी.सी.टी.वी. कैमरे निरंतर चालू दशा में रहें, प्रत्येक कक्ष का प्रत्येक परीक्षार्थी सी.सी.टी.वी. कैमरे की जद में रहें, प्रत्येक परीक्षा केन्द्र के मुख्य द्वार पर क्लॉक रूम की व्यवस्था रहे, यदि कोई परीक्षार्थी मोबाइल, अन्य इलैक्ट्रॉनिक डिवाइस लेकर आये तो उसे क्लॉक रूम में जमा कराया जाये, किसी भी कक्ष निरीक्षक, स्टॉफ के पास मोबाइल, प्रतिबन्धित सामग्री उपलब्ध न रहे। उन्होने निरीक्षण के दौरान पाया कि कुं. आर. सी. महिला पी.जी. कॉलेज ब्लॉक-ए, ब्लॉक-बी, राजकीय इंटर कॉलेज, सनातन धर्म इंटर कॉलेज में 480-480, चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में 384 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित होंगे, उक्त सभी विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में कक्ष, फर्नीचर उपलब्ध पाया, सी.सी.टी.वी. कैमरे चालू दशा में पाये गये।

नगर पालिका ने सफाईकर्मियों को वितरित किए ट्रैकसूट

शिकोहाबाद। सफाई कर्मियों को सर्द रातों में ठंड से बचाने के लिए नगर पालिका प्रशासन ने ट्रैकसूट वितरित किए। जिन्हें पाकर सफाई कर्मियों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई। नगर पालिका प्रशासन सर्दियों के मौसम में शहर की सफाई कार्य में जुटे हुए सभी सफाईकर्मियों की सेहत का ख्याल रख रही है। नगरपालिका प्रशासन ने शुक्रवार को पालिकाध्यक्ष रानी गुप्ता की उपस्थित में सफाईकर्मियों को ट्रैकसूट एवं जूते वितरित किए। अधिशाषी अधिकारी सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि नगरपालिका प्रशासन ने इस वर्ष सफाईकर्मियों को ठंड से बचाने के लिए ट्रैकसूट एवं जूते खरीदे हैं। शुक्रवार को इन्हें सफाईकर्मियों को वितरित किया गया है। पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि राजीव गुप्ता ने बताया कि पालिका में स्थाई सफाईकर्मी 106, संविदा पर 71, ठेके पर 166 और डोर.टू.डोर पर 65 सफाई कर्मचारी तैनात हैं।

संक्षिप्त समाचार

महिला जनसुनवाई दिवस 24 दिसम्बर को

बहराइच। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग के निर्देशानुसार ''महिला जनसुनवाई दिवस'' कार्यक्रम के अन्तर्गत 24 दिसम्बर 2024 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से लो.नि.वि. निरीक्षण भवन बहराइच में आयोग की सदस्य श्रीमती अंजु प्रजापति की अध्यक्षता में वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में महिला अपराधों की समीक्षा एवं जनसुनवाई की कार्यवाही की जायेगी। जनसुनवाई के पश्चात श्रीमती प्रजापति महिला बन्दी गृहों, बालिका/महिला गृहों व आंगनबाड़ी केन्द्रों का भी निरीक्षण करेंगी। यह जानकारी जिला प्रोबेशन अधिकारी विनोद राय ने दी है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस आज

बहराइच। जन समस्याओं के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से माह के प्रथम व तृतीय शनिवार को आयोजित होने वाले सम्पूर्ण समाधान दिवस की कड़ी में माह दिसम्बर के तृतीय शनिवार 21 दिसम्बर 2024 को तहसील कैसरगंज में जिलाधिकारी तथा तहसील पयागपुर में अपर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस आयोजित होगा। शेष तहसीलों में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता सम्बन्धित उप जिलाधिकारी करेंगे।

सर्वेयरों का प्रषिक्षण 24 को

फिरोजाबाद। जिलाधिकारी रमेश रंजन के मार्गदर्शन मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य के निर्देशन और परियोजना निदेशक के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत लाभार्थियों का नाम जोड़ने हेतु सर्वेक्षण 2024 प्रारम्भ किया जाना है, सर्वेक्षण कार्य सर्वेयर द्वारा सही ढंग से किया जाए, इसके लिए आवश्यक है उन्हें समुचित प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे उनके द्वारा अपना दायित्वों का सुचारू रूप से संचालन किया जा सके, इसी प्रयोजन हेतु सर्वयरों को प्रशिक्षण दिए जाने हेतु जनपद से नवीन कुमार एवं प्रभात रंजन खंड विकास अधिकारियों को मास्टर ट्रेनर नामित किया गया है, जिसके माध्यम से विकासखंड के सर्वेयरों को प्रशिक्षण दिया जाना है, जिससे सर्वेक्षण का कार्य सही ढंग से सम्पन्न कराया जा सके, उक्त प्रशिक्षण सभागार भवन में आयोजित किया जाएगा, विकास खण्ड एका, जसराना, मदनपुर, टूण्डला एवं नारखी के सर्वयरों का प्रशिक्षण 24 दिसम्बर को पूर्वान्ह 11 बजे से अपरान्ह 1 बजे तक कराया जाएगा, जबकि अरांव, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद एवं हाथवंत के सर्वेयरों का प्रशिक्षण 24 दिसंबर से अपरान्ह 2 बजे से 4 बजे तक कराया जाएगा।

संसद को पाकिस्तान न बनने दें प्रधानमंत्री: बीएस गौतम

अवधनामा संवाददाता

टूण्डला। उत्तर प्रदेश कांग्रेस सूचना का अधिकार विभाग की बैठक क्षेत्रीय कार्यालय अहाता शोभाराम पर आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता बंगाली बाबू पुष्कर के द्वारा की गई डॉ बी एस गौतम प्रदेश सचिव ने कहा कि राहुल गांधी की लोकप्रियता से मोदी सरकार घबराई हुई है इसलिये झूठी रिपोर्ट दर्ज करा रही हैं और वह बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर का अपमान करने वाले गृहमंत्री अमित शाह को अपने आचरण के लिये देश से माफ़ी मांगनी चाहियें जिसे देखकर डॉ अम्बेडकर पण्डित नेहरू सरदार पटेल की आत्मा रो रही हैं और मोदी सरकार अमित शाह अडानी को बचाने में इतना गिर जाएंगे देश की महान जनता ने कभी सोचा भी नहीं होगा देश का हर बेरोजगार युवा दलित एवं अल्पसंख्यक महिलाए मातृ शक्ति राहुल गांधी के साथ है देश की संसद को पाकिस्तान न बनने दें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दलित नेता मल्लिकार्जुन खड़गे का अनादर बर्दाश्त नही किया जाएगा वरिष्ठ कांग्रेस नेता अनिल उपाध्याय ने कहा कि देश की जनता देख रही है भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को संसद जाने से रोका गया था आज उनके पोते राहुल गांधी को संसद में जाने से रोका जा रहा है जिससे प्रतीत होता हैं कि एक अकेला गाँधी सब पर भारी प्रधानमंत्री सात सौ किसानों की मौत पर खेद व्यक्त करते तो बेहतर रहता बैठक में आर पी सिंह ओमप्रकाश शर्मा विशंभर सिंह सूरज पाल दीवान सिंह सुनहरी लाल सरफ़राज़ खान नावेद आलम उमाशंकर शत्रुघ्न सिंह मानवेंद्र शर्मा राजुद्दीन अली फ़ारुख खान शमशुद्दीन अली प्रमोद रावत चंद्र प्रकाश आदि लोग मौजूद रहें।

जिला सैनिक कल्याण बंधु की बैठक पूर्ण

फिरोजाबाद। जिलाधिकारी रमेश रंजन की अध्यक्षता में जिला सैनिक कल्याण बंधु की बैठक का आयोजन कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में किया गया जिसमें जिलाधिकारी ने उपस्थित भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिजनों की समस्याओं को सुना, जिलाधिकारी ने कहा कि जो भी समस्याएं आपकी हैं उनका शीघ्र निदान कराया जाएगा, सैनिकों से संबंधित भूमि संबंधित विवाद सबसे अधिक जसराना तहसील में देखने को मिले, जिलाधिकारी ने आश्वासन दिया कि वहां कैंप लगाकर भूमि संबंधित विवादों का निस्तारण शीघ्र कराया जाएगा, भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिजनों को जो भी सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, अगर उसमें किसी प्रकार का कोई व्यवधान उत्पन्न होता है, तो उसका निस्तारण भी शीघ्र कराया जाएगा, इसके अलावा अभी हाल ही में शासन द्वारा निर्देश प्राप्त हुआ है कि आइजीआरएस पोर्टल पर एक अलग टैब का निर्माण किया जाए जहां पर केवल सैनिकों की समस्याओं को ही सुना जाएगा।

उत्तर रेलवे

ई–ऑक्शन सूचना

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, लखनऊ के द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–ऑक्शन से सम्बंधित सूचना।

एडमिन यूनिट जोन/	लखनऊ–उ०रे० ०रे०उ/वाणिज्य–मण्डल–
नीलामी सूची सं० ० लॉट सं/	12231-SLR-F2-LKO-CDG-23-1 (Parcel-SLR)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	17.12.2024
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	13.01.2024 at 12:00 hrs.
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	13.01.2024 at 12:30 hrs.
नीलामी सूची सं० ० लॉट सं/	22467-SLR-F2-BSB-GNC-23-1 (Parcel-SLR)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	17.12.2024
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	13.01.2024 at 12:00 hrs.
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	13.01.2024 at 12:40 hrs.
नीलामी सूची सं० ० लॉट सं/	12237-SLR-F1-BSB-JAT-23-1 (Parcel-SLR)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	17.12.2024
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	13.01.2024 at 12:00 hrs.
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	13.01.2024 at 12:50 hrs.
नीलामी सूची सं० ० लॉट सं/	12419-SLR-F2-LKO-NDLS-23-1 (Parcel-SLR)
नीलामी सूची प्रकाशन तिथि	17.12.2024
नीलामी प्रारम्भ तिथि (समस्त लॉट)	13.01.2024 at 12:00 hrs.
नीलामी बन्द करने की तिथि व समय	13.01.2024 at 13:00 hrs.
Website particulars where complete details of auction can be seen by registered bidders	E- Auction Module of www.ireps.gov.in

No.: C/SLR Leasing contract-2019/KS Date:- 20.12.2024 3902/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

काकोरी एक्शन के क्रांतिकारियों को दी गयी श्रद्धांजलि

अवधनामा संवाददाता

सुल्तानपुर। शहीद स्मारक सेवा समिति के तत्वाधान में आज नगर के पंडित रामनरेश त्रिपाठी सभागार में 40 वां वार्षिकोत्सव समारोह संपन्न हुआ। शहीद राम प्रसाद बिस्मिल के साथियों शहीद अशफाक उल्ला खान ,शहीद राजेंद्र लाहिड़ी व शहीद रोशन सिंह की प्रतिमा को नमन कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। क्रांतिकारी बाबा सचिंद्रनाथ बक्शी की पौत्री मीता बक्शी ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि सुल्तानपुर उनकी जन्मस्थली है, वह नगर के केश कुमारी विद्यालय में पढ़ाई करती थीं। उन्होंने मंच से सुल्तानपुर की माटी को नमन कर कहा कि उनके बाबा क्रांतिकारी सचिंद्रनाथ बक्शीको जो सम्मान उन्होंने जनपद वासियों ने दिया ।वह उसे कभी नहीं भूलेंगी। उन्होंने संस्था के अध्यक्ष करतार केशव यादव का धन्यवाद दिया और कहा कि हथियानाला में बना हुआ शव यात्री कक्ष हमेशा उनकी याद दिलाता रहेगा। बताते चले की 23 नवंबर 1984 में क्रांतिकारी सचिन्द्रनाथ बख्शी की सुल्तानपुर जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई थी। वह तकरीबन 20 दिन जिंदगी और मौत से जूझते रहे ।पैर में चोट लगने के बावजूद वह आज उपस्थित हुई थी। समाजसेवी करतार केशव यादव ने कहा कि मुख्य अतिथि मीना बक्शी के पिताजी राजेंद्र नाथ बक्शी जलकल विभाग में अधिशाषी अभियंता रहे। वर्तमान में वह राजाजीपुरम लखनऊ में परिवार रह रहा है। कार्यक्रम के दौरान अपने उद्बोधन में मुख्य विकास अधिकारी अंकुश कौशिक ने शहीदों का नाम लेकर जिंदाबाद के नारे लगाए। 09 अगस्त 1925 को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के सेनापति प.राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में नौ और क्रांतिकारियों चंद्रशेखर आजाद, अशफाकउल्ला खां, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी, शचीन्द्र नाथ बख्शी, मन्मथ नाथ गुप्त, मुकुन्दीलाल, केशव चक्रवर्ती, मुरारी लाल शर्मा व बनवारी लाल चतुर्दिक ने काकोरी पर रेल से सरकारी खजाने की लूट को अंजाम दिया।

डीपीएस के वार्षिकोत्सव में टीवी आईकॉन को देखने उमड़ी भीड़

शिकोहाबाद। दिल्ली पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव कार्यक्रम विद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में टीवी आईकॉन सुरेश अलवेला और पवन अग्री के साथ ही सीडीओ सत्रोहन वैश्य और एसपी ग्रामीण अखिलेश भदौरिया की उपस्थित सराहनीय रही। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों और विद्यालय की चेयरमैन डॉ. गीता यादव ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलन और पुष्प अर्पित कर किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की वंदना से हुए। विद्यालय की छात्राओं ने बेहतर प्रस्तुति देकर मां सरस्वती की वंदना की। इसके बाद जंगल सोंग गीत को बच्चों ने सामूहिक रूप से प्रस्तुत किया। इस दौरान विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने एक प्रदर्शनी भी लगाई। जिसमें छात्र-छात्राओं ने अपने द्वारा बनाये गये मॉडलों की प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय लोकदल किसान प्रकोष्ठ की बैठक आयोजित की गई

टूंडला। राष्ट्रीय लोकदल किसान प्रकोष्ठ की मीटिंग गांव नगला कलुआ में जिलाध्यक्ष राजबीर सिंह के नेतृत्त्व मे आयोजित की गई। बैठक में पार्टी द्वारा गांव गांव जाकर किसानों की समस्याओं को सुनना और उन्हें पार्टी से की नीतियों से अवगत कराने के बारे में कार्ययोजना और 23 दिसंबर को किसान मसीहा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व.चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस को किसान दिवस के रूप में मनाए जाने को विचार विमर्श किया गया। बैठक में मुख्य रूप किसान प्रकोष्ठ के बृज क्षेत्र उपाध्यक्ष आचार्य राजबीर सिंह बृज क्षेत्र महासचिव चौ.निरंजन सिंह पौनिया मा.देशराज सिंह, अमर सिंह पचहरे, इंद्रजीत सिंह जितेन्द्र सिंह पौनिया डॉ. मुन्नेश कुमार राजौरिया राष्ट्रीय युवा लोक दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुवर सुधीर सिंह सचिन कुमार उपाध्यक्ष प्रेम सिंह इंद्रजीत सिंह जितेन्द्र सिंह पचहरे ओमवीर सिंह महेंद्र सिंह जूरेल उदम सिंह मुन्ना लाल जाटव टीकम सिंह रक्षपाल सिंह जाटव राजबीर सिंह उर्फ राजू सभी ने मिलकर राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केंद्रीय कौशल विकास उद्यमिता मंत्री भारत सरकार चौ.जयंत सिंह व राष्ट्रीय लोकदल पार्टी को मजबूत करने का संकल्प लिया।

मानसिक बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों की मदद करेगी एलएसयूएम टीम

अवधनामा संवाददाता

जिला जज की अगुवाई में सम्पन्न हुई दो दिवसीय ट्रेनिंग

सुल्तानपुर। जनपद न्यायालय के मीटिंग हॉल में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हो गया। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा मानसिक बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों और बौद्धिक अक्षमताओं वाले व्यक्तियों को विधिक सेवाएं योजना-2024,पर विभिन्न विद्वानों ने प्रकाश डाला। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला न्यायधीश लक्ष्मीकांत शुक्ल ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत किया।बुधवार को उन्होंने पैनल लायर्स/पैरा लीगल वालेंटियर्स को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए हर एक इंसान को दृण संकल्प करना जरुरी होता है ।जिला जज श्री शुक्ल ने उदाहरण देते हुए कहा कि माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला बछेंद्री पाल, अरुणिमा सिन्हा,माउंटेन मैन दशरथ माझी,बिग बी अमिताभ बच्चन जैसे लोग आज लोगों के लिए रोल मॉडल हैं।जिन्होंने इच्छा शक्ति और मजबूत दृण संकल्प के जरिये मुकाम हांसिल किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विजय कुमार गुप्ता ने बताया कि मानसिक रूप से पीड़ित व्यक्ति के परिजनों या उसके रिश्तेदारों की सहमति लेने के बाद उसकी मदद करनी चाहिए।मनोचिकित्सक डॉ सहाबुद्दीन अम्मार ने तमाम कानून की जानकारी को देते हुए बताया कि मानसिक रूप से अक्षम लोगों को वही अधिकार और रिजर्वेशन दिए जाने का प्रावधान है । जिससे दिव्यांग व्यक्ति समान जीवन जी सके। उन्होंने कहा कि छह से आठ साल तक के मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चे को मुफ्त में शिक्षा तथा न्यायिक अधिकार और सुविधा पाने का अधिकार है ।डॉ अम्मार ने बताया कि विकसित और मानसिक रूप से अक्षम इलाज कर रहे व्यक्ति को पूरा अधिकार है कि उसे उसकी बीमारी की विस्तृत जानकारी दी जाए। मेंटल रोगी को उसी तरह इलाज मिलने का प्रावधान है जैसे शारीरिक बीमार व्यक्ति को। उन्होंने कहा कि कोई भी भर्ती मरीज अस्पताल में जिसे मिलाने से मना कर सकता है। चाहे मिलने वाले व्यक्ति को मन कर सकता है।चिकित्सक सहाबुद्दीन अम्मार ने जोड़ा कि आज मानसिक रोगी को कुछ विशेष परिस्थितियों को छोडकर करंट (ईसीटी) देना बंद हो गया है ।उन्होंने कहा कि मेंटल हेल्थ केयर एक्ट में 18 साल से कम उम्र के बच्चे को करंट देना प्रतिबंधित है। उन्होंने कहा कि 21 डिसेबिलिटी की केटेगरी चिन्हित हैं जिसमें एसिड अटैक पीड़ित/पीड़िता भी है। उन्होंने कहा कि विभिन्न कानूनी प्रावधानों में दिव्यांग व्यक्ति को आम इंसान जितने अधिकार प्राप्त हैं। इनसे छुआछूत की भावना नहीं रखनी चाहिए । चीफ एलएडीसी तारकेश्वर सिंह ने कहा कि नए कानूनी प्रावधानों के तहत असक्षम ,दिव्यांग व्यक्तियों को राष्ट्रीय लीगल सर्विस अर्थॉरिटी नाल्सा द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ देने के लिए बताया गया।

कार्यालयः अधिशासी अभियन्ता, जोन-7, इन्दिरा नगर जलकल विभाग, नगर निगम, लखनऊ

प0सं0-178/EE-7/L.J.S/24-25 दिनांक: 20.12.2024

(अल्पकालीन निविदा -सूचना)

जलकल विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से नीचे दिये गये विवरण के अनुरूप कार्य कराने हेतु निविदायें दिनांक 27.12.2024 के सायंकाल 4:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र किसी भी कार्य दिवस में दिनांक 27.12.2024 को 1:00 बजे तक निविदा मूल्य का नगद भुगतान कैश काउन्टर पर करके निविदा प्राप्त किये जा सकते है। भरी हुई सील्ड निविदायें उसी दिन अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में सायंकाल 3:30 बजे तक निविदा बाक्स में प्राप्त की जायेगी। निविदा बाक्स से प्राप्त सभी निविदायें उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष सांय 4:00 बजे खोली जायेगी।

क0 सं0	कार्य का विवरण	निविदा का मूल्य	धरोहर धनराशि
1	जोन-7 इन्दिरा नगर के अंतर्गत अवध विहार कॉलोनी में मकान नं0-29 से मकान नं0-49 तक एवं श्री डी0 एस0 शुक्ला के मकान से श्री गोपाल शुक्ल के मकान तक 110 एम0 एम0 डाया की लगभग 135 मीटर पी0 वी0 सी0 पाइप लाइन गौपिंग का कार्य पूर्ण करने हेतु।	200.00	2900.00

नियम एवं शर्ते निविदा प्रपत्र में दी गई हैं, जिन्हे देखा जा सकता है। विस्तृत जानकारी अधिशासी अभियंता जोन-7 इन्दिरा नगर लखनऊ के कार्यालय में सम्पर्क कर किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है। निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी/महाप्रबन्धक में निहित है।

अधिशासी अभियन्ता जोन-7
जलकल विभाग

कार्यालय नगर पंचायत गोशाईगंज, जनपद- अयोध्या

पत्रांक : 476/न0पं0गो0/अलाव/2024-25 दिनॉक : 20.12.2024

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना

नगर पंचायत गोशाईगंज/अन्य सरकारी विभागों के पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो को सूचित किया जाता है कि भीषण शीतलहर के दृष्टिगत अपर जिलाधिकारी (प्रशासन)/प्रभारी अधिकारी (स्थानीय निकाय) के निर्देशानुसार नगर पंचायत गोशाईगंज, अयोध्या के सभी वार्डो में लकड़ी आपूर्ति एवं अलाव जलाने का कार्य की निविदा दिनाँक : 27.12.2024 को अपरान्ह 03:00 बजे तक सीलबन्द निविदाऐं इस कार्यालय के निविदा बॉक्स में आमंत्रित की जाती है। जो उसी दिन अपरान्ह 04.00 बजे निविदादाताओं की उपस्थिति/अनुपस्थिति में सक्षम अधिकारी द्वारा खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र की बिक्री न0पं0 कार्यालय में दिनॉक 21-12-2024 से 27-12-2024 तक सुबह 10.00 बजे से सायं 03.00 बजे तक की जायेगी। उपरोक्त तिथियों में अवकाश की दशा में निविदा की बिक्री एंव प्राप्ति अगले कार्य दिवस में की जायेगी।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	आगणन की अनुमानित लागत जी.एस.टी. सहित	निविदा प्रपत्र मूल्य, जी.एस.टी. व स्टेशनरी चार्ज सहित	धरोहर धनराशि 2 प्रति.	कार्य करने की अवधि
1	नगर पंचायत गोशाईगंज, अयोध्या के सभी वार्डो में लकड़ी आपूर्ति एवं अलाव जलाने का कार्य।	₹ 03,03,534.00	₹ 858.00	₹ 6100.00	कार्यादेश जारी होने की तिथि से 60 दिन तक

मुख्य शर्ते :- 1. निविदा के साथ निर्धारित प्रारूप पर चरित्र प्रमाण-पत्र हैसियत प्रमाण पत्र, आयकर व जी0एस0टी0 पंजीयन प्रमाण पत्र की प्रति लेबर रजिस्ट्रेशन प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है। 2. निविदा के साथ आगणन धनराशि का 2% की डिमाण्ड ड्राफ्ट/एफ0डी0आर0/टी0डी0आर0 संलग्न करना अनिवार्य है। 3. उक्त कार्य कार्यादेश जारी होने की तिथि से 60 दिन तक संलग्न आंगणन के मानक एवं विशिष्टियों के अनुरूप करना अनिवार्य होगा। 4. कार्य संतोषजनक होने तथा धनराशि की उपलब्धता के आधार पर ही भुगतान किया जायेगा। 5. निविदा स्वीकृत के उपरान्त 100 रू0 के नॉन ज्यूडिसियल स्टाम्प पेपर पर अनुबंध कराने की जिम्मेदारी निविदादाता की होगी। 6. निविदा बिना कारण बताये निरस्त/अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित है। 7. उक्त निविदा प्रपत्र क्रय करने से पूर्व कार्य स्थल अवश्य देख लें। 6. अन्य शर्तो व प्राक्कलन सम्बन्धित जानकारी कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में की जा सकती है।

(सीमा राय)
अधिशासी अधिकारी
नगर पंचायत गोशाईगंज
अयोध्या

(डा. विजय लक्ष्मी जायसवाल)
अध्यक्ष
नगर पंचायत गोशाईगंज
अयोध्या

क्षेत्र पंचायत की बैठक में उठा मुंडेरा सहकारी समिति से खाद काला बाजारी का मुद्दा

पानी, बिजली,स्वास्थ्य, शिक्षा पर हुई चर्चा

अवधनामा संवाददाता

भरुआ सुमेरपुर। क्षेत्र पंचायत बोर्ड की बैठक ब्लाक प्रमुख जय नारायण सिंह यादव की अध्यक्षता में ब्लाक परिसर में संपन्न हुई। बैठक में खाद, पानी, बिजली, स्वास्थ्य व शिक्षा के मुद्दा जोरदार ढंग से सदस्यों ने उठकर समाधान की मांग की। मुंडेरा सहकारी समिति में डीएपी की कालाबाजारी का मुद्दा उठने पर सदन ने सचिव एवं आंकिक के खिलाफ कार्रवाई का प्रस्ताव पारित किया। बैठक में गैर हाजिर विभाग के कर्मियों को वेतन रोकने का प्रस्ताव ध्वनि मत से पारित किया गया। बैठक का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्वलित करके किया। इसके बाद राष्ट्रगान के उपरांत बैठक की कार्यवाही शुरू की गई। बैठक में विगत दिनों के क्षेत्र पंचायत सदस्य अतरैया रामप्रकाश के निधन पर एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि गई और शासनादेश के अनुसार मृत सदस्य के परिजनों को तीन लाख की सहायता देने का प्रस्ताव पारित किया गया। बदनपुर, बिरखेरा, मुंडेरा व मिहुना के सदस्यों ने क्षेत्रीय सहकारी समिति मुंडेरा में डीएपी खाद की कालाबाजारी का मुद्दा जोरशोर से उठाया। सदस्यों की मांग पर समिति के सचिव एवं आंकिक के खिलाफ विभागीय कार्यवाही के लिए प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में गर्भवती महिलाओं के भोजन की गुणवत्ता परखने के लिए खंड विकास अधिकारी को नामित किया गया। परिषदीय विद्यालयों में संचालित स्मार्ट क्लासेस की दुर्दशा का मुद्दा टिकरौली व कुंडौरा आदि गांव के प्रधानों ने उठाते हुए कहा कि यह बंद पड़े हुए हैं। इस पर खंड शिक्षा अधिकारी से जांच के साथ ब्लाक से कमेटी बनाकर जांच का प्रस्ताव पारित हुआ। बैठक में जल जीवन मिशन, विद्युत,जल निगम व सिंचाई विभाग आदि के अनुपस्थित रहने पर वेतन रोकने का प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में स्वच्छ भारत मिशन के तहत उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मियों सहित लेखाकार मो.इमरान खान व तकनीकी सहायक विवेक तिवारी को अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। बैठक का संचालन खंड शिक्षा अधिकारी विपिन कुमार ने किया। बैठक में ग्राम प्रधान अरविंद यादव, शिवशरण प्रजापति, नोखेलाल यादव, जयनारायण विश्वकर्मा, रामपाल अनुरागी, रामखेलावन श्रीवास, जीवन श्रीवास, राममिलन निषाद, अरविंद प्रताप यादव, गुरु प्रताप सिंह परिहार, नरेंद्र पाल, अशोक यादव सहित क्षेत्र पंचायत सदस्य, ग्राम प्रधान एवं ब्लाक कर्मी मौजूद रहे।

डीएम ने तहसील सदर का किया औचक निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

हमीरपुर। जिलाधिकारी घनश्याम मीणा ने तहसील सदर का भ्रमण कर वहाँ स्थित विभिन्न पटलों/ कार्यालयों का औचक निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं का अवलोकन किया तथा संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए। तहसील परिसर के निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई कराये जाने के निर्देश संबंधित को दिए। इस मौके पर जिलाधिकारी ने तहसील के विभिन्न पटलो के कर्मचारियों से उनके कार्यो के बारे में जवाब तलब किया तथा कहा कि सभी अधिकारी कर्मचारी समय से कार्यालय आकर अपने कार्यो को समयबद्ध ढंग से पूर्ण करें। जिलाधिकारी ने कहा कि तहसील परिसर में समुचित ढंग से साफ सफाई रखी जाए । उन्होने कहा कि कर्मचारियों द्वारा सम्पादित किये जाने वाले सभी कार्यो का अच्छे ढंग से अभिलेखीकरण किया जाय तथा अभिलेखो का रखरखाव बेहतर ढंग से रखे। इस मौके पर उन्होने फौजदारी कक्ष, अभिलेखागार, तहसीलदार कोर्ट ,भूलेख सहित अन्य पटलों का निरीक्षण कर जरूरी निर्देश दिए। उन्होंने विभिन्न रजिस्टरो यथा वसूली रजिस्टर, दैनिक स्मृति पंजिका आदि का अवलोकन किया तथा अभिलेखागार में सी0सी0टी0वी0 कैमरे लगवाने के निर्देश संबंधित को दिए। इस अवसर पर एसडीएम सदर पवन प्रकाश पाठक, तहसीलदार ,नायब तहसीलदार, तहसील नाजिर, विभिन्न पटलों के कर्मचारी तथा अन्य संबंधित मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

आईईएस परीक्षा में तीसरा स्थान पाने पर गोल्डन लायन्स विराट ने उन्नति चंसोरिया को किया सम्मानित

राठ। आईईएस परीक्षा में देश में तीसरा स्थान पाने वालीं नगर निवासी उन्नति चंसौरिया ने पहली बार नगर आने पर गोल्डन लायन्स राठ नगर की महिलाओ ने फूल मालाओं से लादते हुए ढोल नगाड़ों के साथ स्वागत किया। उन्नति ने कहा लड़कियां लड़कों से ज्यादा होनहार होतीं हैं। वह अपने परिवार के मान का ध्यान रखते हुए समाज में आगे बढ़तीं हैं। उन्होंने कहा कि सबसे पहले लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। समय प्रबंधन के साथ सुनियोजित तरीके से पढ़ाई करनी होती है। कहा जरूरी नहीं 12 घंटे पढ़ाई की जाए। चार घंटे सुव्यवस्थित पढ़ाई से सफलता मिल सकती है। कहा सोशल मीडिया का पढ़ाई के लिए सदुपयोग करें फालतू समय बर्वाद न करें। गोल्डन लाइंस राठ विराट की सभी बहनों द्वारा सम्मान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष सुधा बुधौलिया,अध्यक्ष रेनू महेश्वरी, शिव कुमारी बस्तर, पदमा महेश्वरी, ज्योतिष्ण महेश्वरी, चंचल बुधोलिया, साधना बुधौलिया, कल्पना खरे, उपासना गुप्ता,अर्चना गुप्ता, संगीता गुप्ता, नीतू भटनागर, निशा भटनागर, अपर्णा अग्रवाल, आरती खरे आदि ने इस होनहार बेटी का स्वागत किया।

भ्रष्टाचार का आरोप लगा अधिवक्ता ने शुरू किया अनशन

मौदहा हमीरपुर। तहसील में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में अधिवक्ताओं ने नौ सूत्री मांगों को लेकर प्रदर्शन करते हुए अनशन शुरू कर दिया। तहसील में होने वाले कामों में कर्मचारियों द्वारा किए जाने वाले भ्रष्टाचार एवं अधिवक्ताओं के शोषण से आक्रोशित अधिवक्ता संयोग कुमार प्रजापति ने नौ सूत्री मांगों को लेकर दर्जनों अधिवक्ताओं के साथ तहसील परिसर में तहसीलदार मुरादाबाद के नारे लगाते हुए प्रदर्शन किया इसके बाद तहसील प्रांगण में अनशन शुरू कर दिया।अधिवक्ता ने अपने मांग पत्र में जन्म प्रमाण पत्र,हदबंदी की माप सहित अन्य कामों में लगने वाले समय की जानकारी की मांग की है।

वन विभाग द्वारा डाला रेंज में वानिकी कार्य संबंधी गोष्ठी का किया गया आयोजन

सोनभद्र/चोपन। वन विभाग के डाला रेंज में पर्यावरण संरक्षण और पेड़ों के महत्व को बढ़ावा देने के लिए ÷पेड़ बचाओ अभियान÷ के तहत वानिकी कार्य संबंधी गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य वन क्षेत्र में हरित आवरण को बढ़ावा देना और आम जनमानस को वृक्षारोपण व पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम में वन विभाग के अधिकारियों, पर्यावरणविदों, और क्षेत्रीय लोगो ने भाग लिया। गोष्ठी में विशेषज्ञों ने वनों की कटाई से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान और जलवायु परिवर्तन पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही, वनों के संरक्षण में स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ाने की अपील की गई। कार्यक्रम के अंत में वृक्षारोपण अभियान का भी आयोजन किया गया, जिसमें कई फलदार और छायादार पौधे लगाए गए। एस डी ओ अभिषेक राय ने बताया कि यह अभियान भविष्य में भी जारी रहेगा और लोगों को इस मिशन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

आठ महीने बाद होगा संदिग्ध मौत का पोस्टमार्टम

अवधनामा संवाददाता

मौदहा हमीरपुर। बीते आठ महीने पहले युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के मामले में मृतक के भाई ने लम्बी लड़ाई लड़ शुक्रवार को शव को दोबारा खुदवा दिया जिसके बाद पैनल की मौजूदगी में पोस्टमार्टम किया जाएगा। बीते 13अप्रैल को मुटनी निवासी अरविंद पुत्र नन्द किशोर जो बिगहना में मिठाई बनाने का काम करता था को मनोज पुत्र गुलजारी निवासी बिगहना कुआं पूजन के लिए लिवा गया था। जबकि अरविंद मिठाई की बिक्री के ग्यारह हजार रुपये भी लिए था की लाश नंदकिशोर के बयारा में गुलजारी के मकान के पीछे पड़ी मिली थी जिसके मुंह से खून बहा था और गले में रस्सी के निशान थे।मनोज ने बताया कि सुनील, अरविंद और मनोज छत पर सोए हुए थे।पीड़ित ने बताया कि ग्राम प्रधान प्रतिनिधि रामानंद कुश्वाहा ने कुनेहटा चौकी में सूचना दी और उसके बाद चौकी के दरोगा मनोज, गुलजारी और प्रधान प्रतिनिधि आदि ने शव को दफना दिया। पीड़ित ने बताया कि होली के दौरान पीड़ित परिवार का मनोज और विनोद से झगड़ा हुआ था जिसपर उक्त लोगों ने देख लेने की धमकी दी थी।जिसके बाद पीड़ित ने मनोज, सुनील, पंकज, गुलजारी,विनोद और ग्राम प्रधान प्रतिनिधि रामानंद के विरुद्ध हत्या का मुकाबला दर्ज कराया था।जिसके बाद पीड़ित लगातार शव के पोस्टमार्टम कराने के लिए लड़ाई लड़ रहा था जिसके बाद मजिस्ट्रेट के आदेश के बाद शुक्रवार को भारी पुलिस और मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में शव को दोबारा कब्र से निकाल कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

सेंटमैरी कॉलेज में दो दिवसीय परोपकारार्थ मेले का शुभारम्भ

सेंटमैरी के बच्चों का टेलेंट राष्ट्र निर्माण में करेगा योगदान : एसएसपी

वहाज अली निहाल

इटावा। जनपद के दो गरीब परिवारों को निःशुल्क घर बनाकर देने के परोपकारी उद्देश्य को लेकर सेंटमैरी इंटर कॉलेज में शुक्रवार को लगाए गए दो दिवसीय मैरियमपैथिया 2024 मेले का शुभारंभ मुख्य अतिथि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा ने फीता काट कर किया। उन्होंने सेंटमैरी के छोटे छोटे बच्चों द्वारा लगाए शानदार खेल स्टॉल्स का निरीक्षण भी किया और खेल भी खेले। इस अवसर पर एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने कहा कि सेंट मैरी स्कूल के छोटे- छोटे बच्चों ने बेहतरीन तकनीक और ट्रिक का इस्तेमाल कर जिस तरह का टेलेंट साबित किया, उसे देखकर कहा जा सकता है कि एक दिन यही बच्चे राष्ट्र के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान करेंगे। उन्होंने आगे अपने प्रेरक संदेश में कहा कि आप चाहे जो भी काम करते हों, आपकी कोशिश होनी चाहिए कि आप पूरे मनोयोग और पूरी दक्षता से अपने कार्य का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दें तो निश्चित ही आप जीवन में सफल व्यक्ति माने जाएंगे। उन्होंने सम्मान देने के लिए सेंटमैरी के प्रिंसपल फादर शीजू जार्ज, मैनेजर फादर विंसन, वाइस प्रिंसिपल फादर बिबिन, सिस्टर जोस्मिन, हैड मिस्ट्रेस सिस्टर नवीना समेत समस्त स्टाफ का आभार भी जताया। इससे पूर्व सेंटमैरी स्कूल पहुंचने पर विद्यालय के बच्चों द्वारा एसएसपी को बैंड बजाकर गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। स्कूल के प्रिंसिपल फादर शीजू जार्ज, मैनेजर फादर विंसन व वाइस प्रिंसिपल फादर बिबिन ने भी बुके देकर उनका स्वागत किया। वर्ल्ड ऑफ गेम्स यानी खेलो का संसार की थीम पर लगाए गए इस दो दिवसीय मेले में प्रथम दिन कक्षा के जी से लेकर कक्षा सात तक के बच्चों ने छोटी छोटी बॉल्स, वाटर, पिस्टल से निशाना, रिंग बॉल, हिट इट, मस्ती बाजार, क्रिएटिव गेमर्स, हॉरर जॉन, थ्री डी कैमरे से वर्चुअल रियलिटी का अनुभव आदि के चौदह स्टॉल लगाए, इन सभी पर एसएसपी संजय कुमार वर्मा ने जा जाकर उन खेलों का आनंद उठाया। बच्चों ने भी मेले में लगाए गए गेम्स और खाने पीने के स्टॉल, घुड़सवारी और झूलों का टिकट खरीद कर खूब मजा लिया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे स्कूल के कॉर्डिनेटर जैकब चाको ने बताया कि इस चैरिटी (परोपकारी) मेले को लगाए जाने का उद्देश्य यह है कि इससे जो कलेक्शन आएगा, उससे हमारा विद्यालय इस जिले के दो अत्यंत गरीब परिवारों को रहने के लिए दो घर बनाकर देगा। सेंटमेरी में आज दूसरे दिन लगने वाले मेले में क्लास 8 से 12 तक के बच्चे अपना हुनर दिखाएंगे। मेले की व्यवस्था बनाने में को ऑर्डिनेटर अनीश एलेक्स, पीआरओ अबू थॉमस सहित समस्त सेंटमेरी परिवार का सराहनीय योगदान रहा।

प्रतियोगिता स्पर्धा 2024 का रंगारंग समापन

अवधनामा ब्यूरो

इटावा। ÷मन के हारे हार है, मन के जीते जीत÷ज्ञान इंटर स्कूल ज्ञानस्थली कर्वाखेड़ा आवासीय विद्यालय प्रांगण में विगत 7 दिनों से चल रही इंटर स्कूल खेल प्रतियोगिता(स्पर्धा 2024)के भव्य कार्यक्रम का शुक्रवार को समापन हुआ। ज्ञानस्थली ग्रुप ऑफ स्कूल्स के सभी विद्यालयों के सभी वर्ग के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के आरंभ में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे

ज्ञानस्थली ग्रुप आफ स्कूल के चेयरमैन शिवप्रसाद यादव ने ध्वजारोहण कर मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों के समक्ष सरस्वती वंदना की प्रस्तुति बाल कलाकारों के द्वारा दी गई उसके बाद मार्च पास्ट पॉइंट तथा योग की प्रस्तुति दी गई। प्रतियोगिता के आरंभ का संकेत ज्ञानस्थली कर्वाखेड़ा के हेडबॉय भानु यादव ने मैदान में मसाल जलाकर किया। विद्यालय में ज्ञानस्थली आवासीय कर्वाखेड़ा, ज्ञानस्थली कटरा शमशेरखाँ, ज्ञानस्थली औरैया, ज्ञानस्थली अकादमी भर्थना, ज्ञानस्थली अकादमी बिधूना, ज्ञानस्थली एकेडमी विजयनगर तथा सेठ आनंदराम जयपुरिया दिबियापुर सम्मिलित हैं। सभी विद्यालयों के लगभग 350 प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने भाग लिया स्पर्धा 2024 प्रतियोगिता में 100 मी., 200मी., 400मी., 200 मी. हर्डल रेस, 400 मी.रिले रेस हाई जंप, लॉन्ग जंप, टेबल टेनिस, शतरंज, कैरम डबल शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, जैवलिन थ्रो तथा तीरंदाजी विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया शीर्ष क्रम में आए हुए सभी प्रतिभागियों को ज्ञानस्थली ग्रुप आफ स्कूल के चेयरमैन शिवप्रसाद यादव व कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे वाइस चेयरमैन विनीत यादव ने सम्मिलित रूप से विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम (स्पर्धा 2024) की सफलता के लिए ज्ञानस्थली आवासीय विद्यालय कर्वाखेड़ा की ऊर्जावान तथा नेतृत्व में अग्रणी प्रधानाचार्या चंदा श्रीवास्तव जी ने सभी प्रधानाचार्यों, पी.टी.आई तथा शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट किया।

जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

अवधनामा ब्यूरो

सोनभद्र। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित रोजपरक योजनाएं के प्रचार प्रसार हेतु इक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र लोढ़ी राबर्ट्सगंज सोनभद्र में आयोजित किया गया ।एक दिवसीय आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में जिला ग्रामोद्योग अधिकारी किरन श्रीवास्तव द्वारा उपस्थित छात्र एवं छात्राओं को मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना, मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना, के फोल्डर वितरण कराते हुए शहर की और पलायन को रोकने हेतु ग्रामीण अंचल में कुटीर उद्योगों की स्थापना हेतु आओ उद्योग लगाए स्वयं को समृद्ध बनाए के नारे के साथ विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में बताया गया तथा योजनाओं का लाभ कैसे प्राप्त कर सकते है आवेदन ऑनलाइन करने हेतु प्रपत्रों को बताया गया। साथ ही साथ पीएमईजीपी योजनांतर्गत द्वितीय लोन/ अपग्रेड के संबंध में बताया गया। जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित उत्तरप्रदेश व्यापार मंडल के अध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता एवं युवा जिलाध्यक्ष रमेश जायसवाल द्वारा अपने उद्बोधन में कुटीर उद्योगों की स्थापना हेतु प्रेरित किया गया,साथ ही साथ उ. प्र. खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा संचालित लाभप्रद योजनाओं का लाभ लेने हेतु आग्रह किया।

व्यापारी सुरक्षा प्रकोष्ठ की बैठक पुलिस लाइन में संपन्न

अवधनामा ब्यूरो

सोनभद्र। रावटसगंज शुक्रवार को व्यापारी सुरक्षा प्रकोष्ठ की बैठक पुलिस लाइन स्थित सभागार में पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें व्यापारी समस्याओं पर व्यापक रूप से विचार विमर्श किया गया एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा अति शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया गया। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन के जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा ने जनपद में तेजी से बढ़ रहे साइबर अपराध की ओर पुलिस अधीक्षक का ध्यान आकर्षित कराया और कहा कि आम आदमी यह कैसे जान सकता है की भरोसेमंद सुरक्षित और प्रामाणिक कौन सी वेबसाइट है और यदि साइबर हेल्पलाइन 1930 पर डिजिटल अपराध की रिपोर्ट दर्ज न हो तो क्या करें आगे उन्होंने कहा कि अभी हाल में ही झांसी मेडिकल कॉलेज में आग लगने से 11 बच्चों की मौत हो गई फायर एवं विद्युत सुरक्षा की स्थिति बेहद चिंताजनक है सरकारी अस्पतालों से लेकर प्राइवेट अस्पतालों में विद्युत सुरक्षा एवं फायर की एन.ओ.सी. तक नहीं है सभी अस्पतालों की व्यवस्था राम भरोसे है आगे श्री शर्मा ने व्यापारियों की समस्याओं से अवगत कराते हुए आगे कहा कि जिला मुख्यालय पर ना तो ट्रांसपोर्ट नगर है नहीं पार्किंग की व्यवस्था है आखिरकार व्यापारी अपने सामानों की लोडिंग एवं अनलोडिंग कैसे कराये यदि पटरी पर भी गाड़ी खड़ी करके सामान की लोडिंग एवं लोडिंग होती है तो ट्रैफिक पुलिस द्वारा भारी भरकम चालान कर दिया जाता है उन्होंने आगे कहा कि बढौली चौराहे पर प्राय प्राइवेट बसों के बेतरतीब खड़ा होने की वजह से आए दिन जाम का सामना करना पड़ता है। यह भी चर्चा हुई की पुलिस के लगाम लगाने के बावजूद भी हीरोइन अन्य मादक पदार्थो की बिक्री धड़ल्ले से हो रही है। आगे उन्होंने कहा कि नगर पालिका के सफाई कर्मचारी कूड़ा निस्तारित करने के बजाय उसमें आग लगा दे रहे हैं जिससे प्रदूषण के साथ-साथ भारत के स्वच्छता अभियान पर भी प्रश्न चिन्ह लग गया है बैठक में मुख्य रूप से पुलिस अधीक्षक अशोक मीणा, पुलिस क्षेत्राधिकारी नगर डॉक्टर चारू द्विवेदी,नगर अध्यक्ष प्रशांत जैन, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष राजेश जायसवाल, दीप सिंह पटेल, नागेंद्र मोदनवाल, नगर संयोजक अमित अग्रवाल, आदि लोगों उपस्थित रहे।

यश इंटरनेशनल स्कल में मनाया गया फनाथॉन

प्री-प्राइमरी खेल दिवस

अवधनामा ब्यूरो

इटावा। यश इंटरनेशनल स्कूल में मनाया गया फनाथॉन, प्री-प्राइमरी खेल दिवस। खेल दिवस एक रोमांचक कार्यक्रम है जो छोटे बच्चों के बीच शारीरिक गतिविधि, टीम वर्क और खेल कौशल को बढ़ावा देता है। यश इंटरनेशनल स्कूल में प्री-प्राइमर्स का वार्षिक खेल उत्सव शुक्रवार को भव्यता से मनाया गया, जिसमें शरीर के संतुलन, मांसपेशी समन्वय और हाथ-आंख समन्वय जैसे कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती मां को माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्वलित कर हुई। बच्चों ने बैलून बैलेंसिंग गेम, सैक रेस, जलेबी रेस, बकेट रेस, स्पून एंड लेमन रेस, म्यूजिकल चेयर सहित विभिन्न खेलों में भाग लिया। स्कूल ने बच्चों के समग्र व्यक्तित्व के विकास में जीत से अधिक भागीदारी, शारीरिक शिक्षा और खेल के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम के बाद हेड मिस्ट्रेस खुशी टंडन से विजेताओं को मेडल और सर्टिफिकेट देकर उनका उत्साहवर्धन किया और कहा कि, ये आयोजन छोटे बच्चों के बीच स्वस्थ और सक्रिय जीवन शैली को बढ़ावा देने के महत्व को प्रदर्शित करते हैं।

समूह नृत्य प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

इटावा महोत्सव

अवधनामा ब्यूरो

इटावा। प्रदर्शनी पांडाल में शुक्रवार को पानकुंवर इंटरनेशनल स्कूल के संयोजन में समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 54 टीमों ने भाग लिया। यह अब तक की सबसे बड़ी सहभागिता रही।

कार्यक्रम में सीबीएसई, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्य अतिथि एसएसपी संजय वर्मा और उनकी धर्मपत्नी नीलम राय तथा विशिष्ट अतिथि एसडीएम सदर श्री विक्रम राघव, डॉ.आनंद और सह जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ.मुकेश ने दीप प्रज्वलन कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ.कैलाश चंद्र यादव, प्रधानाचार्य पानकुंवर इंटरनेशनल स्कूल और उनकी पत्नी रश्मि यादव ने अतिथियों का शॉल और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। पानकुंवर इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम की भव्यता में चार चांद लगाए।

नमिता तिवारी, पारोमिता और प्रियंका शर्मा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कवि राजीव राज ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया। मुख्य अतिथि संजय वर्मा ने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि उन्हें अपने जीवन के हर क्षेत्र में शत प्रतिशत देने का प्रयास करना चाहिए, चाहे वह पढ़ाई हो, खेलकूद हो या सांस्कृतिक गतिविधियां। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के प्रबंधक, प्रधानाचार्य और अन्य विशिष्टजन मौजूद रहे, जिनमें पंचायत राज के प्रधानाचार्य श्यामपाल, जीआईसी के प्रधानाचार्य दीपक, डॉ.उमेश, रोहन सिंह, पवन, मंजेश, उपासना, डॉ. एसएन यादव, अभिषेक, धर्मेंद्र शर्मा, अनूप, एचएन पांडेय, सुनील अवस्थी, भास्कर शर्मा, अवलेंद्र, वेद पाठी, मनोज यादव, कार्व यादव, नीतू यादव और पूनम शर्मा प्रमुख थे। दैनिक जागरण ब्यूरो गौरव एवं हिंदुस्तान से संजय सक्सेना के अलावा प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। प्रतियोगिता का परिणाम बाद में घोषित किया जाएगा, जिसकी सूचना सभी विद्यालयों को दी जाएगी। पानकुंवर इंटरनेशनल स्कूल द्वारा आयोजित यह प्रतियोगिता इटावा में सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हुई।

डीएम ने आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति की समीक्षा की

सोनभद्र। जिलाधिकारी बीएन सिंह की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति की समीक्षा की गयी, समीक्षा के दौरान आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति धीमी पायी गयी, जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी विभाग आपस में समन्वय स्थापित करते हुए आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति में तेजी लायें, इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता व लापरवाही क्षम्य नहीं होगी, उन्होंने कहा कि आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति का ब्यौरा सम्बन्धित विभाग प्रतिदिन प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें, इस दौरान वर्कशाप का आयोग अर्न्तविभागीय सहयोग आयुष्मान कार्ड बनाये जाने की प्रगति में सहयोग हेतु उक्त वर्कशाप में जिला पंचायत राज अधिकारी जिला पूर्ति विभाग, जिला कार्यक्रम अधिकारी, को मुख्य रूप से सम्मिलित किया गया था।

पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर ने 11 रनों से फाइनल मुकाबला जीत

अवधनामा ब्यूरो

सोनभद्र। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी क्यू स्टार टूनामेंट करी बराव सोनभद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कुल 32 टीमों ने भाग लिया, जिसका फाइनल मुकाबल शुक्रवार को अम्बेडकर पार्क के करी बराव ग्रामसभा में पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर और चित्रांश स्पोर्टिंग क्लब नदिहार शाहगंज रोड मीरजापुर के बीच खेला गया, जिसमें विजेता टीम ने टॉस जितकर पहले बल्लेबाजी की निर्धारित दस ओवर में कुल 146 रन बनायें जबकि इस मुकाबले में उप विजेता टीम ने सम्पूर्ण विकेट खोकर कुल 135 रन ही बना पाई जिससे विजेता टीम पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर ने 11 रनों से फाइनल मुकाबला जीत लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष डॉ0 लोकपति सिंह पटेल ने विजेता टीम के स्टार बल्लेबाज अक्षय शर्मा को मैन ऑफ द मैच व मैन ऑफ द सीरिज से सम्मानित किये एवं पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर के कप्तान को फाइनल मुकाबला जितने के लिये ट्राफी देकर सम्मानित किये एवं उप विजेता टीम चित्रांश स्पोर्टिंग क्लब नदिहार के कप्तान को उप विजेता ट्राफी देकर सम्मानित किये। इस कार्यक्रम का आयोजक बालेश्वर यादव, विवेक यादव, अभिषेक पाठक, संजय बलमा, दीपक कुमार, रामलाल यादव को मुख्य अतिथि डॉ0 लोकपति सिंह पटेल जी ने हौसले को बढ़ाया और लोगों को खेल के प्रति, शिक्षा के प्रति एवं लोगों के हक अधिकार के प्रति सजग रहने की बात की और इस कार्यक्रम की समापन की घोषणा की।

ऊर्जा मंत्री ने किया ओटीएस शिविर का निरीक्षण

अवधनामा ब्यूरो

- उपभोक्ताओं के आने तक बिलिंग काउन्टर खोले जाएं
- बकायेदार उपभोक्ताओं को योजना से लाभान्वित करने में न हो परेशानी
- ओटीएस का लाभ लेने के लिए उपभोक्ता बिचौलियों से रहें सावधान
- मंत्री ने उपभोक्ताओं से की अपील: ओटीएस का लाभ लेने के लिए जल्द से जल्द रजिस्ट्रेशन करायें और ज्यादा से ज्यादा लाभ उठायें
- लोगों की जानकारी के लिए योजना का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए: ए.के. शर्मा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए0के0 शर्मा शुक्रवार को अपराह्न 02:00 बजे चिनहट के शिवपुरी स्थित 33/11 के0वी0 विद्युत उपकेन्द्र पहुंचकर एकमुश्त समाधान योजना अन्तर्गत लगे शिविर का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने ओटीएस रजिस्टर और बिलिंग काउन्टर का भी निरीक्षण किया तथा वहां पर मौजूद उपभोक्ताओं से उनकी समस्याओं और ओटीएस योजना का लाभ लेने में किसी भी प्रकार की परेशानी पर जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि एकमुश्त समाधान योजना से बकायेदार उपभोक्ताओं को लाभान्वित करने में किसी भी प्रकार की परेशानी न आए और योजना के बारे में अधिक से अधिक लोगों के बीच प्रचार-प्रसार भी किया जाए, उपभोक्ताओं के आने तक बिलिंग काउन्टर खोले जाए। उन्होंने उपभोक्ताओं से अपील की ओटीएस का लाभ लेने के लिए जल्द से जल्द रजिस्ट्रेशन करायें और ज्यादा से ज्यादा लाभ उठायें। ऊर्जा मंत्री ए0के0 शर्मा ने विद्युत उपकेन्द्र में मौजूद उपभोक्ताओं से ओटीएस योजना के बारे में फीडबैक लिया। उन्होंने उपभोक्ताओं को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश सरकार उनके बकाये विद्युत बिलों के सरचार्ज में छूट के लिए एक बार फिर से एकमुश्त समाधान योजना को 15 दिसम्बर से लागू किया जिसका प्रथम चरण अभी चल रहा है। योजना के प्रथम चरण में सभी प्रकार के विद्युत उपभोक्ताओं को सर्वाधिक छूट मिल रही है। शुक्रवार तक इसके तहत 3.72 लाख उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन कराया और योजना के तहत दी जा रही छूट का लाभ उठाया। उन्होंने बताया कि योजना के तहत प्रथम चरण में 01 किलोवाट भार तक के घरेलू उपभोक्ताओं को उनके पांच हजार रुपये के मूल बकाये के एकमुश्त भुगतान पर अधिभार में शतप्रतिशत तथा किस्तों में भुगतान पर अधिभार में 75 प्रतिशत की छूट मिल रही है। 01 किलोवाट भार तक के घरेलू उपभोक्ताओं को उनके पांच हजार रुपये से अधिक के मूल बकाये के एकमुश्त भुगतान पर अधिभार में 70 शतप्रतिशत तथा किस्तों में भुगतान पर 60 प्रतिशत की छूट मिल रही है। 01 किलोवाट भार से अधिक के घरेलू उपभोक्ताओं तथा वाणिज्यिक, निजी संस्थानों, लघु एवं मध्यम उद्योग के सभी भार वाले उपभोक्ताओं को उनके मूल बकाये के एकमुश्त भुगतान पर अधिभार में 60 प्रतिशत तथा किस्तों में भुगतान पर 50 प्रतिशत की छूट मिल रही है।

ऊर्जा मंत्री ने बताया कि एकमुश्त समाधान योजना के अंतर्गत 30 सितम्बर 2024 तक बकाये बिलों के अधिभार में छूट की योजना प्रदान की गई है। उन्होंने उपभोक्ताओं को अगाह करते हुए कहा कि किसी को भी बिचौलियों के झांसे में नही आना है। सभी लोग अपने बकाये बिलों के भुगतान के लिए योजना के तहत दी गई व्यवस्था का पालन करें। योजना के पहले चरण का 10 दिन और बाकी है। पहले चरण में सभी श्रेणी के बकायेदार उपभोक्ताओं को उनके बकाये बिलों के सरचार्ज में सबसे ज्यादा छूट मिल रही है।

पांच दिवसीय मेरठ महोत्सव आज से

महोत्सव के दौरान मेरठ के गौरवशाली इतिहास, हस्तशिल्प, ओडीओपी उत्पाद आदि को प्रदर्शित किया जायेगा : जयवीर सिंह

- सांसद एवं प्रसिद्ध अभिनेत्री हेमा मालिनी, सुप्रसिद्ध कवि कुमार विश्वास, शंकर महादेवन अपनी

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। पर्यटन विभाग उत्तर प्रदेश के सौजन्य से कल 21 दिसम्बर से 05 दिवसीय मेरठ महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसके दौरान नृत्य, संगीत, गायन, कला की रंगारंग प्रस्तुतियां लगभग 30 कलाकारों द्वारा दी जायेगी। इसके अलावा वर्कशाप एवं वाद-विवाद का आयोजन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त 200 से अधिक विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनियां आयोजित की जायेगी। इसके दौरान मेरठ के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, हस्तशिल्प, ओडीओपी के उत्पाद, व्यंजन तथा गौरवशाली इतिहास पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे। यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि मेरठ महोत्सव में एक तरफ जहां अभिनेत्री सांसद हेमा मालिनी, सुप्रसिद्ध कवि कुमार विश्वास, गायिका हर्षदीप कौर, नीति मोहन और शंकर महादेवन समेत अन्य लोकप्रिय कलाकार आयोजन की शोभा बढ़ाएंगे। स्थानीय कलाकार भी रंगारंग प्रस्तुतियां देंगे। इसके अलावा, प्रतिदिन कॉन्फ्रेंस का आयोजन होगा, जिसमें स्टार्टअप संवाद, नारी तू नारायणी, निपुणता की ओर, अन्ना, श्रेष्ठ अन्ना, करियर कान्क्लेव आदि प्रमुख मुद्दों पर चर्चा होगी। इसके अलावा, अलग-अलग टॉपिक पर वर्कशॉप का भी आयोजन किया जाएगा। पर्यटन मंत्री ने बताया कि मेरठ महोत्सव में चाउ नृत्य, पपेट शो, उड़ीसा का नृत्य (ओडिसी), थिएटर परफार्मेंस, कथक डांस, रास गरबा डांस, कवि सम्मेलन, मोटिवेशनल स्पीच आदि प्रमुख रूप से आकर्षण के केंद्र रहेंगे। बॉलीवुड क्लासिक के तहत प्रस्तुति होगी। इनके अलावा, कल्चरल नाइट, धुन से ताल तक, इंडी पॉप नाइट, सूफी नाइट, बॉलीवुड नाइट का भी आनंद दर्शक ले सकेंगे। इसके अतिरिक्त कई अन्य आयोजन भी होंगे। जयवीर सिंह ने बताया कि देश के प्राचीन शहरों में से एक मेरठ का इतिहास महाभारत और हिंदू पौराणिक कथाओं से जुड़ा है।

शहर कांग्रेस ने राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर का नाम अमर्यादित तरीके से लेने के विरोध में शुक्रवार को शहर कांग्रेस की ओर से राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा गया। जिला प्रशासन के अधिकारियों को राष्ट्रपति के नाम सम्बोधित ज्ञापन में गृहमंत्री से अपने बयान के लिए माफी मांगने और दोबारा इस तरह की पुनरावृत्ति न होने की मांग की गयी है। शहर कांग्रेस अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव त्यागी और डॉ. शहजाद आलम के नेतृत्व में शहर कांग्रेसी शुक्रवार दोपहर कैसरबाग स्थित बेगम हजरत महल पार्क के पीछे मकबरा रोड पर एकत्रित होकर पैदल मार्च करते हुए जिलाधिकारी कार्यालय गये। जिलाधिकारी कार्यालय में कांग्रेसियों ने एडीएम प्रशासन शुभि सिंह को राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा। शहर कांग्रेस अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव त्यागी और डॉ. शहजाद आलम ने संयुक्त बयान में कहा कि इतने बड़े संवैधानिक पद पर बैठ कर गृहमंत्री का इस तरह का बयान शोभा नहीं देता। उनके बयान से देश के सभी वर्गों के लोगों की भावनाओं को ठेस लगी है। ज्ञापन प्रदर्शन में निवर्तमान कोषाध्यक्ष शिव पाण्डेय, उपाध्यक्ष दिनेश सिंह, श्याम किशोर शुक्ला, सतीश अजमानी, इंदल रावत, नितिन शर्मा, तीरथराज मिश्रा, अनुसुइया शर्मा, किश्वर जहां, फखरुल इस्लाम, आर.बी. सिंह, मोहम्मद उबैद, राजेश सिंह काली, मोहम्मद नोमान, हसीन सिद्दीकी, बाकर मेहदी, मोहम्मद फैजान, गोपाल चौधरी, अय्यूब सिद्दीकी, एजमाल खान, मनोज वर्मा, मनीष लोधी सहित अन्य पदाधिकारी शामिल थे।

साधारण वेतनमान एवं सहायक मोटर यान निरीक्षक एएमवीआई के पदों का सृजन

लखनऊ। राज्य सरकार ने प्रदेश में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी साधारण वेतनमान एवं सहायक मोटर यान निरीक्षक एएमवीआई के पदों का सृजन किया है। इसके साथ ही सड़क सुरक्षा सप्ताह की जानकारी तहसील ग्राम पंचायत ग्राम सभाओं के माध्यम से आम जनता को देने के निर्देश दिए है। परिवहन राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार दयाशंकर सिंह ने बताया कि 28 फरवरी 2025 तक की अवधि के लिए यदि यह पद इसके पूर्व बिना किसी सूचना के समाप्त न कर दिये जायें सृजित करने की स्वीकृति प्राप्त हुई है। उन्होंने बताया कि सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी के 36 एवं सहायक मोटरयान निरीक्षक के 351 पदों की स्वीकृति हुई है। इससे सड़क सुरक्षा कार्य में तेजी आयेगी और प्रदेश में हो रही सड़क दुर्घटनाओं में कमी आयेगी। परिवहन मंत्री ने बताया कि उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से देश में प्रथम स्थान रखता है। साथ ही प्रदेश में वाहनों की संख्या भी काफी अधिक है।

जलशक्ति मंत्री की मौजूदगी में लघु सिंचाई विभाग के 11 सहायक अभियन्ताओं का किया गया पदस्थापन

- कृषक हमारे अन्न दाता हैं उन्हें समय से सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता में : स्वतंत्र देव सिंह

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। विभागीय अभियन्ताओं को, जिन जनपदों में तैनाती की कार्यवाही की जा रही है वे तत्काल कार्यभार ग्रहण करते हुये विभागीय योजनाओं का अधिकाधिक लाभ कृषकों को प्रदान किये जाने में अपना सहयोग दें। जल शक्ति मंत्री स्वतन्त्र देव सिंह ने यह निर्देश भूगर्भ जल विभाग के सहायक अभियंताओ के पदस्थापन के अवसर दिया। पदस्थापन कार्यक्रम का आयोजन राणाप्रताप मार्ग स्थित जल निगम ग्रामीण के कार्यालय में आयोजित किया गया। जलशक्ति मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि कृषक हमारे अन्न दाता हैं उन्हें समय से सुनिश्चित सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता में है।

पदस्थापन प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रोन्नति के फलस्वरूप रिक्त हुये पदों पर सहायक अभियन्ताओं के पदस्थापन किया गया। उक्त कार्यक्रम में लघु सिंचाई विभाग के 11 सहायक अभियन्ताओं के विभिन्न रिक्त जनपदों में पदस्थीकरण की कार्यवाही की गयी।

विभाग के प्रमुख सचिव अनुराग श्रीवास्तव के द्वारा अपने संबोधन में अभियन्ताओं से विभागीय जनोपयोगी कार्यो को ईमानदारी के साथ सीधे कृषकों तक पहुंचाने की दिशा में कार्य करने एवं उनके आय में बढ़ोत्तरी किये जाने का आवाहन किया गया। उन्होंने कहा कि भूजल स्तर में बढ़ोत्तरी हेतु विभाग द्वारा वर्षा जल संचयन व संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया जाना है। विशेष सचिव प्रभाष कुमार के द्वारा सरकार की मंशा के अनुरूप योजनाओं पर प्रदत्त अनुदान का लाभ किसानों तक ससमय पहुंचाने की विशेष आवश्यकता बतायी गयी।

ऑनलाइन नियुक्ति की प्रक्रिया 23 दिसम्बर से

लखनऊ। निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ महेंद्र देव ने बताया कि उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के लिए चयनित सहायक अध्यापक एल.टी. ग्रेड वर्ष 2018 एवं प्रवक्ता संवर्ग (पुरुष/महिला) वर्ष 2020 के सापेक्ष चयनित अभ्यर्थियों के लिए ऑनलाइन नियुक्ति एवं पदस्थापन की प्रक्रिया 23 दिसंबर 2024 से प्रारंभ की जाएगी। उन्होंने बताया कि चयनित अभ्यर्थियों को मानव सम्पदा पोर्टल पर पद ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 23 दिसम्बर, 2024 से प्रारम्भ होकर 27 दिसम्बर, 2024 तक की जायेगी। निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने बताया कि कार्यदिवस में प्रातः 10:00 बजे से सायं 05:00 तक ईमेल तथा हेल्पलाइन मो0नं0 9368636558 के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थियों का आवेदन पत्र ऑनलाइन ही सबमिट होगा, किसी अन्य माध्यम से आवेदन स्वीकार नहीं किया जायेगा।

दुग्ध संघों के सुदृढ़ीकरण के लिए 20 करोड़ स्वीकृत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश में डेयरी विकास के लिए दुग्ध संघों के सुदृढ़ीकरण एवं उन्हें पुनर्जीवित करने की योजना के तहत वर्तमान वित्तीय वर्ष में 20 करोड़ रूपये की धनराशि स्वीकृत की है। यह धनराशि तृतीय किश्त के रूप में स्वीकृत की गई है। यह धनराशि आगरा, मैनपुरी, मेरठ, झांसी, जालौन (उरई), हमीरपुर, महोबा, बांदा, लखनऊ, लखीमपुर खीरी, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, रामपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र, गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया, बस्ती, सिद्धार्थनगर, आजमगढ़, मऊ, प्रयागराज, प्रतापगढ, कानपुर, अयोध्या, अंबेडकरनगर, बहराइच, तथा गोंडा जनपदों के लिए स्वीकृत की गई है। इस संबंध में दुग्ध विकास विभाग द्वारा शासनादेश जारी करते हुए योजना के कियान्वयन के सम्बन्ध में सम्बन्धित जनपदों के दुग्धशाला विकास अधिकारी/ उप दुग्धशाला विकास अधिकारी तथा आहरण वितरण अधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दे दिये गये हैं। शासनादेश में कहा गया है कि स्वीकृत धनराशि के उपयोग में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मानकों व दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाये।

एलडीए ने गोसाईगंज और सुशांत गोल्फ सिटी में की कार्रवाई

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण ने शुक्रवार को गोसाईगंज और सुशांत गोल्फ सिटी में कार्रवाई की। इस दौरान अवैध रूप से बनाए जा रहे 29 रो-हाउसेस भवनों व 1 व्यवसायिक निर्माण को सील कराया गया। प्रवर्तन जोन-1 के जोनल अधिकारी देवांश त्रिवेदी ने बताया कि सुधीर सिंह, संदीप सिंह व अन्य की ओर से गोसाईगंज के दुलारमऊ में किसान पथ के पास लगभग 4000 वर्गमीटर क्षेत्रफल में अवैध रूप से 29 रो-हाउस भवनों का निर्माण कराया जा रहा था। इसी तरह मेसर्स अमरनानी मोटेल्स प्रा. लि. के निदेशे गोविंद अमरनानी व अन्य की ओर से सुशांत गोल्फ सिटी के ग्राम अहिमामऊ में भूखण्ड संख्या-363 पर लगभग 550 वर्गमीटर क्षेत्रफल में अवैध रूप से व्यवसायिक निर्माण कराया जा रहा था। प्रवर्तन टीम पूर्व में निर्माण को सील कर चुकी थी। वर्तमान में विपक्षी परिसर की सील खोल स्थल पर निर्माण/फिनिशिंग कराई जा रही थी।

स्व. प्रभात पाण्डेय की मौत की जांच में साक्ष्यों से छेड़छाड़ का शर्मनाक: अजय

- पुलिस पर योगी सरकार का है दबाव
- श्रद्धांजलि सभा में स्वर्गीय पाण्डेय को श्रद्धासुमन अर्पित किया

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। कांग्रेस ने पार्टी कार्यकर्ता स्वर्गीय प्रभात पाण्डेय की मौत की जांच मामले में पुलिस के साक्ष्यों से छेड़छाड़ के आरोप को दुर्भाग्यपूर्ण और शर्मनाक बताया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पुलिस पर योगी सरकार के दबाव में घटना को राजनैतिक रंग देने का प्रयास करने का आरोप लगाया है। श्री राय ने कहा कि कांग्रेस परिवार के सदस्य प्रभात पाण्डेय के आकस्मिक निधन का हमें गहरा अफसोस है। मैं खुद पुलिस की अड़चनों के बावजूद उनके अंत्येष्टि संस्कार में शामिल हुआ और कांग्रेस महासचिव व प्रदेश प्रभारी अविनाश पाण्डेय ने पार्टी मुख्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में स्वर्गीय पाण्डेय को श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्री राय ने दोहराते हुए कहा कि धरने में पुलिसिया बर्बरता के चलते मुझे और अविनाश पाण्डेय सहित कई कार्यकर्ताओं को चोटें आई और प्रभात पाण्डेय की मौत हुई। कांग्रेस ने खुद सबसे पहले उनकी मौत की जांच की मांग उठाई और सरकार से मुआवजे के तौर पर 1 करोड़ रुपये और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी की मांग की। पार्टी की ओर से स्वर्गीय पाण्डेय के परिवार को 10 लाख रुपये आर्थिक सहायता की घोषणा की गयी। हम पहले दिन से जांच में सहयोग कर रहे हैं और पुलिस की बातों को मान रहे हैं। घटना की मध्यरात्रि पुलिस के घटनास्थल देखने की इच्छा को तुरंत स्वीकारा। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर उसे सील करने को कहा, उसे भी स्वीकार किया। घटना के दिन पुलिस सीसीटीवी की सभी रिकॉर्डिंग पेन ड्राइव में ले गयी थी मगर उसके बाद भी रात में डीवीआर ले जाने की इच्छा पर उन्हें डीवीआर दिया। पुलिस ने जिन लोगों के बयान लेने को कहा उसमें भी सहयोग किया जबकि कई ऐसे लोग जो घटना के वक्त नहीं थे पुलिस उनके भी बयान लेना चाहती है। हमने इसे भी मानते हुए सहयोग किया। श्री राय ने कहा कि स्वर्गीय पाण्डेय बेहोशी हालत में जहां मिले वहां टेण्ट हाउस के गद्दे बिछे थे।

संत गाडगे को कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। संत गाडगे की पुण्यतिथि पर शुक्रवार को कांग्रेस मुख्याल में पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर निवर्तमान प्रदेश उपाध्यक्ष व प्रभारी प्रशासन दिनेश सिंह ने कहा कि सेवा भाव रखते हुए संत गाडगे ने अनेक धर्मशाला, गौशाला, विद्यालय, चिकित्सालय और छात्रावासों के निर्माण कराए। लेकिन अपने लिए एक कुटिया तक नहीं बनवाई। उन्होंने धर्मशालाओं के बरामदे या आसपास किसी वृक्ष के नीचे ही अपनी सारी जिंदगी बिताई। संत गाडगे 1905 से 1917 तक अज्ञातवास में रहे। इस बीच उन्होंने जीवन को बहुत नजदीक से देखा। अंधविश्वासों, बाहरी आडम्बरों, रूढियों और सामाजिक कुरीतियों और दुर्व्यसनों से समाज को कितनी भयंकर हानि हो सकती है। इसका उन्हें भलीभांति अनुभव हुआ। इसी वजह से उन्होंने इनका घोर विरोध किया। इस मौके पर प्रभाकर मिश्रा, प्रवक्ता पुनीत पाठक, नितान्त सिंह, राजेश सिंह काली, अजहर फैज आदि ने संत गाडगे को श्रद्धासुमन अर्पित किये।

ट्रेन के अंदर फंसे 18 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला

मॉकड्रिल

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। रेलवे के अधिकारियों, कर्मचारियों ने डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, फायर ब्रिगेड विभाग और स्थानीय पुलिस की मदद से ट्रेन के अंदर फंसे 18 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला। शुक्रवार सवेरे यात्री स्पेशल ट्रेन में अचानक आग लग गई। जिसमें तीन बोगियां आग की चपेट में आ गई। घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर इलाज शुरू कराया। हालांकि रेलवे कर्मियों और अन्य विभागों के अधिकारियों की सतर्कता से ट्रेन के अंदर बुरी तरह फंसे यात्रियों को सुरक्षित निकाल लिया गया। मॉकड्रिल का आयोजन डिवीजनल ऑपरेशनल ट्रेनिंग सेंटर के सेफ्टी कैंप के निकट लखनऊ यार्ड के साइडिंग में किया गया था। रेलवे की ओर से हुई मॉकड्रिल में रेल विभाग, आरपीएफ, जीआरपी के साथ साथ डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, फायर ब्रिगेड विभाग और स्थानीय पुलिस की तत्परता परखी गई। मॉकड्रिल में दुर्घटना राहत ट्रेन और दुर्घटना राहत मेडिकल यान की कार्यप्रणाली परखने के अलावा आग पर काबू पाने से लेकर यात्रियों को बचाने के लिए बरती जाने वाली सावधानी और अन्य कार्यप्रणाली को परखा गया। इस दौरान उत्तर रेलवे के डीआरएम एसएम शर्मा, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी समर्थ गुप्ता के साथ कई अधिकारी मौजूद रहे। मॉकड्रिल में ट्रेन के तीन कोच को दुर्घटनाग्रस्त दिखाया गया। साथ ही इनमें आग का वास्तविक प्रदर्शन किया गया। मौके पर एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, फायर ब्रिगेड विभाग, स्थानीय पुलिस, रेडक्रॉस सोसायटी, रेलवे का चिकित्सा विभाग, स्काउट एवं गाइड, वाणिज्य विभाग, परिचालन विभाग रेलवे और जिला प्रशासन के सिविल डिफेन्स मौजूद रहीं।

रेलवे पटरी के पास संदिग्ध व्यक्ति दिखने पर जीआरपी को करें सूचित

लखनऊ। रेलवे पुलिस ने रेलवे पटरी पर भारी वस्तु होने, रेलवे पटरी क्षतिग्रस्त होने, संदिग्ध गतिविधियां मिलने, रेलवे पटरी के पास संदिग्ध व्यक्ति दिखने पर जीआरपी अथवा 112 नम्बर पर तुरन्त सूचना देने का आह्वान किया गया है। डीजीपी ने नई पहल करते हुए जन जागरुकता अभियान शुरु किया है। इस अभियान के तहत ही डीजीपी ने शुक्रवार को पोस्टर, बैनर और स्टीकर जारी किये। पुलिस मुख्यालय में डीजीपी प्रशांत कुमार ने पोस्टर, बैनर व स्टीकर सिपाही रोहित कुमार व आरती पाल को देकर इसकी शुरुआत की। इन पोस्टरों को रेलवे स्टेशन, ट्रेन व अन्य चिन्हित स्थानों पर लगाया जायेगा जहां पर नागरिक आसानी से उसे देख सके।

पोस्टर के माध्यम से बताया जायेगा कि सफर करते समय किसी अजनबी से खानेपीने का सामान कतई न लें, इससे आप जहरखुरानी का शिकार हो सकते हैं। डीजीपी ने कहा कि इस तरह के अभियान से नागरिक जागरुक होंगे। डीजीपी ने बताया कि जीआरपी को सुरक्षा के लिए कई निर्देश दिए गये है। साथ ही ट्रैक क्षेत्र से सम्बन्धित थानों से भी जीआरपी पुलिस का समन्वय रखने को कहा गया है। महाकुम्भ के लिए रेलवे 1000 से अधिक स्पेशल ट्रेने चलायेगा। इनकी सुरक्षा के लिहाज से भी यह अभियान काफी मदद करेगा। यूपी में करीब 16000 किमी लम्बा रेलवे ट्रैक है। डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि ये अभियान काफी मददगार साबित होगा।

रेलवे स्टेशनों पर बस रेड व मजिस्ट्रेट टिकट चेकिंग का चला अभियान

लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे के वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक आशुतोष गुप्ता के निर्देश पर सहायक वाणिज्य प्रबंधक मुकेश कुमार के नेतृत्व में बादशाहनगर, बक्शी का तालाब एवं मोहिबुल्लापुर रेलवे स्टेशनों पर बस रेड व मजिस्ट्रेट टिकट चेकिंग अभियान चला गया। स्टेशनों से गुजरने वाली यात्री ट्रेनों पर 93 बिना टिकट व अनियमित रेल यात्रियों के साथ साथ यात्रा कर रहे एमएसटी धारक व वर्दीधारी यात्रियों को जांच अभियान में पकड़ा गया। बस रेड जांच अभियान के दौरान बिना टिकट व अनियमित यात्रा के 74 यात्रियों से 36000 रुपये का जुर्माना वसूला गया तथा जुर्माना न अदा करने वाले 19 बिना टिकट यात्रियों को रेलवे मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इस दौरान यात्रियों को टिकट लेकर यात्रा करने के लिए जागरूक भी किया गया। इस जांच अभियान में मुख्य चल टिकट निरीक्षक मुख्यालय एसपी.सिंह, आरपीएफ तथा जीआरपी व रेल कर्मचारी मौजूद रहे।

अटल बिहारी वाजपेई के 100वीं जयंती पर प्रतियोगिताओं का आयोजन

महाराजा बिजली पासी राजकीय महाविद्यालय

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। 19-25 दिसंबर 2024 तक मनाए जा रहे भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई जी की 100वीं जयंती कार्यक्रम के तत्वावधान में महाराजा बिजली पासी राजकीय महाविद्यालय, लखनऊ में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा का माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि राकेश कुमार जिला विद्यालय निरीक्षक, लखनऊ एवं अपर जिला विद्यालय निरीक्षक, लखनऊ मीनाक्षी द्विवेदी ने किया, जिनका स्वागत महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर सुमन गुप्ता ने किया, तत्पचात प्रोफेसर सुमन गुप्ता का संबोधन हुआ, जिन्होंने महान नेता अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित की। राकेश कुमार ने छात्रों को भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के आदर्शों से प्रेरित होने के लिए उन्मुख किया। भाषण प्रतियोगिता का विषय- 'अटल जी का सुशासन, काव्यपाठ प्रतियोगिता अटल जी का जीवन एवं उनकी कविताएँ, निबंध प्रतियोगिता: अटलजी का सुशासन में लखनऊ जिले के स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों की उत्साही प्रतिभागिता देखी गई। उक्त प्रतियोगिता के विजेताओं को 25/12/24 को वाजपेई जी की 100वीं जयंती के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा। कार्यक्रम में प्रो शहला किदवई, महोना गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज की प्राचार्य, प्रो रचना श्रीवास्तव, ए.पी.सेन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, लखनऊ की प्राचार्या, प्रतिभागी कॉलेजों और स्कूलों के शिक्षक उपस्थित रहे। भाषण प्रतियोगिता डॉ. श्वेता मिश्रा, डॉ. मधुमिता गुप्ता डॉ. अभिषेक भारद्वाज, डॉ सरिता सिंह, डॉ धर्मेंद्र कुमार द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित की गयी, काव्य पाठ प्रतियोगिता का सफल आयोजन डॉ. शकुंतला गिरी, डॉ. देवऋषि मिश्रा, डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ आभालता चौधरी द्वारा किया गया, निबंध प्रतियोगिता के सफल आयोजन में डॉ. दीप्ति सोनकर, डॉ. रीना गुप्ता, डॉ.संतोष कुमार डॉ. सुमन यादव और डॉ. स्मृति मिश्रा का योगदान रहा।

ई.आर.पी. द्वारा निर्माण कार्यों की मानिटरिंग की जाये

- प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए सहकारिता क्षेत्र की सभी संस्थाएं सामंजस्य बनाकर कार्य करें

अवधनामा ब्यूरो

लखनऊ। उ.प्र. राज्य निर्माण सहकारी संघ लि. (यू.पी.आर.एन.एस.एस.) गोमतीनगर विस्तार लखनऊ के मुख्यालय भवन के सभागार में आयुक्त एवं निबन्धक सहकारिता बी.एन. सिंह द्वारा भ्रमण किया गया तथा भ्रमण के दौरान संस्था के कार्यो को गति प्रदान करने एवं गुणवत्ता पर नियत्रंण एवं मानिटरिंग हेतु तैयार कराये गये ई.आर.पी. साफ्टवेयर से पूरे प्रदेश मे कराये जा रहे निर्माण कार्यो की प्रगति की समीक्षा की गयी। साथ ही यह भी निर्देशित किया गया है कि ई.आर.पी. साफ्टवेयर के माध्यम से निर्माण कार्यो की शत-प्रतिशत मानिटरिंग की जाय। यह भी कहा कि संस्था द्वारा भविष्य में अपने व्यवसाय में वृद्धि करने के लिए सोलर पैनेल सम्बन्धित कार्य किये जाये। सहकारिता क्षेत्र की सभी संस्थायें सामंजस्य के साथ कार्य करें, जिससे सहकारिता एवं प्रदेश का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके। संस्था अपने अच्छे कार्यो को सोशल मीडिया व अन्य प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार करे, तो संस्था की छवि प्रदेश स्तर पर और अधिक निखरेगी, जिससे संस्था को ज्यादा से ज्यादा कार्य शासन द्वारा आवंटित होगें और संस्था को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त होगा।